In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्रान्तिकेशरी

(स्वातन्त्र्यान्दोलन सम्बन्धी वीरचरिताश्रित महाकाव्य)

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप'

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आज, जबकि हिन्दी में महाकाव्यों की रचना प्रायः निर्विषय या प्रविरल विषय हो गयी है, डॉ० देवीसहाय पाण्डेय 'दीप' जी के द्वारा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत सत्प्रेरणादायक महाकाव्य 'क्रान्तिकेशरी' की रचना अत्यन्त श्लाघनीय, सारस्वत प्रयास है। आप, इसके पूर्व 'द्रोणोच्छ्वास' आदि अनेक उदात्त भावोद्बोधक महाकाव्य तथा अन्य अनेक हिन्दी और संस्कृत की महनीय रचनाओं के माध्यम से भगवती सरस्वती को अपनी साधना के सुमन समर्पित कर चुके हैं।

मैं आपकी सारस्वत सपर्या का सादर अभिनन्दन करता हूँ। आपकी साधना साहित्य का उपकार और संवर्धन करती रहे।

डॉ0 रमाकान्त शुक्ल
(पद्मश्री से सम्मानित एवं राष्ट्रपति सम्मान प्रमाण-पत्र प्राप्तकर्ता)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप'

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रकाशक :

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

पंजीकृत कार्यालय :
3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
दूरभाष : 09873556781, 09968097816
E-mail : hindustanibhashabharati@gmail.com
Website : www.hindustanibhashaakadami.com

Kranti Keshari
by Dr. Devi Sahai Pandey 'Deep'
ISBN : 978-81-932721-7-6
Patriotic epic

© डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप'

प्रथम संस्करण : 2017
मूल्य : ₹ 250.00 $ 30

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सम्पादकीय

भारतमाता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने में जिन क्रान्तिकारियों ने प्राणों की आहुति दी है, उनमें चन्द्रशेखर 'आजाद' का नाम शीर्ष पर आता है। इस बलिदानी वीर ने पराधीन देश में स्वयं को 'आजाद' नाम देकर देश की दासता को ललकारा था। उनका शौर्य, साहस, बलिदान, धैर्य, दृढनिश्चय, सेवा-समर्पण, रणकौशल, नीतिचातुर्य ने ब्रिटिशसाम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। इन्हीं क्रान्तिवीरों के बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतंत्रता में साँसें ले रहा है, विकास कर रहा है। क्रान्तिवीरों ने स्वयं विषपान कर हमें स्वतंत्रता का अमृतदान दिया है। उनके बलिदानों को उजागर करना प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्त्तव्य है। वीर आजाद ने आजादी में कुर्बानी दी, तो हम उसका गुणगान करके एक ओर बलिदान, सेवा समर्पण का वातावरण बनाते हैं और दूसरी ओर उनके बलिदानों से पायी स्वतंत्रता सम्बंधी ऋण को चुकाते हैं। यह पुण्य कार्य अधिक प्रशस्त रूप में तत्संबन्धी साहित्य के लेखन, पठन-पाठन, प्रकाशनादि सत्कृत्यों से सम्पादित किया जा सकता है।

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप' द्वारा विरचित 'क्रान्तिकेशरी महाकाव्य' का लेखन, प्रकाशन इसी योजना का एक अंग है। मैंने इसी भावना से उत्प्रेरित होकर क्रान्तिवीर 'आजाद' के जीवनचरित, वीर बलिदानी कृत्यों, शौर्य, सेवादि को लक्ष्य करके रचे गए महाकाव्य को प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है। यदि सुधी पाठक ग्रन्थ को सम्मान देंगे, पठन-पाठन द्वारा निहित उदात्त भावों का प्रचार-प्रसार करेंगे तो यह कृत्य ज्ञानयज्ञ की दिव्य आहुति बनकर देश को धन्य करेगा, हिन्दी भाषा का उत्थान करेगा और हमारे श्रम को सफल कर अन्य ऐसे महत्वपूर्ण प्रकाशनों हेतु मुझमें प्रेरणा भरेगा। सधन्यवाद आपका सहयोगाकांक्षी-

सुधाकर पाठक
अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुछ अपनी ओर से...

वीरपूजा विश्व की प्राचीनतम पूजा-पद्धति है, जो महाकाव्यों में अवतरित होकर जन मानस का भावनात्मक परिष्कार करती आ रही है। ग्रीक साहित्य में रचित 'इंलियड ओडसी', आंग्ल साहित्य में विरचित 'जूलियस सीजर' आदि काव्य और नाट्यग्रंथ तथा विश्व की प्रचीनतम भाषा संस्कृत में प्रणीत वीर चरिताश्रित महाकाव्य वाल्मीकीय रामायण एवं महाभारत और इन दोनों उपजीव्य काव्यों पर आधारित वीर चरिताश्रित अनेक काव्य और महाकाव्य परवर्ती संस्कृत साहित्य में रचित मिलते हैं, जो जातीय गौरव, जन जागरण एवं मानव-मूल्यों का जन-जीवन में प्रचार-प्रसार करते आ रहे हैं। हिन्दीसाहित्य का आदि काल जो वीरगाथा काल कहा जाता है, उसमें वीरचरिताश्रित काव्य-ग्रन्थों 'रासों' का बाहुल्य है। वीराग्रणी राम और कृष्णाश्रित काव्य ग्रन्थों से भक्तिकाल भरा पड़ा है। रीतिकाल या श्रृंगार काल के साहित्य ने अपनी करवट श्रृंगार की ओर बदली अवश्य, किन्तु उस काल में भी वीरभावों की हुंकारों का अभाव नहीं रहा है। हिन्दुत्व के रक्षक वीर शिवाजी, छत्रसाल आदि वीरों के चरितों पर आश्रित रचनाएँ भूषण, लाल, सूदन आदि कविवरों द्वारा होती रही हैं। देखा जाये तो अब तक के साहित्य का रचित तीन चौथाई भाग वीर चरिताश्रित ही है। इन काव्यों ने दासता के अन्धकार काल में मशाल का कार्य किया है। कहने में संकोच न होना चाहिए कि चरितकाव्यों ने ही सदा देशोद्धार की भावना वीरबलिदानियों में जगाई है।

आधुनिक काल के प्रारम्भ में भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग तक देश प्रेम, राष्ट्रीयता सम्बन्धी साहित्यों का प्रचुर लेखन हुआ है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित 'भारत दुर्दशा' नाटक और भारत वर्षोन्नति कैसे हो ? जैसे निबंधों द्वारा देशप्रेम और राष्ट्रीयता तथा जन-जागरण का सन्देश दिया जाता रहा है। मैथिली शरण गुप्त कृत 'साकेत' महाकाव्य, जयद्रथवध एवं भारत भारती आदि ग्रन्थों ने स्वतन्त्रान्दोलन में जन-जागरण का उल्लेखनीय कार्य किया है। वियोगीहरि की 'वीरसत्सई' और सुभद्रा कुमारी चौहान का 'वीरों का कैसा हो वसन्त' तथा माखनलाल चतुर्वेदी का 'स्वातन्त्र्यहुंकार' विषयक साहित्य इस सन्दर्भ में द्रष्टव्य है। जयशंकरप्रसाद के नाटकों चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि में राष्ट्रीयता का उभार और वीर भावों का प्रसार है। इन्हें भी वीर चरिताश्रित काव्य रूप में देखा जा सकता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीताञ्जलि' ने हिन्दी काव्यसाहित्य पर गहरी छाप डाली है, जिससे समर्थ साहित्यकार भी अछूते न रह सके। छायावादी काव्य-धारा पर इसका गहन प्रभाव रहा है, रहस्यवाद पोषित छायावाद में वीरचरिताश्रित काव्यों का अभाव रहा, किन्तु छायावाद के प्रवर्तक प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीयता मुखरित देखी जा सकती है। वीरचरिताश्रित काव्य लेखन में श्यामनारायण पाण्डेय का नाम उल्लेखनीय है। वीरचरिताश्रित उनके हल्दीघाटी एवं जौहर महाकाव्यों से कौन परिचित नहीं है?

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इधर हिन्दी साहित्य में जब से गद्यगीतों और नवगीतों का दौर चला, तब से वीर चरिताश्रित काव्यों के लेखन पर विराम सा लग गया । इस सन्दर्भ में कहा भी जा सकता है कि राष्ट्रीय वातावरण एवं मानवमूल्यों का क्षरण भी इसी काल में सर्वाधिक हुआ है । यह नहीं भूलना चाहिए कि वीर चरिताश्रित काव्यों में वह संजीवनी शक्ति होती है, जो राष्ट्र में पुष्ट प्राणशक्ति का संचार करती है। महाकाव्यों में जीवन और जगत् के 'सु' और 'कु' की व्याख्या होती है । जीवन-संघर्षों में टिकने और उनसे उबरने की युक्तियाँ काव्य में होती हैं। थके-हारे जीवन में चेतना और नवस्फूर्ति का प्रदायक काव्य-रसायन होता है । जीवन-कला का विकास और मानव-मूल्यों का पोषण काव्य की क्रोड़ में होता है। काव्योद्भूत रसदशा में हृदय की मुक्तावस्था का निवास होता है, जो दानवता की जकड़ से मानव को मुक्त कर देवत्व प्रदान करती है । काव्य के महत्व के विचार में अब और अधिक कहने की आवश्कता नहीं है । पाण्डुचेरी के सन्त अरविन्द घोष ने मानवता का जयघोष करते हुए भविष्य में धरती पर स्वर्ग के अवतरण का जो उद्घोष किया है, मनुष्य के देव बनने की ओर जो भविष्यवाणी की है, वह सत्साहित्य के सशक्त लेखन से प्रचार-प्रसार सहज सम्भव है। इन्हीं विचारों से अनुप्राणित मुझमें क्रान्तिवीर 'आजाद' के वीर चरिताश्रित महाकाव्य क्रान्तिकेशरी की संरचना की प्रेरणा जगी। सशस्त्र क्रान्ति देश के स्वातन्त्र्यान्दोलन के सन्दर्भ में उठाया गया भारतमाता के वीर सपूतों का साहसिक निर्भीक कदम था । क्रान्तिगगन में चन्द्रवत् सुशोभित चन्द्रशेखर 'आजाद' का सिंहसत्व सुपूरित शौर्य जिस महाकाव्य का आलम्बन हो, उसका 'क्रान्तिकेशरी' नामकरण अपने औचित्य को स्वतः सिद्ध करता है-

आंग्लसाम्राज्य विकट वन बीच, गरजता भरता रहा निनाद ।
दुष्टदल-वक्ष-विदारणदक्ष 'क्रान्तिकेशरी' वीर आजाद ॥

वीर आजाद के चरिताश्रित त्याग, बलिदान, सेवा-समर्पण, शौर्य, साहस, दीन दलितों पर करुणा, परोपकार, दृढ़ निश्चय, देश प्रेम, राष्ट्रीयता, धैर्य आदि जिन उदात्त गुणों का समाहार है, वे नर को नारायण बनाने वाले धरती पर स्वर्ग लाने वाले हैं । आशा है, सहृदय सुधीजन प्रस्तुत महाकाव्य को कण्ठहार बनाकर सत्साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करेंगे । साहित्य, साहित्यकार की ही नहीं, सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र की थाती है । उसका प्रकाशन, प्रचार-प्रसार तथा संरक्षण सबका दायित्व है । मुझे जो कहना था कह लिया । आगे का मैं नहीं आप सब.........।

नम्रशिरस्क

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप'
साधना निकेतन, अयोध्या।
पिन कोड 224123
मो. : 9721395040

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

'क्रान्तिकेशरी' महाकाव्य - एक दृष्टि

सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषणार्थ जिस विचार और भाव-सामग्री का सर्जन और संरक्षण करता है, वह साहित्य है। काव्य साहित्य का रसात्मक रूप है, 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहकर आचार्य विश्वनाथ ने इसकी पुष्टि की है। आचार्य मम्मट ने दोष-मुक्त और गुणयुक्त शब्द और अर्थ की विशिष्ट योजना को काव्य कहा है। पण्डितराज जगन्नाथ ने रमणीयार्थ प्रतिपादक सुन्दर शब्द-योजना को काव्य माना है।

निष्कर्षतः उत्तम काव्य वही है, जिसमें उदात्त भावों की व्यञ्जना के लिए भावानुकूल सुन्दर सटीक शब्दावलियों का गुम्फन हो। आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य कौशल के लिए-लोक व्यवहार का अध्ययन, प्रकृति-निरीक्षण, विविधशास्त्र, काव्यशास्त्र का विशद अध्ययन एवं काव्य तत्त्वज्ञों के निर्देशों की छाया में अनवरत रचना अभ्यास अपेक्षित है। अमर काव्य की संरचना आचार्यो द्वारा कथित निर्देशों के अनुपालन से ही संभव है।

भावों की पुष्ट नीव पर ही मानवता का दिव्य मन्दिर टिका रह सकता है। भाव ही राम बनाता है, भाव ही रावण बनाता है। भाव ही राणाप्रताप और शिवाजी बनाता है, भाव ही मानसिंह और मीरजाफर बनाता है। विभावानुभाव और सञ्चारी भावों के संयोग से भाव रसावस्था को प्राप्त करता है, जो ब्रह्मानन्द के समकक्ष माना गया है। रसावस्था ही हृदय की मुक्तावस्था है, जहाँ आनन्द ही आनन्द है। यही रस-रसायन बद्ध हृदयत्व को मुक्त हृदयत्व प्रदान कर मानस रोगों से मुक्त करता है। भावों की यही ऊँचाई मुक्ति प्रदान करती है, जो जीवन का परमोद्देश्य है।

महाकाव्य में किसी महामानव के उदात्त चरित की भावपूर्ण विवृति होती है, जिससे कलुष की निवृत्ति होती है। सम्प्रति इसी भूमिका की भूमि पर बलिदानी वीर चन्द्रशेखर 'आजाद' के जीवन-वृत्त पर आधारित 'क्रान्तिकेशरी' महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत महाकाव्य में 11 सर्ग और 1145 छन्द हैं। प्रथम सर्ग में भारत-गौरव के उद्बोधन घटकों का परिचय है। यों तो लगभग प्रत्येक सर्ग में प्रकृति चित्रण है किन्तु प्रथम सर्ग के प्रकृति चित्रण में भारतीयों की प्रकृति की विवृति के साथ पर्वत, सर-सरित, पशुपक्षी-कुल, ग्रामीण-जीवन की झाँकी के दर्शन भी सुलभ हैं। देश का गुण-गौरव-गान भी प्रकृति के माध्यम से हुआ है। प्रपात के उत्तरीय धारण किए हुए पर्वत, भारत के चरण-प्रक्षालन रत महासागर, सरिता की सारी रंगने वाला कलधौती प्रात सबकी अपनी-अपनी दिव्यताएँ हैं। पशु पक्षियों के रंग बिरंगे रूप, उनके नर्तन, गायन सभी मनोहारी हैं-

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विमल फेनिलजल-भरित प्रपात, झरित होता इस भाँति प्रतीत।
लटकता ज्यों कन्धे से छूट, दुपट्टा गिरि का परम पुनीत॥1/6॥

लोक में फैलाकर आलोक, कोक का शोक कर रहा चूर्ण।
बनाता रवि कलधौती प्रात, सरोवर को कर सुषमा-पूर्ण॥1/10॥

कहीं पर थिरक रहा है मोर, कहीं पर कोकिल का कल गान।
कहीं पर पाकर पवन-प्रसंग, छेड़ता बाँस बाँसुरी-तान॥1/39॥

गुटुरगूँ कहता कहीं कपोत, बजाता तबला भर अनुराग।
सुनाता प्रिय-आगम-सन्देश, कहीं बैठा बड़ेर पर काग॥1/40॥

कहीं पर भीमकाय वट-वृक्ष, कहीं पर खड़ा निम्ब छतनार।
कहीं पर साल विशाल तमाल, कहीं पर किंशुक कल कचनार ॥1/43॥

कृत्रिमता से दूर, झुरमुटों से झाँकते झोपड़ी तुल्य कृषकों के घरों की शोभा अपनी अलग छटा बिखेरती है-

छप्परों पर फैली हैं बेल, फले हैं कूष्माण्ड अभिराम।
लिप्त गोमय-सुगन्ध से युक्त, दोष-निर्मुक्त कृषक के धाम ॥1/36॥

चतुर्मुखी प्रतिभापूर्ण समन्वय परक भारत की प्रकृति में एक ही डाल पर शान्ति और क्रान्ति के फूल खिलते रहे हैं-

चतुर्मुख जीवन-दर्शन दिव्य, शान्ति के साथ क्रान्ति का योग।
शस्त्र के साथ शास्त्र-संयोग, उभय का विलसित कुशल प्रयोग ॥1/50॥

परस्पर धर्मों में अविरोध, सभी में बन्धु-भाव-विस्तार।
एकता लख अनेकता मध्य, चकित रह जाता है संसार॥1/62॥

इस दिव्य देश की दान-वृत्ति भी विलक्षण है-

चराचर को करुणा का दान, सज्जनों को मैत्री का दान।

दुर्जनों को द्वन्द्वों का दान, दान ही देता देश महान ॥1/66॥

भारत में बाह्य प्रकृति और अन्तः प्रकृति में विलक्षण समन्वय है-

लता लोनी लखकर मधुमास, लचकती रहती जो सविलास।
सुमन-मुट्ठी में भरे पराग, रसालों को रँगती सोल्लास ॥1/74॥
ग्रीष्म-महिषासुर को अवलोक, कली के कुन्त करों में धार।
भ्रमर-गुञ्जन मिस बारंबार, वही भरतीं भीषण हुंकार ॥1/75॥

प्रकृति द्वारा ग्रीष्मागत ताप का विरोध कई छन्दों तक चला है। ग्रीष्म-ताप को आंग्ल-शासन के उत्पीड़न और लतादि के रूप में वर्णित प्रकृति-विरोध को

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जन-विरोध और क्रान्त्यान्दोलन के रूप में देखा जा सकता है।

सज्जनों से जैसे नवनीत, दुर्जनों से ज्यों कुलिश कठोर।
प्रकृति भारत की यही पुनीत, प्रशंसित जग में चारों ओर ॥1/69॥

यदि देश इतना बलवान और महान है तो फिर वह मुट्ठी भर अंग्रेजों की दासता का शिकार कैसे हो गया ? इस तथ्य का समाधान कालचक्र की विषम गति में देखा गया है-

तेज का पुञ्ज चण्ड मार्तण्ड, राहु ग्रस लेता देता कष्ट।
काल गति प्रबल परम दुर्धर्ष, तथ्य स्वयमेव सिद्ध सुस्पष्ट ॥1/85॥

काल-चक्र गति ने जैसे परतन्त्रता दी, वैसे ही उसने क्रान्तिवीरों को अवतरित करके देश को स्वतन्त्रता भी दी है। उन्हीं प्रभु-प्रेषित क्रान्तिवीरों में वीर शिरोमणि 'आजाद' भी हैं-

आंग्ल साम्राज्य विकट वन बीच, गरजता भरता रहा निनाद।
दुष्ट दल वक्ष विदारण दक्ष, क्रान्ति केशरी वीर आजाद ॥1/103॥
मूछ ज्यों धारदार तलवार, म्यान से जैसे कढ़ी कटार।
हुआ ज्यों स्वाभिमान साकार, रहा वैरी दल को ललकार ॥1/104॥

महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में आजाद की जन्म स्थली की महत्ता, उनकी माता की दिव्यता, शिवाराधन के फलस्वरूप उनके अंश स्वरूप प्राप्त हुए पुत्र चन्द्र शेखर का जन्मादि वर्णित है।

तीसरे सर्ग में अंग्रेजी शासन के सामन्तों द्वारा दीन दुर्बल किसानों पर किए जाने वाले अमानवीय अत्याचारों का उल्लेख है। घोर अकाल के दिनों में भी बुभुक्षित किसानों से कर वसूली, न देने पर निर्मम प्रहारों द्वारा उनके उत्पीड़न के द्रावक दृश्य दिखाए गये हैं-

गया बुलवाया एक किसान, गलित थे अंग पलित थे केश।
दीन दुर्बल दृढ़ पाश-निबद्ध, शेष थी ठठरी, वृद्ध विशेष ॥3/34॥
देखते ही गरजा तत्काल, क्रूर कारिन्दा कर दृग लाल।
करो भू-कर भुगतान तुरन्त, अन्यथा खिँचवा लूँगा खाल॥3/35॥

दीन दुखी किसान कारिन्दे के पैर पकड़कर रोता गिड़गिड़ाता मज़बूरियाँ सुनाता रहा, किन्तु पत्थर पसीज न सका। वह चीखकर बोला-

धूर्त कर बन्द सकल छल-छन्द, बन्द कर अश्रु बहाना नीच।
भूमि-कर का कर दे भुगतान, नहीं तो चमड़ी लूँगा खींच॥3/40॥
यही कहता चल पड़ा तुरन्त, हाथ में कोड़ा कठिन सुधार।
लगा निर्बल पर करने नीच, सटासट चाबुक की बौछार ॥3/42॥

क्रूर कारिन्दे का जुल्म इतना बढ़ा कि किशोर चन्द्र शेखर का धैर्य जवाब दे गया और उसने पास में पड़े पाषाण-खण्ड को उठाकर कारिन्दे के सिर पर दे

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मारा, जिससे क्षण भर को वह चेतना-शून्य होकर गिर पड़ा और चेतना आते ही भाग खड़ा हुआ। इधर चन्द्रशेखर ने किसानों को दैन्य और दब्बूपन छोड़कर अपने स्वत्व और महत्व को पहचान कर व्यवस्था के विरुद्ध सिर उठाने हेतु उद्वेलित किया। बालक वीर आजाद ने कहा, भूमिपाल किसाान हैं, अंग्रेजों के पिट्ठू सामन्तगण नहीं-

सुनें सब कृषक पूज्य गुणवान, भूमि-स्वामी वे धीर किसान।
धरें जो हल, श्रम-शोभित-अंग, फसल को दें जो जीवन-दान ।।3/57।।
गगन बरसाता जब अंगार, चलाते हल तब भी सुख मान।
नग्न सह लेते सारा शीत, भूमि-स्वामी वे तपी किसान ।।3/60।।

इसके विपरीत विलासी, पतित, निकम्मे जमींदार कभी भूस्वामी नहीं हो सकते, फिर उन्हें भूकर वसूलने का अधिकारी कैसे माना जाये ?

भोग में लिप्त पाप में मग्न, निकम्मे तुन्दिल जो अनुदार।
कहाँ के कैसे वे भूपाल, न मिट्टी है जिनका शृंगार ।।3/69।।
देख अंग्रेजों को जो तुच्छ, हिलाते पुच्छ झुकाते भाल।
आचरण जिनका श्वान-समान, न कहना उचित उन्हें भूपाल ।।3/70।।

अन्याय सहने वाला ही अन्यायी को बढ़ावा देता है, अस्तु-

बैठ रहता जो सह अन्याय, न कर पाता कुछ भी प्रतिकार।
श्रेष्ठ उससे पादाहत धूल, सीस पर होती दौड़ सवार ।।3/84।।
उठाओ अस्त्र तजो भीरुत्व, चल पड़ो क्रान्ति मार्ग पर वीर।
दुष्ट दल-सिन्धु मध्य बड़वाग्नि, बनो सागर की छाती चीर ।।3/90।।

चतुर्थ सर्ग का प्रारम्भ, प्रकृति-चित्रण से होता है, जो भावी घटनाओं की भूमिकावत् प्रतीत होता है। सायं काल में वारुणी सेवन से (पश्चिमी दिशा गमन) लड़खड़ाता, तेज खोता जाता पतनोन्मुख सूर्य, तो इधर राज दरबार में वारुणी (मदिरा) सेवन से मत्त स्खलन युक्त निःस्तेज महिपाल। दोनों ओर दृश्य साम्य दर्शनीय है। आगे चन्द्रोदय हुआ और आकाश में उधर चाँद-तारों की महफिल सजी तो इधर विलासी नृपों की मण्डली में सुरा-सुन्दरी का दौर, मौज मस्ती का आलम चल पड़ा-

संध्या बीती लगा खेलने, तारों से रजनीश।
हुए निमग्न विलास-लास में, महि में इधर महीश ।।4/11।।

इस सन्दर्भ में सामन्ती-विलास का नग्न दृश्य द्रष्टव्य है-

कुछ नाचते भड़ैंती करते, भरे बेसुरी तान।
कुछ गिरते गिरकर उठते कुछ, कुछ करते मधुपान ।।4/35।।
कर में हाला, दृग में बाला, कर्णों में मृदु ताल।
मणिप्रवालमाला कण्ठों में, थे प्रमत्त भूपाल ।।4/36।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुरा-सुन्दरी के मादक दौर के मध्य बालक 'आजाद' द्वारा प्रताड़ित कारिन्दे का साश्रु आगमन श्रृंगारी वातावरण पर पटाक्षेप कर उसे उग्र मोड़ दे देता है ।

सेनापति क्रूरसिंह बुलवाया जाता है, जो निर्ममतापूर्वक पूरे बदरका ग्राम को अग्नि के हवाले कर देता है । अग्निकाण्ड से सुरक्षित बालक चन्द्रशेखर निकलकर वहाँ से पिता के पास मध्य प्रदेश के 'भावरा' ग्राम में आ जाता है, जहाँ मुक्त प्रकृति की पाठशाला में उन सभी गुणों से सम्पन्न हो जाता है, जो एक ज्वलित जीवनाग्रही के लिए आवश्यक होता है-

वन-विद्यालय गूढ़ ज्ञान का, तत्त्व बताता जाता।
सद्गुण गौरव स्वतन्त्रता का, पाठ पढ़ाता जाता ।।4/83।।
गिरि श्रृंगों ने उसे पढ़ाया, जिओ न सिर नीचा कर।
गिरे वज्र पर रहो अकम्पित, छूलो बढ़कर अम्बर ।।4/84।।
सिर पर प्रबल निदाघ-दाघ को, सह कर विटप-कलाप।
कहते दुख सहकर भी, हर लो जन्मभूमि के ताप ।।4/96।।
ज्वलित दृगों से, बल विक्रम से, भरकर तीव्र उछाल।
पौरुष पुञ्ज सिंह सिखलाता, साहस शौर्य विशाल ।।4/86।।
दुर्बल तरु के खाद्य सबल तरु, खींच-खींच खा जाते।
न्याय-प्रदत्त भोग भी अपना, दुर्बल भोग न पाते ।।4/98।।
मनस्वियों की सहज प्रकृति को, बतलाते वन-फूल।
रहो शीर्ष पर अथवा झड़कर, कर लो धूल कबूल ।।4/101।।

आदि-आदि अनेक शिक्षाएँ प्रकृति से ग्रहण कर किशोर चन्द्रशेखर दृढ़ संकल्पित प्रवीर बन गया ।

पञ्चम सर्ग में विन्ध्याटवी तजकर चन्द्रशेखर के काशी आने का वृत्तान्त है । यहाँ स्थान-परिवर्तन को स्वाप्निक सूत्र से जोड़ा गया है । शिव जी चन्द्रशेखर को काशी जाने और वहाँ स्वातन्त्र्यान्दोलन में सक्रिय भाग लेने हेतु प्रेरित करते हैं ।

स्वाप्निक आदेश को शिराधार्य कर चन्द्रशेखर काशी की ओर चल पड़े । निकट आने पर दूर से ही गङ्गा की तन्वंगी धारा क्रान्त्यान्दोलित बालक को चाँदी की कढ़ी दुधारा प्रतीत हुई-

दी बड़ी दूर से दिखलायी, गंगा की शुभ्र सुधारा यों।
काशी-रक्षार्थ रखी शिव ने, चाँदी की कढ़ी दुधारा ज्यों ।।5/54।।

बालक आगे बढ़ा तो उसे विश्वनाथ मन्दिर शतघ्नी (तोप) के सदृश समझ पड़ा-

मन्दिर इस भाँति प्रतीत हुआ, ज्यों सुकृत-शतघ्नी सुस्थापित।
जय-घोष गोलियाँ चला-चला, करता विनष्ट कलि-कष्ट अमित ।।5/79।।

चन्द्रशेखर ने राजकीय काशिक विद्यालय में सुशिक्षार्थ प्रवेश लिया-

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vahi Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विद्या कौशल कल कला-केन्द्र, सुरभाषा का धुर-वाह जान।
शिक्षार्थ प्रविष्ट हुआ काशिक विद्यालय में बालक सुजान ।।5/83।।

षष्ठ सर्ग में चन्द्रशेखर के स्वातन्त्र्यान्दोलन में सक्रिय भाग लेने आन्दोलन दमनकारी अत्याचारी अंग्रेज अधिकारी को मारने और उसको दण्ड करार देने पर पन्द्रह बेतों की सजा पाने हेतु केन्द्रीय कारागार वाराणसी में भेजे जाने का वर्णन है। सर्ग का आदि प्रकृति-चित्रण से हुआ है, जो भावी घटना-चक्र का पूर्व सूचक प्रतीत होता है-

बालार्क-बिम्ब घन खण्ड-रूढ़, प्राच्यन्तरिक्ष में यों छाया।
मानो कोई अंग्रेज रुष्ट, काले घोड़े पर चढ़ आया ।।6/7।।

सामनीति का अनुसरण कर चन्द्रशेखर ने प्रथम गाँधी के सत्याग्रही आन्दोलन में भाग लिया ।

तिरंगा और गाँधी टोपीधारी शांत प्रदर्शनकारियों के दमनार्थ एक अश्वारूढ़ अंग्रेज अधिकारी आया । आते ही उसने कर्कश स्वर से गर्जन कर प्रदर्शनकारियों को गाँधी टोपी और झण्डे को भूमि पर फेंक देने का आदेश दिया । प्रदर्शनकारियों के ऐसा न करने पर रुष्ट आंग्लाधिकारी ने उन शांत प्रदर्शनकारियों को पटक-पटक कर, घसीट-घसीट कर लातों, घूसों, मुक्कों, जूतों, बेतों से निर्ममतापूर्वक मारना-पीटना प्रारम्भ कर दिया । उनके मुखों को, झण्डों को, गाँधी टोपी को बूटों तले कुचलते हुए भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगा । प्रतीकार शून्य प्रदर्शनकारियों की यह सहिष्णुता चन्द्रशेखर को क्लीवता लगी । इस अहिंसक आन्दोलन में उन्हें कायरता और स्त्रैण्य भाव की प्रतीति होने लगी । अन्ततः चन्द्रशेखर के धैर्य का बाँध टूट चला । फलतः तिरंगे झण्डे में लगे दण्ड से वह वीर बालक क्रूर अंग्रेज अधिकारी पर ताबड़-तोड़ दण्ड-प्रहार करने लगा । परिणामतः वह वीर आरक्षी दल द्वारा घेर कर गिरफ्तार कर लिया गया और न्यायपीठ में 'खंरवाट' नामक दण्डाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया गया । दण्डाधिकारी द्वारा वीर बालक के पिता-माता, निवासादि विषयक प्रश्न के उत्तर में उसने कहा-

बोला निर्भय वह बालसिंह, 'आजाद' नाम मेरा जानो।
है नाम पिताश्री का मेरे, 'स्वाधीन' इसे सच ही मानो ।।6/66।।
माता मेरी भारत माता, जानता जिसे जग सारा है।
स्वातन्त्र्य-युद्ध व्यवसाय शुद्ध, कारागृह भवन हमारा है ।।6/67।।

इस विलक्षण उत्तर से रुष्ट दण्डाधिकारी बोला-

सुन वचन चकित देखने लगा वह न्यायपाल कह उठा रुष्ट।
पथ भ्रष्ट अधम बालक अशिष्ट चापल्य छोड़ दे अरे दुष्ट।।6/69।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

दण्डाधिकारी खरवाट और वीर बालक आजाद में बड़ी देर तक नाटकीय संवाद चला। प्रसंग का अभिनय पूर्ण मंचन भी हो सकता है। अन्ततः वीर बालक आजाद को दण्डाधिकारी खरवाट ने पन्द्रह बेंत-प्रहार का दण्ड दिया। निर्भीक बालक दण्डादेश से गौरवान्वित हुआ कह उठा-

स्वातन्त्र्य-मत्त बोला प्रवीर यह ध्वजा तिरंगा जय पायें।
वह संस्कृति जो संस्कृताधीन सम्पूर्ण विश्व में छा जायें ॥6/84॥

सातवें सर्ग में केन्द्रीय कारागार वाराणसी में आजाद के वीरत्व का निर्भय प्रदर्शन है। सर्ग का प्रारम्भ प्रस्तावनात्मक प्रकृति-चित्रण से हुआ है। आजाद पर वेत्र-प्रहार होने की घटना की सूचना प्रकृति द्वारा पहले ही दे दी जाती है। सूर्योदय काल में छिटके अरुणाभ मेघखण्ड किरण-प्रहार से गगन-पृष्ठ पर पड़े हुए बरारे के समान लग रहे थे-

जो वेत्र-पहार रुक गया था चल पड़ा पुनः जब दिन आया।
रवि भी बन वेत्र-प्रहारी ज्यों ले किरण-दण्ड नभ पर छाया॥7/28॥
जो इधर-उधर लघु मेघ-खण्ड बिखरे थे नभ में न्यारे हो।
ज्यों किया किसी ने कशाघात नभ पर पड़ गये बरारे हों॥7/26॥

दण्डार्थ बुलाये जाने पर आजाद ने काराधिकारी गंगासिंह के कार्यालय को और उसके विकट रूप को देखा-

पीठों पर लटकीं बन्दूकें ऐसे आरक्षी दल-द्वारा।
रक्षित सुकक्ष काराधिप का देखा लटका पर्दा प्यारा॥7/36॥
कर्णस्पर्शी मोटी मूछें भारी कपोल भारी कपाल।
आसनासीन देखा उसको ज्यों भैंसे पर हा यम कराल॥7/37॥

किशोर आजाद के तेजस्वी मुख मण्डल से प्रभावित काराधिप ने क्षमा-याचना कर लेने पर दण्ड-मुक्ति की बात कही, जिसको अपमान मानकर वीर आजाद ने कहा-

अवलोक आंग्ल के वृन्द तुच्छ जो पुच्छ हिलाते खड़े-खड़े।
वे अधम क्षमा-याचना करें जो श्वान सदृश हैं नीच बड़े॥7/61॥

संवाद कई छन्दों में चल रहा है जिसके आधार पर प्रसंग का नाटकीय मंचन भी किया जा सकता है। वेत्र-प्रहारित वीर बालक आजाद के जय-घोष के साथ सर्ग का समापन होता है। समीर पर सवार यह बुलन्द जय घोष दूर तक सुनाई पड़ा-

अस्मिता देश की रक्षित हो क्षणभंगुर देह रहे न रहे।
यह देश हमारा रहे भले प्राणों की धार बहे न बहे॥7/91॥

आठवें सर्ग में कारामुक्त आजाद का जन-यूथ द्वारा स्वागत और वीर आजाद का देशभक्तिपूर्ण ओजस्वी भाषण तथा सशस्त्र क्रान्तिका आह्वान है। क्रान्तिवीर आजाद से संबंधित समग्र वृत्तान्त वायु वेग से देशभर में फैल गया। आजाद को उनके शौर्य और देशप्रेम पर बधाई देने साधुवेश धारी पाँच सन्यासी

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parisbad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
आये और आशीष मुद्रा में समवेत स्वर में बोल उठे-

मृगराज वत्स सौ वर्ष जियो भावी भारत की आशा हो।
भारत-भू की पावन विभूति उसकी अनन्त अभिलाषा हो।।9/14।।

यति पञ्चक के सहसा आगमन और बिना किसी भूमिका के आशीर्वाद के वचनोच्चारण से चकित आजाद के कुतूहलपूर्ण प्रेक्षण को देखकर यति प्रधान ने कहा-

मुझको विस्मिल जानो मेरे दक्षिण दिशि में बटुकेशदत्त।
सान्याल वीर अश्फाक और है भक्त सिंह स्वातन्त्र्य मत्त।।9/17।।

फिर कृत्रिम श्मश्रु जटाजूटादि को हटाकर वह यतिपञ्चक अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गया।

प्रातः प्रस्ताव हुआ कि सशस्त्र क्रान्ति-सञ्चालन हेतु आने वाले अवरोधों को मिटाने हेतु गाजीपुरस्थ मठ के मृतप्राय मठाधीश का शिष्यत्व स्वीकार किया जाये और कालान्तर में उस समृद्ध मठ की अतुल सम्पत्ति से शस्त्रास्त्र का क्रय हो। इस हेतु वीर चन्द्रशेखर आजाद को उपयुक्त समझकर उनका नाम प्रस्तावित किया गया। प्रस्ताव मान्य हो गया। आजाद मठ के महान्त के प्रिय शिष्य बन गये। आजाद ने अपने सहज सेवा समर्पण के सद्गुणों से मठाधीश को वशीभूत कर लिया। आजाद ने आश्रम में अध्यात्म के साथ ही देश-प्रेम की भावनाओं का संचार करके मठ में अपना महत्वपूर्ण स्थान तो बना लिया, लेकिन क्रान्तिपूर्ण उनका हृदय शान्तिपाठ के दौर में सुतृप्ति न पा सका। बम ध्वनि सुनने को आकुल उनके कर्ण घण्टा-ध्वनि से संतुष्ट नहीं थे-

होता सुतृप्त मृग हरित खेत में किन्तु न हो पाता मृगेन्द्र।
वह तभी तृप्त हो पाता जब जाकर फाड़े दारुण गजेन्द्र।।9/56।।

अस्तु-

था अर्द्धरात्रि का शून्यकाल सन्यासी का चोला उतार।
चल पड़ा वीर भूचाल सदृश मन्दिर को करके नमस्कार।।

दसवाँ सर्ग सुप्रसिद्ध काकोरी काण्ड से संबंधित है। क्रान्तिकारियों को आजाद का अभाव भावनात्मक क्लेश पहुँचा ही रहा था। उधर प्राची के प्राचीर से मित्र (सूर्य) झाँकने लगा जिससे निशाजन्य सूनापन भागने लगा और इधर मित्र-मण्डली में मित्र के समान तेजस्वी मित्र का आगमन हुआ। वातावरण मोद से भर गया। मित्रदाता प्रभात की जयकार हुई-

प्राप्तशेखर शिखरस्थ सुमित्र विकचमुख पंकज मोद अनन्य।
सभी कहते भरकर उत्साह मित्रदाता प्रभात है धन्य।।10/7।।

छियासी छन्दों वाले इस सर्ग में काकोरी स्टेशन के पास सरकारी खजाने को ले जाने वाली रेलगाड़ी को रोक कर उसमें संचित कोश को शुभ प्रयोजन हेतु लूट कर क्रान्तिकारियों ने अपने शौर्य, बुद्धिबल, योजना कौशलादि रूप में आंग्लशासन को चुनौती भेज दी। इधर योजना में सफल क्रान्तिकारी अंधकार में

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ओझल हो गये और उधर कोशहीन विकल रेलयान अपने पुराने पटरी-पथ अशान्त-सा चल पड़ा-

धूम नैराश्य वमन कर घोर साथ ले कोशहीन वह कक्ष।
छुकच्छुक करता जाता यान धड़कता हो ज्यों उसका वक्ष।।10/85।।

अन्तिम सर्ग में क्रान्तिवीरों के विशेषकर क्रान्तिवीर आजाद की शौर्य-पूर्ण बलिदान-गाथा का वर्णन है। काकोरी काण्ड के समस्त वीर पकड़े गये और फाँसी पर चढ़ा दिये गये। एक मात्र वीर आजाद ही अवशिष्ट रहे जो अपने बुद्धि-बल,शौर्य, साहस के बल पर प्रबल आंग्ल साम्राज्य को चुनौती देते रहे।

अपने ही देश के स्वपक्षीय नृशंस लोभी पामर नर द्वारा अल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में आजाद की उपस्थिति की गुप्त सूचना दी जाने के बाद सशस्त्र पुलिस बल से घिरे वीर आजाद की मुठभेड़ के सजीव चित्र से उनके अचूक संधान से, शौर्य बलिदान से एकादशं सर्ग भरा पड़ा है। वीर आजाद के पास जब एक ही गोली शेष रह गयी तब उसे स्वयं अपने कपाल पर दागकर नश्वर शरीर को बलिदान की बलिवेदी पर चढ़ाकर, स्वदेशभूमि को अन्तिम प्रणाम कर, सदा आजाद बने रहने की अपनी भीष्म प्रतिज्ञा पूर्ण कर क्रान्तिकेशरी वीर आजाद शिवलोक सिधार गये और सदा के लिए अपने को अमर बना गये। आजाद के बलिदान का समादर पूरी प्रकृति ने किया-

चलता समीर, बहती सरिता, अवनी-अम्बर सागर महान।
सबने मिलकर उद्घोष किया हो धन्य धीर सुकृती सुजान।।
है वीर प्रसूता क्रोड धन्य, है धन्य भूमि भारत अनन्य।
तप त्याग तेज बलिदान धन्य, पवमान कल्प वरवीर धन्य।।

इस धन्यता के आगे बोरों में नोटों की छल्ली लगाए काली कमाई वाले अरब-खरबपति, कुर्सी के लिए श्वानवत् लड़ते झगड़ते जन सेवा का स्वाँग रचाने वाले नेतृवृन्द का जीवन कितना कुत्सित एवं निस्सार लगता है। सत्ता लोलुपों को आजाद के बलिदानी चरित से शिक्षा लेनी चाहिए-

नवयौवन का सुन्दर शरीर सुख-भोग योग्य बलवान देह।
तृणवत् समझा कर दिया हवन उससे न किया किञ्चित सनेह।।11/133।।
देशानुराग तप-त्याग रहा, कुछ भोग-भाग से काम न था।
केवल अर्पण ही अर्पण था, पद-लोभ-लाभ का नाम न था ।।11/134।।
परिधान एक बस अधोवस्त्र, था अस्त्र भुशुण्डी विद्यमान।
तन से बलिष्ठ त्यागी तपिष्ठ, हो धन्य धीर सुकृती सुजान ।।11/135।।

वर्तमान परिवेश में जहाँ स्वार्थ का नग्न नर्तन हो रहा है, प्रगति का रथ-चक्र रुका पड़ा है, देश नायक स्वार्थान्ध हुए देश की अस्मिता को नीलाम करने में लगे हैं, वहाँ पर 'आजाद' जैसे बलिदानी वीरों का चरित कितना उपयोगी और सामयिक है, कहने की आवश्यकता नहीं है । यदि साम्प्रतिक परिवेश आजाद चरित के साँचे में ढल जाए तो रामराज्य के आने में कुछ अधिक विलम्ब

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

नहीं होगा । मानव को भावों की इसी ऊँचाई पर पहुँचना है । मानव की जय-यात्रा में सत्काव्यों के सबल सम्बल की सम्प्रति परमावश्यकता है ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चैत्रशुक्ल नवमी
वि0 सं0 2074

डॉ0 रमाकान्त शुक्ल
(पद्मश्री से सम्मानित एवं राष्ट्रपति सम्मान प्रमाण-पत्र प्राप्तकर्ता)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अनुक्रम

क्र.	ग्रन्थ शीर्षक	पृष्ठ
1.	भारतगौरवखण्ड	20
2.	जन्मखण्ड	42
3.	बालखण्ड	51
4.	अरण्यखण्ड	67
5.	प्रेरणाखण्ड	87
6.	काशीखण्ड	102
7.	काराखण्ड	117
8.	आह्वानखण्ड	134
9.	यतिखण्ड	148
10.	काकोरीखण्ड	163
11.	बलिदानखण्ड	179

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इस भव्य भारतवर्ष में यह भारती भाती रहे ।
यह भव्यता के साथ ही नित नव्यता लाती रहे ।।

समर्पण

वीर जो क्रान्ति-कुण्ड में डाल
प्राण के हव्य हर्ष के साथ ।
मर्त्य, पर प्राप्त किये अमरत्व
समर्पित ग्रन्थ उन्हीं के हाथ ।।

मङ्गलाचरण

धरा जिसका कि एक लघुअंश
जगज्जीवन जिनका अनुदान ।
वही सविता समर्थ निज तेज
करें जनमङ्गल हेतु प्रदान ।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भारतगौरवखण्ड

परस्पर धर्मों में अविरोध
सभी में बन्धु-भाव-विस्तार।
एकता लख अनेकता मध्य
चकित रह जाता है संसार॥ १/६२॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वर्ग से बढ़कर दिव्य विशाल
सुवन्दित भारत-भूमि महान।
सागरावृत हो रही प्रतीत
नृपी सिंहासन पर छविमान ।।१।।

धराधर पर्वतराज सुरम्य
हिमालय इसका मुकुट ललाम।
विन्ध्य मञ्जुल मेखला समान
दिव्य कश्मीर भाल अभिराम ।।२।।

चरण वर पावन तमिल प्रदेश
सिन्धु-किंकर धोता दिन-रात।
दीखती लंका ज्यों जल-बिन्दु
चरण-प्रक्षालन-जन्य निपात ।।३।।

भाल पर लिप्त तुषार-कपूर
सुशोभित श्रृंग-किरीट ललाम।
दुपट्टे मेघ-खण्ड के धार
खड़े हैं पर्वत शोभाधाम ।।४।।

सत्त्व श्री-पूरित कानन-पंक्ति
सुशोभित है पर्वत-पद-लग्न।
देखती हो जैसे सुस्वप्न
वृक्ष मिस पुलक प्रकट सुख-मग्न ।।५।।

विमल फेनिलजल-भरित प्रपात
झरित होता इस भाँति प्रतीत।
लटकता ज्यों कन्धे से छूट
दुपट्टा गिरि का परम पुनीत ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
लता के तान वितान विशाल
प्रफुल्लित धरे मधुर फल हस्त।
बाँटते शीतल छाया वृक्ष
पथिक के हरते कष्ट समस्त ।।७।।

उषा-पद-लिप्त महावर मञ्जु
बाँटता पुलकित नवल प्रभात।
लगाता जिसको व्योम प्रसन्न
देख मुख सर-जल में अवदात ।।८।।

खिला कनकाम्बुज-सा रविबाल
किरण का फैला पिंग पराग।
रँगा नभ ने निज नीला वस्त्र
रँग उठी प्राची भर अनुराग ।।९।।

लोक में फैलाकर आलोक
कोक का शोक कर रहा चूर्ण।
बनाता रवि कलधौती प्रात
सरोवर को कर सुषमा-पूर्ण ।।१०।।

श्वेतपंकज-पुट पर आसीन
मधुप करते मधुरिम मधुपान।
सरोवर तट पर मञ्जु मराल-
मालिका रहती है गतिमान ।।११।।

विराजित रंग-बिरंग विहंग
सुशोभित भरित सरोवर-द्वार।
महोत्सव मानो कोई भव्य
महाजन-अवली जुटी अपार ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उदित हो जाता है रजनीश
यथा महिमा-मण्डित महिपाल।
सुशोभित नभ-सिंहासन मध्य
कौमुदी-कुंकुम-मण्डित भाल ।।१३।।

कुमुदप्रिय शशि पूरित शृंगार
चकोरों में भर मोद अपार।
नाचता रजनी भर रजनीश
चाँदनी का कौशेय पसार ।।१४।।

मन्दसुस्मित से शशि के शुभ्र
विहँस उठता जल-थल तत्काल।
व्योम की नील झील के बीच
तैरते मेघों के शैवाल ।।१५।।

विमल नभ नील सरोवर बीच
चन्द्रमा विकसित कमल समान।
उदित तारक ज्यों मुदित मिलिन्द
चतुर्दिक छा जाते छविमान।।१६।।

ज्वलित दीपक ज्यों शशि को जान
विमोहित हेम-पतंग समान।
घेरते निकल विकल उडु-वृन्द
चतुर्दिक छा जाते छविमान ।।१७।।

तनित नभ नील वितान समान
लटकता है शशि-घण्टा मौन।
स्वप्न में विचरण करता लोक
बजाते उसे निशा में कौन ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कूजते उड़ते लोल विहंग
बैठते गुल्मों पर तत्काल।
यही होता तब सहज प्रतीत
किसी की टूट चली मणि-माल ।।१९।।

विटप-कोटर-नीडों पर बैठ
विहग चोचों में चारा धार।
डालते जब शावक-मुख मध्य
द्विगुण छवि का करते विस्तार ।।२०।।

साँवली घटा देख वक-पंक्ति
मुदित मन उड़ती जब उस ओर।
भली लगती कितनी तत्काल
शोभना बन जाती चित-चोर ।।२१।।

हरित शुक की किंशुक सम तुण्ड
बैठता उड़ रसाल की डाल।
भला लगता कितना तत्काल
कुतरता जब रसाल फल लाल ।।२२।।

बैठ शाखानुरक्त द्विज मध्य
परम पण्डित पिक चतुर सुजान।
राग में माधव के अनुरक्त
गीत गाते प्रमत्त गुणवान ।।२३।।

शिखाधर शोभन कण्ठी मोर
पिच्छ का रचकर दिव्य वितान।
विपिन में नर्तन करता मत्त
हिला कलकण्ठ नील द्युतिमान ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लता की पगड़ी बाँधे वृक्ष
चतुर्दिक झूम रहे अभिराम।
फूल के कर्णफूल को धार
लचकतीं लोनी लता ललाम ।।२५।।

सुनाते पिक-चातक संगीत
मधुप-मालाएँ गातीं गीत।
विमोहित सुनकर निखिल निसर्ग
विमोहित पशु-पक्षी सप्रीत ।।२६।।

रसिक पिप्पल-दल सुन संगीत
मनोहर नर्तन लख तत्काल।
प्रशंसा करने लगते विज्ञ
बजाकर पत्र यथा करताल ।।२७।।

सरोवर कमलनयन निज खोल
देखकर दिव्य छटा-विस्तार।
तरंगित तटपर देकर ताल
प्रकट करता अपने उद्गार ।।२८।।

देश-प्रांगण में भर उल्लास
नाचतीं ऋतुएँ अति अभिराम।
चुराती रहतीं सबके चित्त
क्रमिक आगम लो देख ललाम ।।२९।।

रम्य ऋतुरथ पर चढ़ ऋतुराज
ध्वनित कर पिक-तन्त्री के तार।
विचरता शोभन सरस वसन्त
बहाता वन-वन में मधुधार ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पताका वक-माला की धार
चलाता चपला-असि भर रोष।
बजाता घन-दुन्दुभि घनघोर
किया करता पावस जय-घोष ।।३१।।

चारु चन्द्रानन में संलिप्त
ज्योत्स्ना-अंगराग सुखरूप।
काश-पट मंजुलखंजन-नयन
वरद बन आती शरद् अनूप ।।३२।।

गुणों को छूता मलय समीर
गुल्म में व्याप्त शिलीमुख संग।
वियोगी को देता दुख दून
श्रमिक को सुख, छू श्रमश्लथ अंग ।।३३।।

बीन ज्यों लटके लम्बे नीड
पवन-चालित ईषत गतिमान।
श्रवण कर उनकी मोहक तान
नाचतीं लहरें सर्प समान ।।३४।।

दया-द्रव को नगपति के धार
बहा करतीं नदियाँ साभार।
बुझातीं हैं फसलों की प्यास
सुशोभित यथा कण्ठ में हार ।।३५।।

छप्परों पर फैली हैं बेल
फले हैं कूष्माण्ड अभिराम।
लिप्त गोमय-सुगन्ध से युक्त
दोष-निर्मुक्त कृषक के धाम ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जामुनें श्यामल कटहल आम
कहीं पर कदली दल अभिराम।
कहीं पर कैथे मुहुए बेल
कहीं पर बदरी लकुच ललाम ।।३७।।

लतावृत हरित गुल्म के शीर्ष
लटकते पके बिम्ब रतनार।
खड़े ज्यों भद्र पुरुष सोल्लास
स्वर्ण-कुण्डल कानों में धार ।।३८।।

कहीं पर थिरक रहा है मोर
कहीं पर कोकिल का कल गान।
कहीं पर पाकर पवन-प्रसंग
छेड़ता बाँस बाँसुरी-तान ।।३९।।

गुटुरगूँ कहता कहीं कपोत
बजाता तबला भर अनुराग।
सुनाता प्रिय-आगम-सन्देश
कहीं बैठा बड़ेर पर काग ।।४०।।

द्विजाश्रयदायक लम्बित नीड
धारकर कहीं सरोवर-कूल।
देख प्रतिबिम्बित छाया-साम्य
खड़ा विस्मय में पड़ा बबूल ।।४१।।

कहीं पर भरित सरोवर स्वच्छ
सुशोभित निर्मलवारि-विकास।
जहाँ हलके हिलते जल बीच
झूलता बिम्बित नीलाकाश ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कहीं पर भीमकाय वट-वृक्ष
कहीं पर खड़ा निम्ब छतनार।
कहीं पर साल विशाल तमाल
कहीं पर किंशुक कल कचनार ।।४३।।

घटस्तनीं बैठीं महिषी धेनु
गरजते कहीं बैल बलवान।
कहीं चितकबरे बकरे खड़े
झिटकते लम्बे दोनों कान ।।४४।।

ग्राम में नाच रहे गोपाल
गीत गाते भर स्वर सविशेष।
विमुग्धा राधा हँसती मुग्ध
मोद में भर जाता परिवेष ।।४५।।

जोतते जनजीवन के हेतु
खेत को हलधर गुणी किसान।
क्षुधा क्षुधितों की करते दूर
अन्न भर कर करते कल्याण ।।४६।।

वनस्पतियों में औषध और
वृक्ष में बसते देव उदार।
नदी में देवी, गिरि पर शम्भु
हृदय में आत्म-भाव-विस्तार ।।४७।।

सत्य सहयोग शौच उपकार
सहज संतोष दान विश्वास।
प्रेम बलिदान सहोदर तुल्य
हृदय में करते नित्य निवास ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सिखाया जाता योगाभ्यास
समाधिस्थित हो करना ध्यान।
सिखाये जाते हैं निःशुल्क
कलाएँ और ज्ञान-विज्ञान ।।४९।।

चतुर्मुख जीवन-दर्शन दिव्य
शान्ति के साथ क्रान्ति का योग।
शस्त्र के साथ शास्त्र-संयोग
उभय का विलसित कुशल प्रयोग ।।५०।।

उपग्रह कम्प्यूटर-विस्तार
देख परमाणु-शक्ति-सञ्चार।
प्रकम्पित खल-समुदाय सभीत
धुकधकी उठती बारंबार ।।५१।।

जुझारू सेना सुभट प्रचण्ड
साहसी विकट प्रबल बलवान।
युद्ध-कौशल में परम प्रवीण
प्राप्त समरस्थल में सम्मान ।।५२।।

स्वप्न में भी न यहाँ की भूमि
सह सकी वैरी की ललकार।
दे रहा है साक्षी इतिहास
सिकन्दर महाबली की हार ।।५३।।

बने रण में उत्तर मुँहतोड़
दशानन दर्पित के श्रीराम।
दुष्ट-दल का बनकर संहार
यहीं पर जन्मे थे घनश्याम ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

राम, श्रीकृष्ण, गांधी, बुद्ध
शिवा, राणा, बिस्मिल, अश्फाक।
भक्त सावरकर, वीर सुभाष
जाह्नवीधर फड़के की धाक ।।५५।।

व्रती ऋषि और महर्षि महान
तपस्वी त्यागी सिद्ध सुजान।
वीर दानी उदार विद्वान
गुणी ज्ञानी हो गये महान ।।५६।।

शस्त्र के साथ शास्त्र में दक्ष
यहाँ की पावन पुण्य-प्रसूति।
धरा का सार्थक करके नाम
बनी है विश्रुत विश्व-विभूति ।।५७।।

श्रीशंकर, सायण, बल्लभ, मध्व
पतञ्जलि, पाणिनि, गौतम, गर्ग।
निम्ब रामानुज बल्लभ आदि
समादृत आचार्यों के वर्ग ।।५८।।

आदिकवि वाल्मीकि वर व्यास
महाकवि कालिदास श्रीहर्ष।
माघ भवभूति और जयदेव
बाण कवि वाणी के उत्कर्ष ।।५९।।

सूर तुलसी कबीर रसखान
जायसी कुंभन केशवदास।
रहीमालम मीरा भारतेन्दु-
आदि से पूरित काव्याकाश ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मधुर घण्टा-ध्वनि मन्दिर मध्य
मस्जिदों में अजान के बोल।
राम-रमजान मध्य सौहार्द
देखता चकित जगत दृग खोल ।।६१।।

परस्पर धर्मों में अविरोध
सभी में बन्धु-भाव-विस्तार।
एकता लख अनेकता मध्य
चकित रह जाता है संसार ।।६२।।

विरोधी गुण-धर्मों में मेल
पराक्रम उग्र शान्ति-सञ्चार।
अग्नि का हो ज्यों हिम से सख्य
समन्वय से विस्मित संसार ।।६३।।

वृषभ में वृषभध्वज का रूप
अतिथि में देव-भाव की दृष्टि।
चराचर में प्रभुरूप सुरम्य
जनों में बन्धु-भाव की सृष्टि ।।६४।।

शिष्ट जन की विशिष्ट प्रियभूमि
प्रकृति की छटा वर्णनातीत।
स्वर्ग-अपवर्ग उभय का हेतु
स्वर्ग हो जाता हीन प्रतीत ।।६५।।

चराचर को करुणा का दान
सज्जनों को मैत्री का दान।
दुर्जनों को द्वन्द्वों का दान
दान ही देता देश महान ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देखकर गुण-गौरवआगार
सत्त्व दृढ़ शील तत्त्व-विस्तार।
गगन में घूम-घूम रवि-चन्द्र
रहे माँ की आरती उतार ।।६७।।

धार कर पल्लव-कर के मध्य
मञ्जरी ज्यों वर्तिका विशाल।
अर्चना करता परम प्रफुल्ल
फलेच्छुक नम्र उदार रसाल ।।६८।।

सज्जनों से जैसे नवनीत
दुर्जनों से ज्यों कुलिश कठोर।
प्रकृति भारत की यही पुनीत
प्रशंसित जग में चारों ओर ।।६९।।

सुमन-सी मञ्जुल मृदुल मनोज्ञ
मञ्जु मक्खन-सी कोमल कान्त।
अनय लख बन जाती ज्यों अग्नि
प्रकृति चन्दन-सी शीतल शान्त ।।७०।।

जगत् में छा जाता जब ताप
ग्रीष्म का होता उग्र प्रसार।
प्रकृति कर उठती उग्र विरोध
देख अन्याय-पूर्ण व्यवहार ।।७१।।

तरल जल जो जम हिमगिरि-शृंग
सुशोभित बन पाषाण कठोर।
ग्रीष्म लख द्रवित दौड़ता सद्य
मिटाने ताप नदी की ओर ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कठिनता-मृदुला नूतन-निबद्ध
बहा करती जीवन-रसधार।
प्रफुल्लित जीवन-उपवन मध्य
पुष्प बन रौद्र और श्रृंगार ।।७३।।

लता लोनी लखकर मधुमास
लचकती रहती जो सविलास।
सुमन-मुट्ठी में भरे पराग
रसालों को रँगती सोल्लास ।।७४।।

ग्रीष्म-महिषासुर को अवलोक
कली के कुन्त करों में धार।
भ्रमर-गुञ्जन मिस बारंबार
वही भरतीं भीषण हुंकार ।।७५।।

संघ वृक्षों के लख उत्ताप
हिलाकर सीस व्यक्त कर क्रोध।
डालकरके विरोध में पत्र
ग्रीष्म का करते घोर विरोध ।।७६।।

प्रपीड़ित जड़जंगम को देख
आम्र तरु जो कि विनम्र उदार।
पत्र-तर्जनी उठा, पिक-बोल
ब्याज से रोके बारंबार ।।७७।।

भेज ग्रीष्मेश भानु की ओर
वाष्प के ब्याज दग्ध उद्गार।
ग्रीष्म का करता घोर विरोध
सरोवर परहित जीवन धार ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दया द्रव-रूप हिमद्रव भेज
हिमालय नगपति परम उदार।
सरित में उसे बहाता वीर
प्रकट करता विरुद्ध उद्‌गार ।।७९।।

ताप रुष्टा गंगा कृशकाय
ग्रीष्म का करती कड़ा विरोध।
मचाकर हाहाकार अपार
उछलती लहरों में भर क्रोध ।।८०।।

पपीहा सत्याग्रही सुजान
छोड़कर खान-पान धृतिमान।
उर्ध्वमुख करता शान्त विरोध
छेड़ता है विरोध में तान ।।८१।।

जागरणशील देश इस भाँति
वीर्य बल विक्रम में विख्यात।
बन गया दास हुआ परतन्त्र
काल का पाकर प्रबलाघात ।।८२।।

अमित बलशाली है गजराज
न विक्रम में मृगेन्द्र के चूक।
उन्हें लख पिञ्जरपाश निबद्ध
न किसके उर में उठती हूक ।।८३।।

प्रबल पड़कर ज्यों कालीरात
दिवस को करती आभा-हीन।
तामसी दुष्टों ने त्यों हाय
देश की ली स्वतंत्रता छीन ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तेज का पुञ्ज चण्ड मार्तण्ड
राहु ग्रस लेता देता कष्ट।
काल गति प्रबल परम दुर्धर्ष
तथ्य स्वयमेव सिद्ध सुस्पष्ट ।।८५।।

मिटाने क्षुधा बुभुक्षितवृन्द
यहाँ आया करने व्यापार।
बन गया सत्ताधर सम्राट
छल-कपट का करके विस्तार ।।८६।।

हुआ संकीलित-शक्ति स्वदेश
विदेशी कपटी धूर्त कराल।
देश का दोहन किये विशेष
शेष रह गया मात्र कंकाल ।।८७।।

क्लेश से पीड़ित देश अशेष
कर उठा पद-मर्दित चीत्कार।
हरो दुखभार कोसलाधीश
न कोई सूझ रहा आधार ।।८८।।

कष्टहारी अनाथ के नाथ
कृष्ण अच्युत गोविन्द उदार।
दासता-वारिधि-वीचि-निमग्न
देश का करो नाथ उद्धार ।।८९।।

वचन गीता-प्रदत्त का ध्यान
शीघ्र ही किये कृष्ण भगवान।
किये संप्रेषित रक्षा-हेतु
देश में पार्षद गण बलवान ।।९०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

तेज में ज्वलित अग्नि के तुल्य
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
देश में फैल गये तत्काल।
दासता-तम-विनाश में दक्ष
बन गये जलती हुई मशाल ।।९१।।

आंग्ल-अर्णव अगाध के मध्य
विकट वडवाग्नि बने बलधाम।
शत्रु-वन बीच बने दावाग्नि
दग्ध हो गये आंग्लउद्दाम ।।९२।।

घोर घड़ियाल ब्रिटिश साम्राज्य
निगलकर बैठ गया था देश।
उदर से खींच किये उद्धार
धन्य ऊर्जस्वल वीर विशेष ।।९३।।

हो गया भारत देश स्वतन्त्र
उन्हीं का पौरुष सफल प्रयास।
हुए उन्मुक्त विहग के कण्ठ
गीत गाये भर कर उल्लास ।।९४।।

मुदित होकर मेरा भी कण्ठ
एक का वीर चरित्र उदार।
हुआ गायन के हेतु सचेष्ट
किये निज बल पर बिना विचार ।।९५।।

बुद्धि ने कहा कि है चापल्य
हृदय ने कहा भाव-आधार।
चेतना बोल उठी तत्काल
हृदय का कथन करो स्वीकार ।।९६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रचो सत्काव्य तुरन्त सुजान
पुष्ट तव आलम्बन-आधार।
हिमालय का उदार अवलम्ब
सरित की धारा का विस्तार ।।९७।।

अल्पमति भी पाता काव्यत्व
मिला यदि आलम्बन बलवान।
प्राप्त करके सुवत्स-संयोग
धेनु-थन से पयधार समान ।।९८।।

तुम्हारा आलम्बन बलवान
वीर-व्रतधारी पूज्य महान।
अमर इतिहास पृष्ठ पर लेख्य
शीर्ष पर उसका वर बलिदान ।।९९।।

शौर्य-संशाणित दिव्य चरित्र
शील का प्राप्त पुष्ट आधार।
उच्च काव्यान्तरिक्ष पर रूढ़
मेघ ज्यों बरसाता रसधार ।।१००।।

भरा जिनमें बल वीर्य विशिष्ट
पराक्रम करुणा-भाव पवित्र।
देश-अनुरक्ति भक्ति बलिदान
उन्हीं के गायन-योग्य चरित्र ।।१०१।।

देश-अनुराग-तड़ाग सुमध्य
कनक-अम्बुज समान छविमान।
सुपूरित त्याग मञ्जु मकरंद
उसी का गेय दिव्य गुणगान ।।१०२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आंग्ल साम्राज्य विकट वन बीच
गरजता भरता रहा निनाद ।
दुष्ट दल वक्ष विदारण दक्ष
क्रान्तिकेशरी वीर आजाद ।।10३।।

मूछ ज्यों धारदार तलवार
म्यान से जैसे कढ़ी कटार ।
हुआ ज्यों स्वाभिमान साकार
रहा वैरी दल को ललकार ।।10४।।

दृक्कमल विमल सौम्य मुख-चन्द्र
श्मश्रु-युत मञ्जु ओष्ठ अभिराम।
शुभ्रदन्तावलि-प्रभा प्रकृष्ट
उसी का गाओ चरित ललाम ।।१०५।।

वही नर-व्याघ्र चण्ड भुज दण्ड
जननि का बना क्रोड-अभिमान।
बना पौरुष का प्रबल प्रतीक
समर्पित किये देशहित प्राण ।।१०६।।

क्लैब्य-सागर में ज्यों बड़वाग्नि
भरित जिसमें बलिदान प्रभूत।
उसी के गाओ दिव्य चरित्र
वही है कृती क्रान्ति का दूत ।।१०७।।

उठ गये हाथ अनय को देख
शत्रु की सह न सका ललकार।
प्रबल जिसके भुजदण्ड प्रचण्ड
बने स्वातन्त्र्यपोत-पतवार ।।१०८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

क्रीत जिसके द्वारा अमरत्व
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
मूल्य ज्यों किये प्राण बलिदान।
ज्वलित पौरुष का पिण्ड प्रचण्ड
प्रबल दुर्घर्ष यथा पवमान ।।१०९।।

एक ही वस्त्र शस्त्र पिस्तौल
भरा जीवट से पुष्टशरीर।
दर्प से दीप्त भाल दृग लाल
तपी त्यागी बलिदानी वीर ।।११०।।

वृषभ ज्यों पुष्ट पीन सुस्कन्ध
शिलासमआयत वक्ष विशाल।
मूछ मण्डित मञ्जुल मृदु ओष्ठ
दीप्तदृढ़देह समुन्नत भाल ।।१११।।

न्यस्त कटि-तट-पिष्टल पर हस्त
श्मश्रुदर्पित-दीप्तानन धीर।
दीर्घ दृगकमल पीन पृथु वक्ष
वीर रस मानों धरे शरीर ।।११२।।

बाहु आजानु बलिष्ठ शरीर
मूछ-मण्डित आनन अभिराम।
दर्प से दीपित भाल विशाल
सहज शुचि स्वाभिमान का धाम ।।११३।।

नाम सुनते ही पड़ता श्याम
गौर मुख गोरों का तत्काल।
न हो पाता जिसमें सूर्यास्त
कँपा आंगल-साम्राज्य विशाल ।।११४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

मिटा विकराल आंग्ल-साम्राज्य
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
वीर बन गया कराल कुठार।
शौर्य-संशाणित वज्रशरीर
ज्वलित पौरुष था ज्यों साकार ।।११५।।

दैन्य के पंक-अंक के बीच
विकचपंकज-सा सुरभि पसार।
विचरता रहा राम-सम वीर
त्याग तप शौर्य यथा साकार ।।११६।।

सहसभुज था प्रचण्ड साम्राज्य
विकट दमनात्मक पुष्ट अखण्ड।
उसे मथ डाला बन जामदग्न्य
परशु-सम धर पिस्तौल प्रचण्ड ।।११७।।

कोष पर दल के था स्वामित्व
किन्तु त्यागी आजाद महान।
स्वार्थ में किया नहीं उपयोग
लोभ से दूर रहा बलवान ।।११८।।

सदा ही बना रहा आजाद
भले परतन्त्र रहा हो देश।
किया निज नाम लोक में धन्य
हुई भारत-भू धन्य विशेष ।।११९।।

जा चुकी थी आत्मा शिव-लोक
पड़ा था प्राण-विहीन शरीर।
किन्तु आतंकित अरि-बलवृन्द
निकट तक जा न सका धर धीर ।।१२०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो कि इस भाँति शौर्य–आगार
        वीर बलिदानी विगत   विकार।
उसी का गेय चरित्र उदार
        जो कि कवि–वाणी का श्रृंगार ।।१२१।।

आंग्लशासन–तम–हारी चन्द्र
        चन्द्रशेखर शिव का अवतार।
काव्य–नभ में लो उसे उतार
        कीर्ति–कौमुदी करो विस्तार ।।१२२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जन्मखण्ड

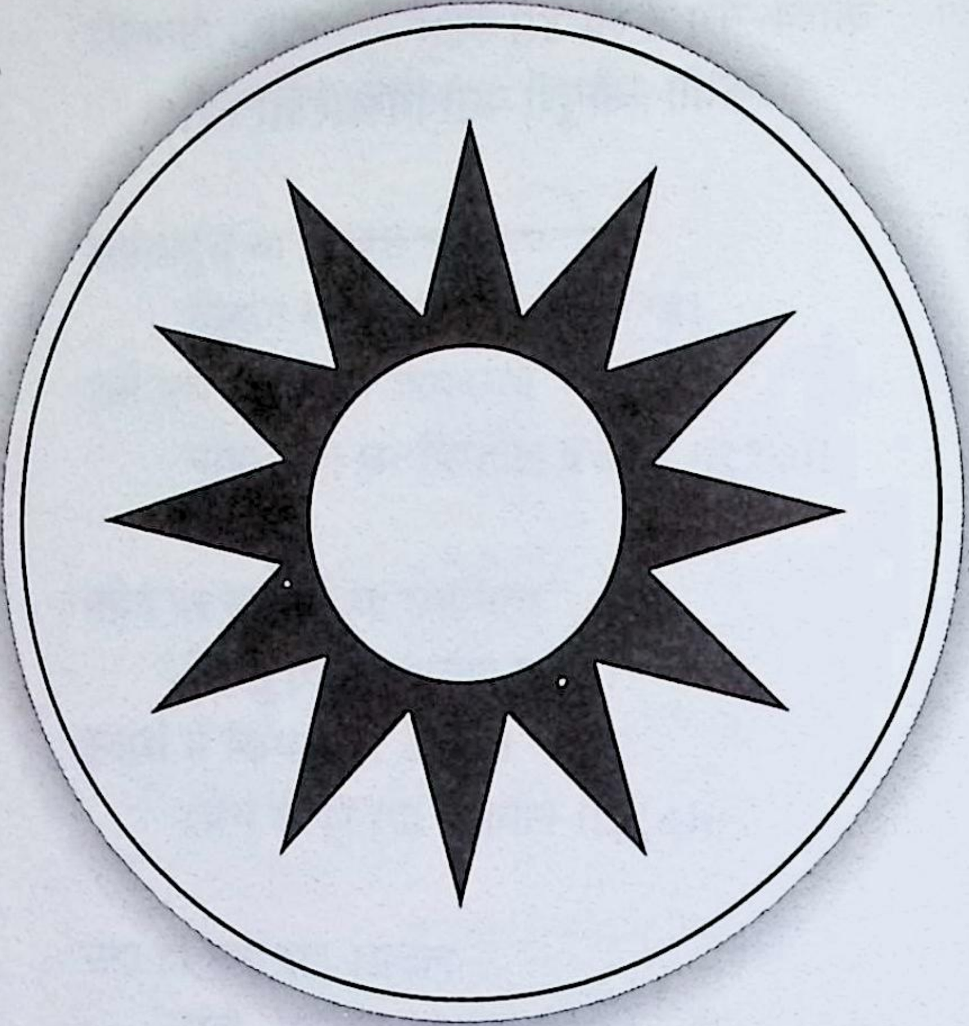

जगरानी के द्वारा प्रसूत वह पुत्र-रत्न लगता वैसे।
प्राची रमणी द्वारा प्रसूत तेजस्वी बालसूर्य जैसे।।२/७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मुद्रिका-मध्य महिमण्डल की, भारत ज्यों जड़ा नगीना है।
सम्पूर्ण सृष्टि की शोभा को, इसने निज छवि से छीना है ॥१॥

गंगा में बहता उज्ज्वल जल, छवि चाँदी की खो जाती है।
उससे सिंचित पावन मिट्टी, चन्दन-जैसी हो जाती है ॥२॥

सागर-किंकर पद धोता है, गिरिराज सुछत्र लगाता है।
मेखला बना वर विन्ध्याचल, रवि दर्पण दिव्य दिखाता है ॥३॥

गंगा का पावन पुलिन जहाँ पुर ग्राम-समूह निवास करें।
निज गुण-गौरव सम्पत्ति सहित अमरावति का उपहास करें ॥४॥

गङ्गा के ही सुन्दर तट पर, धन-धान्य-युक्त गौरव-प्रधान।
उन्नाव नाम का जनपद है, भव-सिन्धु मध्य नौका समान ॥५॥

निज उच्च गुणों से भाल देश का ऊँचा करता आया है।
उन्नाव नाम निज सार्थक कर इसने इस भाँति दिखाया है ॥६॥

नगराज हिमालय और विन्ध्य के मध्य भाग में जो आती।
गुण-गर्वित वह महिमामण्डित भू आर्यावर्त कही जाती ॥७॥

इस भूतल के हृदयस्थल-सी, पुण्यात्माओं से भरी हुई।
है शस्त्र-शास्त्र में पारंगत, तीर्थोदक द्वारा घिरी हुई ॥८॥

है नहीं यहाँ से अधिक दूर वह बाल्मीकि-आश्रम महान।
जिसको रामायण-रचना का है प्राप्त परम गौरव प्रधान ॥९॥

सीता ने पति-वियोग-पीड़ा, रहकरके यहीं भुलायी थी।
लवकुश ने सिंह-शावकों से क्रीड़ा भी यहीं रचायी थी ॥१०॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रिपुसूदन महाबली ने भी लवणासुर के वध के क्रम में।
मथुरा को जाते समय बितायी एक रात इस आश्रम में ।।११।।

बहु नीच निरंकुश अनयी नृप वधदक्ष यशस्वी शक्तिधाम।
थे इसी भूमि पर यज्ञ किये वे परम परंतप परशुराम ।।१२।।

भारत की गौरव-गाथा इस जनपद से जुड़ती आयी है।
इसकी मिट्टी के कण-कण में गौरव की गन्ध समायी है ।।१३।।

हैं जन्म लिये इस मिट्टी में बहु शूरवीर दृढ़ व्रतधारी।
कितने ही रणरङ्गी खड्गी नेतावर वीर क्रान्तिकारी ।।१४।।

सुरसरि-क्षालित इस जनपद में अतिशय प्रसिद्ध हैं एक ग्राम।
बदरका नाम विश्रुत विशेष, पावन जैसे बदरिका धाम ।।१५।।

उस पुण्य वदरका के वासी, नर भले वित्त से क्षीण रहे।
थे नहीं वृत्त से क्षीण किन्तु, गुण-गौरव-ज्ञान-प्रवीण रहे ।।१६।।

रहते थे कुटियों में किसान, जिन पर तृण-निर्मित छप्पर थे।
लम्बी लौकी लटका करतीं, गोबर से लिपे-पुते घर थे ।।१७।।

झुरमुट में झूमा करते तरु, सिर पर शोभित लतिका-वितान।
करते रहते ग्रामीणों को मीठे फल छाया-सुख प्रदान ।।१८।।

लहरों का उठना बन्द जहाँ उस शान्त सरोवर निर्मल में।
प्रतिबिम्बित विटपावलियाँ ज्यों शीर्षासन करती हों जल में ।।१९।।

तरु-पत्रों से छनकर भूपर, पड़ती रहती थी सुखद धूप।
मानो बिछ गये बताशे हों अथवा बिखरे हों मधुर पूप ।।२०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गङ्गा की लख कल्लोल लोल, सुनकर सुखकर हर-हर निनाद।
सम्पन्नों से भी अधिक सुखी होते विपन्न खोकर विषाद ।।२१।।

करते थे वहीं निवास एक द्विज-दम्पति परम सदाचारी।
ब्राह्मण-कुल-भूषण गुणाग्रणी धर्मध्वज उत्तम व्रतधारी ।।२२।।

अंधे थे अघ के दर्शन में, अघ-श्रवण हेतु वे बहरे थे।
थे मूक पाप उच्चारण में, त्यों पाप-पंथ पर लंगड़े थे ।।२३।।

शिव-भक्त सुजान प्रसन्न परम सारे जनपद में थे चर्चित।
था सीताराम नाम उनका संयमित साधु सद्गुण सज्जित ।।२४।।

उनकी पत्नी साध्वी अतीव, जगरानी जानी जाती थीं।
दीनों के दुःख विनाश हेतु उर से अर्पित दिखलाती थीं ।।२५।।

रोहिणी यथा शशि का वैसे पति का अनुगमन किया करतीं।
सद्धर्म पूर्ण शुचि सदाचार-पालन में निरत रहा करतीं ।।२६।।

ईश्वर की इच्छा समझ सकल अपने दुख तो सह जाती थीं।
लेकिन दुखितों की दीन-दशा लख आँसू रोक न पाती थीं ।।२७।।

था काल आंग्ल-शासन का वह मार्तण्ड चण्ड-सा तपता था।
उसकी ऊष्मा से व्याकुल दल दलितों का थर-थर कँपता था ।।२८।।

दुहरा शासन दुःशासन का, अन्याय प्रबल होता रहता।
पीड़ितों दीन-दुखितों का दल आतंकित हो रोता रहता ।।२९।।

उस ग्राम बदरका में प्रायः उत्पीड़क शासक आते थे।
वे अत्याचारी बार-बार ऊधम मदमत्त मचाते थे ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

आंग्लाश्रित देशी राजे भी अति चाटुकार दुखदायी थे।
थे महानीच अघ-कीच-लिप्त दीनोत्पीड़क अन्यायी थे ।।३१।।

उनके कारिन्दे क्रूर कुटिल दीनों को सदा सताते थे।
देते रहते थे त्रास विपुल मनमाना जुल्म ढहाते थे ।।३२।।

निर्दोष दलित दुर्बल जन पर जाकर कोड़ों का बरसाना।
उनका था सुलभ मनोरंजन दीनों का रोना चिल्लाना ।।३३।।

रोते गिरते कँपते किसान खाकर कोड़ों की कठिन मार।
यह दृश्य देख जगरानी का होता विदीर्ण उर बार-बार ।।३४।।

यों दारुण दीन दशा दुस्सह दीनों की आये दिन लखकर।
जगरानी रोक न पाती थीं निज नयनों में उमड़ा निर्झर ।।३५।।

देखा कि एक दिन कारिन्दा कृषकों को आकर पीट रहा।
निर्दय रस्से से बांध खींच उनको वह नीच घसीट रहा ।।३६।।

जूतों से रह-रह पीट रहा, अपशब्दों को कह बार-बार।
भूतल पर पटक-पटक करके करता जाता दारुण प्रहार ।।३७।।

जब द्रावक दृश्य न देख सकीं, यातना लोमहर्षक कठोर।
रोने लग गयीं शिवालय में जगरानी जाकर जोर-जोर ।।३८।।

पर दुःख कातरा देवी ने शिव की स्तुतियाँ कीं अनेक।
दृग्घट के द्वारा बड़ी देर तक किया वहाँ रुद्राभिषेक ।।३९।।

शिव-लिंग-भाग पर सिर धरकर भावोद्वेलित अतिशय अशांत।
देखतीं अश्रु भर शंकर को करुणाप्लावित कातर नितांत ।।४०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

दारित दुख के आरे द्वारा दृग में भरकर करुणा-धारा।
स्तुति करतीं यों रोकरके शिव की स्तोत्रों के द्वारा ।।४१।।

दो दण्ड दयानिधि दुष्टों को, द्रुत गति से इनका नाश करो।
इस नरपिशाच राक्षस-दल का सर्वेश्वर सत्यानाश करो ।।४२।।

बल वीर्यपूर्ण ऐसा सुत दो, जो सत्व-शील का धारक हो।
दासता-पाश का हारक हो, जो दीनों का उद्धारक हो ।।४३।।

हो रवि-समान तेजस्वी जो, घन-सम गर्जन करने वाला।
शार्दूल-सदृश बलशाली हो, गति गरुड़-तुल्य भरने वाला ।।४४।।

जो देश-हितार्थ समर्पित हो, हो शूर-वीर, वाग्मी महान।
कृपया दो ऐसा पुत्र-रत्न, भोले शंकर करुणानिधान ।।४५।।

जो कार्तिकेय सम प्रबल बली, जयशील पराक्रमशाली हो।
दानव-दल-दलन समर्थ परम सक्षम जो यथा कपाली हो ।।४६।।

दो ऐसा पुत्र महान, अन्यथा हरो आज ही व्यथित प्राण।
रुचिकर न अल्प भी वह जीवन जो भूमि-भार शव के समान ।।४७।।

उस जगरानी की पलकों में आँसू की माला ग्रथित देख।
करुणा की तुंग तरंग उठी शिव में अबला को व्यथित देख ।।४८।।

"कल्याणी निर्भय हो जाओ, निश्चिन्त भवन को गमन करो।
वर पुत्र-रत्न होगा, समस्त आशा पूरेगी धैर्य धरो ।।४९।।

हे देवि ! दुष्ट-दल का विनाश, अब दूर नहीं, मत भीति भरो।
होगी निमित्त यह कोख तुम्हारी, इस पर पूर्ण प्रतीति करो ।।५०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चिर इच्छित प्रिय वाणी को सुन, जगरानी मुदित अपार हुई।
आश्वासित हो गृह-गमन किया, आनन्दित बारंबार हुई ॥५१॥

सर्वस्व मिल गया हो जैसे वह महाशया सुख-मग्न हुई।
माना सुधन्य अपना जीवन, व्रत-पूजन में संलग्न हुई ॥५२॥

दूसरे दिवस की बात, निशा का अन्तिम प्रहर आ गया था।
सुस्वप्न हुआ जगरानी को शुभ ब्रह्म-मुहूर्त्त छा गया था ॥५३॥

देखा कि शिवालय वही, वहीं वरमुद्रा में सुस्थित शंकर।
मुस्कान अधर पर खेल रही, विकसित उनका मुख-कमल सुघर ॥५४॥

है वहीं शिवालय में वह भी, दृग-घट में आँसू-नीर धार।
कर रही प्रार्थना लोक-त्रास के नाश हेतु वह इसप्रकार ॥५५॥

"हे महादेव हे महाकाल, हे नीलकण्ठ, त्र्यम्बक महेश।
हे रुद्र, कपर्दी, सर्वेश्वर, हे शम्भु, कपाली, व्योमकेश ॥५६॥

हे वामदेव, हे विरुपाक्ष, क्रतुध्वंसी, कैलासी, गिरीश।
त्रिपुरान्तक हे सर्वज्ञ भर्ग, वृषभध्वज, जगदीश्वर अनीश ॥५७॥

हे अभयंकर, हे प्रलयंकर, हे आशुतोष, हे अखिलेश्वर।
रक्षा कर लो हे शूलपाणि, हे अन्धकान्तक शिवशंकर ॥५८॥

देखो भगवन् ! आंगल-शासन दावागिन-सदृश दाहक विशेष।
हे हर ! हर लो अविलम्ब देव ! इन संतप्तों के सकल क्लेश ॥५९॥

कल्पान्त-काल में तुम्हीं नाथ, शूलाग्र-भाग पर धरा धार।
ताण्डव अति उग्र दुसह करते हो, रौद्र-रूप अपना पसार ॥६०॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आश्चर्य तुम्हारे ही समक्ष दीनों को दुष्ट सताते हैं।
सन्त्रस्त उन्हें करते रहते, कोड़ें कठोर बरसाते हैं ।।६०।।

हे शूली ! शूल सँभालो अब दुष्टों के दल डालो विदार।
संहार करो, भू-भार हरो, हे दयानिधे ! शंकर उदार ।।६१।।"

यों रोती, अश्रु-सलिल द्वारा शिवशंकर का तर्पण करती।
दासता-हरण-कर्ता सुत की संप्राप्ति हेतु वन्दन करती ।।६२।।

लखकर करुणाप्लावित शंकर जगरानी के सम्मुख जाकर।
इच्छित वरदान दिया उसको, बोले 'तथास्तु', कुछ मुस्काकर ।।६३।।

हे देवि ! तुम्हारे गर्भ-मध्य मेरा ही अंश प्रकट होगा।
वह काटेगा दासता-पाश, स्वाधीन देश चटपट होगा ।।६४।।

मुस्कान मन्द से युक्त शम्भु इस भाँति प्रसन्न महान हुए।
वरदान मनोवांछित देकर क्षण भर में अन्तर्धान हुए ।।६५।।

स्वप्नोपरान्त निद्रा टूटी उर में आनन्द अपार हुआ।
विश्वास-प्रसार हुआ व्यापक, दृढ़ आशा का संचार हुआ ।।६६।।

उठकर तुरन्त पति से समस्त वृत्तांत स्वप्न का बतलाया।
सुनते ही सीताराम मुदित, आनन्द प्रचुर उर में छाया ।।६७।।

प्रमुदित सुन सीताराम हुए निज फलित मनोरथ जान लिया।
उन चन्द्रमौलि को विनत मौलि से बारंबार प्रणाम किया ।।६८।।

नौ मास व्यतीत हुए आया शुभ दिवस लग्न शुभ सुखदायी।
सुन्दर मुहूर्त्त शुभ प्रसव-काल की वेला दिव्य सुखद आयी ।।६९।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
जगरानी ने तब पुत्र-रत्न को जन्म दिया जो गुण-निधान।
जो था तेजस्वी महाबाहु, स्वर-घोष दिव्य दुंदुभि-समान ।।७१।।

जगरानी के द्वारा प्रसूत वह पुत्र-रत्न लगता वैसे।
प्राची-रमणी द्वारा प्रसूत तेजस्वी बालसूर्य जैसे ।।७२।।

आह्लादक सुत-मुख-चंद्र देख थे सीताराम मुदित वैसे।
लख पर्व-शर्वरी-शर्वरीश को, सिन्धु उमड़ पड़ता जैसे ।।७३।।

उन वरद चन्द्रशेखर-करुणा से भावित दम्पति पूर्णकाम।
रख दिए मुदित उस जातक का शुभनाम चन्द्रशेखर ललाम ।।७४।।

भूखा भोजन, प्यासा पानी पाकर प्रमुदित होता जैसे।
उस पुत्र-रत्न को पाकरके दम्पतिवर थे प्रमुदित वैसे ।।७५।।

यथा राका में लख राकेश महासागर में आता ज्वार।
तथा मुखचन्द्र पुत्र का देख हुआ दम्पति में हर्ष अपार ।।७६।।

यथा मधुऋतु का आगम जान फूल उठता है रम्य रसाल।
सौम्य मुख जातक का अवलोक प्रफुल्लित त्यों परिवार विशाल ।।७७।।

संस्कारों से पुष्ट विलोक बढ़ी माँ की आशा सविशेष।
पालने में शोभित इस भाँति यथा विमलाम्बु-मध्य राकेश ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बालखण्ड

वृष्टि का वारिद, फल का फूल
करा देते जैसे अनुमान।
किशोरावस्था उसी प्रकार
कराती भावी का संज्ञान।।
३/९

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जगत्-हित में पाला प्रिय पुत्र
जननि ने दे दुग्धामृत-दान।
लोक ने देखा शेखर सौम्य
बढ़ रहा है शशि-कला समान ।।१।।

चूमती माता सुत-मुख सौम्य
देखकर होती हर्ष-विभोर।
कण्ठ में छा जाती बन गीत
हृदय की उठती हर्ष-हिलोर ।।२।।

नित्य ही करती शिव-अभिषेक
पूजती गौरी और गणेश।
याचना करती थी आरोग्य
बढ़े विक्रम सुत में सविशेष ।।३।।

मिल गयी मानो सकल समृद्धि
वृद्धि-अवलोक पुत्र के अंग।
नमन करती करके सुस्मरण
पूर्व का करुणा-पूर्ण प्रसंग ।।४।।

रही बढ़ती बालक की देह
रहा बढ़ता बल-वीर्य अपार।
ओज-परिपूरित पुष्ट शरीर
बना बल-विक्रम का आगार ।।५।।

सिंह का सत्त्व, पराक्रम-तत्त्व
देख दृढ़ता-परत्व-विस्तार।
मुदित थे दम्पति ज्यों पाथोधि
मुदित पूनम का चन्द्र निहार ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देह की कोश-वृद्धि के साथ
बढ़ा भावों का कोश विशाल।
यथा जल के विकास के साथ
कमल की बढ़ती जाती नाल ।।७।।

झाँकता गौरव-पूर्ण भविष्य
तोतली बोली में तत्काल।
शिवार्चन हुआ सफल यह सत्य
समझ कर माता परम निहाल ।।८।।

वृष्टि का वारिद, फल का फूल
करा देते जैसे अनुमान।
किशोरावस्था उसीप्रकार
कराती भावी का संज्ञान ।।९।।

चन्द्रशेखर के सकल प्रयोग
शौर्य, साहस, विक्रम-विस्तार।
देखकर कहते प्रायः लोग
शिवाजी का है यह अवतार ।।१०।।

भाव के कोष-विवर्धन हेतु
वीर माता वह परम पुनीत।
सुनाती वीर-चरित्र उदार
सुनाती गौरव-पूर्ण अतीत ।।११।।

श्रवण कर हो जाता रोमाञ्च
वदन पर वीर-भाव-विस्तार।
देखकर कहने लगते लोग
शिवाजी का है यह अवतार ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

वीर राणा का चरित उदार
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
परम रुचि से सुनता दे ध्यान।
प्रार्थना माँ से करता नित्य
कराये वह चरितामृत पान ।।१३।।

परशुधर राम और बलराम
भीम, अर्जुन, हनुमत बलधाम।
उल्लिखित चरितों के रुचिपूर्ण
किया करता अभिनय अभिराम ।।१४।।

खलों का सुनकर पतन, तथैव
सज्जनों का सुनकर उत्थान।
चन्द्रशेखर के उर में हर्ष–
सञ्चरण होता एक समान ।।१५।।

देखकर खल परपीड़क–वृन्द
वीर बालक उठता फुंकार।
नीच नर चाटुकार को देख
वीर बन जाता था अंगार ।।१६।।

कर्म से कुत्सित, जालिम, नीच
चोर कपटी जो क्रूर लबार।
देशद्रोही जो दुर्जन दुष्ट
उन्हें लगता यम का अवतार ।।१७।।

खेल में भी असत्य की पुष्टि
न करता था वह बालक वीर।
दुष्ट को दण्ड, दीन को न्याय
दिया नृप–आसन से गंभीर ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

पीड़ितों के प्रति करुणाभाव
पीड़कों के प्रति क्रोध अपार।
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
बालपन से शेखर के साथ
सहोदर-सम करते सञ्चार ।।१९।।

बदरका मे प्रवेश कर दुष्ट
फिरंगी व्याभिचारी खल नीच।
दुराचारी करते व्यभिचार
कन्यकाओं को वर्वश खींच ।।२०।।

अधम भूपों के क्रूर कुभृत्य
ग्राम में करते अनय-प्रसार।
चाबुकों से कृषकों को पीट
त्रस्त करते थे बारंबार ।।२१।।

देखकर तर्जन के दुष्कृत्य
गरजता बालक बारंबार।
उपेक्षा करते, हँस उन्मत्त
समझ कर बाल-सुलभ आचार ।।२२।।

स्वयं को विधि से बढ़कर मान
क्रूर मतिमन्द अधम अज्ञान।
सताते दीनों को मदमत्त
गर्व से ग्रस्त पिशाच-समान ।।२३।।

भस्म करता सबलों के सौख्य
दीन का दाहक आह-प्रसार।
धौकनी का सूखा जो चर्म
कठिन लोहे को करता क्षार ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किन्तु, जो दुराचार में मगन
जहाँ सत्ता का भूत सवार।
किया करते कुकर्म दिन-रात
किया करते कटु क्रूराचार ।।२५।।

काल का परम प्रबल बल भूल
विचरते रहते गर्वारूढ़।
किया करते सुख की अनुभूति
सता करके दीनों को मूढ़ ।।२६।।

काल-मधुकर के पद गतिमान
न करते हैं रंचक विश्राम।
प्राणियों के ले प्राण-पराग
उड़ा करते अविकल अविराम ।।२७।।

काल दुधर्ष भुजंग-समान
न उसमें करुणा का अतिरेक।
हुए दंशित विशाल साम्राज्य
दन्त-घातित युग-कल्प अनेक ।।२८।।

अस्तु, वे जो विवेक-संयुक्त
काल को करते विनत प्रणाम।
न रखते गर्व-पंक में पैर
न करते हैं अनीति के काम ।।२९।।

काल-खग उड़ता रहा अबाध
दिवस-रजनी के पंख-पसार।
वृष्टि कर अनावृष्टि की अग्नि
जलाने लगा सकल संसार ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain, Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दहकने लगी धरा सविशेष
गया पड़ सूखा, लोक विपन्न।
न भूपर गिरी एक भी बूँद
न मिल पाया मुट्ठी भर अन्न ।।३१।।

तड़प कर भूख-प्यास से लोग
विकल जब लगे त्यागने प्राण।
भूप करने वसूल राजस्व
भेजने लगे दूत अज्ञान ।।३२।।

बदरका में कारिन्दा एक
वसूली करने हेतु लगान।
लगा कोड़े बरसाने क्रूर
न सोचा भूखे दीन किसान ।।३३।।

गया बुलवाया एक किसान
गलित थे अंग पलित थे केश।
दीन दुर्बल दृढ़ पाश-निबद्ध
शेष थी ठठरी, वृद्ध विशेष ।।३४।।

देखते ही गरजा तत्काल
क्रूर कारिन्दा कर दृग लाल।
करो भू-कर भुगतान तुरन्त
अन्यथा खिँचवा लूँगा खाल ।।३५।।

इसे सुन नयनों में भर नीर
प्रकम्पित पीड़ित दुखित महान।
जोड़कर हाथ विनय के साथ
बिलख कर बोला दीन किसान ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अवर्षण भस्मासुर ने भस्म
कर दिया है उत्पाद्य समस्त।
न कुछ भी दे सकता तत्काल
अकिञ्चन दीन बुभुक्षा-ग्रस्त ।।३७।।

पाँच दिन बीत चले हैं देव
न मुट्ठी भर भी पाया अन्न।
सो गया भूखा बालक-वृन्द
क्षुधा-पीड़ित-परिवार विपन्न ।।३८।।

निवेदन रोकर किया, परन्तु
दया का हुआ न रञ्च प्रसार।
वचन सुन नयन हो गये लाल
दुष्ट बोला उसको फटकार ।।३९।।

धूर्त कर बन्द सकल छल-छन्द
बन्द कर अश्रु बहाना नीच।
भूमि-कर का कर दे भुगतान
नहीं तो चमड़ी लूँगा खींच ।।४०।।

बहानेबाज मूर्ख खल तुच्छ
धृष्ट बकवासी अधम गवाँर।
बकाया दे दे नीच तुरन्त
अन्यथा लूँगा खाल उतार ।।४१।।

यही कहता चल पड़ा तुरन्त
हाथ में कोड़ा कठिन सुधार।
लगा निर्बल पर करने नीच
सटासट चाबुक की बौछार ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Devavani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

"मुझे मत मारो हे सरकार
करो कुछ दया-दृष्टि-विस्तार।
करूँगा निश्चय कल भुगतान
मिल सका मुझको अगर उधार ।।४३।।"

"सुनूँगा आगे एक न शब्द
धूर्त, खल, धृष्ट बहानेबाज।
कठिन अक्षम्य तुम्हारा दोष
मार डालूँगा तुझको आज ।।४४।।"

यही कहता कारिन्दा क्रूर
लगा करने घनघोर प्रहार।
प्रताड़ित होता ज्यों लघु मेघ
तड़ित्-कर द्वारा बारंबार ।।४५।।

अश्रु से वदन हुआ था सिक्त
दृगों से उमड़ पड़ी थी बाढ़।
बिलखते त्रस्त कृषक से दूत
रुष्ट हो बोला आँखे काढ़ ।।४६।।

नीच हों जो तुझ-से निर्लज्ज
श्वान-सम हों करते व्यवहार।
उचित जूतों से देना दण्ड
न कोड़ों से है उचित प्रहार ।।४७।।

यही कहता जूतों से क्रूर
पटक कर करने लगा प्रहार।
सूज आयी किसान की देह
लात-घूसों की खाकर मार ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अश्रु की धार बहाकर दीन
बिलखने लगा जोर से चीख।
पकड़कर कारिन्दे के पैर
माँगने लगा दया की भीख ।।४९।।

दीन का कम्पन करुण विलाप
न पिघला सका कठिन पाषाण।
हो गया और अधिक शठ रुष्ट
हो उठा अधिक उग्र अज्ञान ।।५०।।

हो गया आतंकित परिवेश
मार खाता रह गया किसान।
न कोई बन पाया उस काल
यातना-सिन्धु मध्य जलयान ।।५१।।

यातना-सुरसा का मुख घोर
फैलता जाता नरक समान।
चलपड़ा देने उसको मात
एक बालक बनकर हनुमान ।।५२।।

उस समय वह बालक वरवीर
हाथ में धारण कर पाषाण।
राहु-सम दूत-हस्त से मुक्त
कराने पहुँच गया बलवान ।।५३।।

उठे थे हाथ नयन थे लाल
समाया था गति में पवमान।
सीस पर कारिन्दे के दौड़
वेग से दे मारा पाषाण ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भूमि पर गिरा मूर्च्छित दूत
फूट था उसका गया कपाल।
हुई लथपथ शोणित से देह
गये गृह मुक्तकृषक तत्काल ।।५५।।

मूर्च्छा टूटी तब वह दूत
गया गालियाँ सुनाता नीच।
प्रकट शेखर ने किये विचार
उपस्थित ग्रामीणों के बीच ।।५६।।

सुनें सब कृषक पूज्य गुणवान
भूमि-स्वामी वे धीर किसान।
धरें जो हल, श्रम-शोभित-अंग
फसल को दें जो जीवन-दान ।।५७।।

जननि पृथ्वी, जो पृथ्वी-पुत्र
जनक जिनका है व्योम विशाल।
सखा सद्वृक्ष, वृषभ वर बन्धु
भूमि के सेवक ही भूपाल ।।५८।।

सहन कर भूख-प्यास की मार
लोक को देते सदा सदन्न।
ऋणी जिनका समस्त संसार
भूमि-स्वामी वे कृषक विपन्न ।।५९।।

गगन बरसाता जब अंगार
चलाते हल तब भी सुख मान।
नग्न सह लेते सारा शीत
भूमि-स्वामी वे तपी किसान ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तुम्हीं करते उत्पादन-यज्ञ
सतत श्रमबिन्दु हव्य ज्यों डाल।
अन्नदाता हो तुम्हीं किसान
तुम्हारी भूमि, तुम्हीं भूपाल ।।६१।।

चराचर का जीवन-आधार
तुम्हारी पालित सस्य विशाल।
न होना यहाँ चाहिए और
छोड़ कर तुम्हें अन्य भूपाल ।।६२।।

छत्र-सिंहासन, गज-रथ-वाजि
सभी सुख-भोग-राग-विस्तार।
तुम्हारे ही प्रसाद प्रासाद
न भूलो तथ्य विदित संसार ।।६३।।

भाल पर झलकें श्रम-जल-बिन्दु
स्कन्ध पर है हल-दण्ड विशाल।
मुष्टि में अन्न-रत्न धन-खान
कृषक ही हैं सच्चे भूपाल ।।६४।।

प्रथमतः भू के पोषक-तत्त्व
पान का उसको ही अधिकार।
बनाकर स्वेद बहाया रक्त
बनाया मिट्टी को श्रृंगार ।।६५।।

वृषभ वृषकेतु समान सुपूज्य
अतिथि होता ज्यों देव प्रतीत।
खींचते जो देशोन्नति यान
भूमि-स्वामी वे कृषक पुनीत ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

न धरती नृप की दासी कीत
भूमि है भूमा का वरदान।
धरा को माँ-सा देते मान
मान्य भूपति वे धीर किसान ।।६७।।

सुतों को है अधिकार समान
जननि-का दुग्ध कर सकें पान।
धरा के पोषक रस-उपभोग-
हेतु नर अधिकृत एक समान ।।६८।।

भोग में लिप्त पाप में मग्न
निकम्मे तुन्दिल जो अनुदार।
कहाँ के कैसे वे भूपाल
न मिट्टी है जिनका शृंगार ।।६९।।

देख अंग्रेजों को जो तुच्छ
हिलाते पुच्छ झुकाते भाल।
आचरण जिनका श्वान-समान
न कहना उचित उन्हें भूपाल ।।७०।।

काट खाते स्वपक्ष को दौड़
देख गर्जन करते विकराल।
आचरण जिनके श्वान समान
न कहना उचित उन्हें भूपाल ।।७१।।

कण्ठ तक पाप-पंक में मग्न
दुराचारी निर्दय विकराल।
लुटेरों का जो देते साथ
कहें कैसे उनको भूपाल ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विलासी महलों मध्य निवास
दीन के पीते शोणित लाल।
भूमि-सेवक जिनसे सन्त्रस्त
कहें कैसे उनको भूपाल ।।७३।।

बन्धु, भूलो मत यह ध्रुव सत्य
सदा वसुधा वीरों की भोग्य।
न धरणी दुर्बल की हो सकी
नपुंसक नहीं भोग-सुख योग्य ।।७४।।

काट दुर्बल बकरे का सीस
चढ़ाते बलि में सब तत्काल।
सिंहनी-सुत से सभी सभीत
जगत् की बेढंगी है चाल ।।७५।।

केंचुए कटिये में गुंथ गये
किया अहियों ने पय का पान।
क्रूर ग्रह पूजा पाते नित्य
सौम्य ग्रह को न दान-सम्मान ।।७६।।

क्षीण तन फिर भी विषधर-वृन्द
पूज्य विष के कारण सविशेष।
कृषक-हितकर केंचुवे परन्तु
गुथे पाते कटिये में क्लेश ।।७७।।

विनय से किसे मिल सका मान
कहो मिल सका किसे अधिकार।
राम को तब तक मिला न मार्ग
सके जब तक न धनुष कर धार ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुटिल से बनो कुटिल, यह नीति
शठों से शठता का व्यवहार।
न उनसे कभी सरलता ठीक
लोक में मृदु पाते दुत्कार ।।७९।।

पराभव पाते ऐसे लोग
न जिनसे कभी किसी को भीति।
न पाते श्रेय कभी भी क्लीव
न पाते निर्बल जग में प्रीति ।।८०।।

शान्त को मिलता कभी न सौख्य
मधुर पातें हैं जग में कष्ट।
मधुर गन्ने पर डालो दृष्टि
पिले कोल्हू में होते नष्ट ।।८१।।

न जिनमें फौलादी संकल्प
क्लीव दुर्बल जो शक्ति-विहीन।
नहीं जो दाहक अनल-समान
समझ लो जीवित शव सम दीन ।।८२।।

शान्त पावक दहकता शून्य
न पाता हव्य जनित अधिकार।
न वे पा सकते जग में त्राण
न ले सकते हैं जो प्रतिकार ।।८३।।

बैठ रहता जो सह अन्याय
न कर पाता कुछ भी प्रतिकार।
श्रेष्ठ उससे पादाहत धूल
सीस पर होती दौड़ सवार ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

न होता पूज्य उपद्रव-हीन
भले ही हो बल का आगार।
न होता पूज्य तथा गजराज
यथा विषधर धर कर विषभार ।।८५।।

झुकें अन्यासी से जो लोग
गुणों का उनके करें प्रचार।
प्रथम दोषी वे शान्त सहिष्णु
विनय-मिस करें अनय-विस्तार ।।८६।।

तुम्हारी सहनशीलता दैन्य
दीन बन रोना भरना आह।
दासता सकल पाप की मूल
बो रही है अनर्थ दुख-दाह ।।८७।।

प्रलय के मेघ बनो गंभीर
डुबा दो दुष्टों का सब साज।
न ये परपीड़क शोषक क्षम्य
इन्हें यमलोक भेज दो आज ।।८८।।

करो अब वज्र-घोष गम्भीर
सपूतो भारत माँ के आज।
खदेड़ो, कर दो इन्हें विदीर्ण
उठो ज्यों उठता है मृगराज ।।८९।।

उठाओ अस्त्र तजो भीरुत्व
चल पड़ो क्रान्ति मार्ग पर वीर।
दुष्ट दल-सिन्धु मध्य बड़वाग्नि
बनो सागर की छाती चीर ।।९०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अरण्यखण्ड

गिरिशृङ्गों ने उसे पढ़ाया
जिओ न सिर नीचाकर।
गिरे वज्र पर रहो अकम्पित
छूलो बढ़कर अम्बर॥ ४/८४॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देख झुकाव वारुणी के प्रति
दिनकर का भरपूर।
कहा लोक ने अब दिनेश का
है स्खलन न दूर ।।१।।

सेवन से वारुणी
सूर्य का तेज हो चला क्षीण।
गिरा प्रतीची में प्रमत्त-ज्यों
लुण्ठित तेज-विहीन ।।२।।

चन्द्र मुदित मुस्काया लखकर
दिनकर का अपकर्ष।
कहो पतन से प्रतिपक्षी के
किसे न होता हर्ष ।।३।।

पादप-सौध-शृंग पर शोभित
सायंकालिक धूप।
सन्ध्या के चरणों से टपकी
यावक यथा अनूप ।।४।।

सन्ध्यागम को जान प्रकृति ने
स्वागत में अनुकूल।
कुम्भकार के कल कटाह की
बिखरा दी ज्यों धूल ।।५।।

नभ-कटाह में पके अरुण-घट
को पश्चिम में खींच।
सन्ध्या-वधू डुबाती जाती
लवण-सिन्धु के बीच ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

किया प्रहार कठिन यह किसने
फूटा रक्त-प्रवाह।
सत्तैसों के सीत्कार-मिस
गगन भर रहा आह ।।७।।

नील सलिल में सर-सरिता के
सुरा दी गयी घोल।
पीकर हुआ प्रमत्त निशाकर
रहा गगन में डोल ।।८।।

रागवती सन्ध्या को लखकर
शशि करके शृंगार।
हँसा विलासी विमलाम्बर में
रूप अनूप निहार ।।९।।

पूर्ण प्रसन्न वारि में बिम्बित
नीलाम्बर भरपूर।
दर्प दर्पणों का निर्मल जल
करता चकनाचूर ।।१०।।

संध्या बीती लगा खेलने
तारों से रजनीश।
हुए निमग्न विलास-लास में
महि में इधर महीश ।।११।।

तट पर निर्मित राजभवन था
शुभ्र ज्योत्स्ना-स्नात।
क्षीरसिन्धु में मज्जित मानो
रजत-शैल अवदात ।।१२।।

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चन्द्रकान्त मणि-रचित जालियाँ
स्वच्छ सुघर सोपान।
बनी स्फटिक की फर्शें लखकर
इन्द्र-भवन-छवि म्लान ।।१३।।

शुद्ध स्वर्ण-निर्मित द्वारों पर
नाच रहे हैं मोर।
मत्त मनोज्ञ मधुर स्वर द्वारा
बन जाते चित चोर ।।१४।।

पारावत, मयूर कल कोकिल
शुक-सारिका, मराल।
रजत-स्वर्ण-निर्मित गज-घोटक-
की पंक्तियाँ विशाल ।।१५।।

उग्र कराल कठिन विकटानन
बँधे बहुत से श्वान।
उस अकाल में भी खाते हैं
मांस, दुग्ध पकवान ।।१६।।

ये प्रतिहार अनेक द्वार पर
कर में ले हथियार।
रक्षण-रत गर्जन करते थे
वे सब बारंबार ।।१७।।

लूट ली गयी जब स्वतन्त्रता
गौरव-रत्न अशेष।
रक्षक रक्षा करते किसकी
और अधिक क्या शेष? ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अर्ध-भरित घट रव रत ज्यों ही
वारिद वारि-विहीन।
दम्भी अधिक प्रदर्शन करते
जो कि शक्ति से क्षीण ।।१९।।

गिरवी स्वाभिमान रक्षित है
पुञ्जित भोग-विलास।
रक्षा करते हैं प्रतिहारी
पतित नृपों के हास ।।२०।।

तर्पणार्थ गौरांग देव के
दीन-अश्रु के कोष।
प्रहरी द्वारा रक्षित दम्भी
नृप के दुर्गुण-दोष ।।२१।।

भूपति का प्रासाद भव्य है
चकाचौंध-विस्तार।
सुन्दर और असुन्दर दोनों
दीन-अश्रु-आगार ।।२२।।

उस प्रासाद मध्य शाला थी
सुन्दर सज्जित, अस्तु।
दूर देश से आयातित थीं
बहु विलास की वस्तु ।।२३।।

राजित रजत-विनिर्मित घट में
आसव-कोटि अनेक।
स्वर्ण-रचित मधु-पान पात्र सब
सज्जित थे प्रत्येक ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मत्त महिप को घेरे बैठे
चाटुकार अज्ञान।
ध्यान न करते थे अकाल का
करते थे मधु-पान ।।२५।।

विविध विदूषक वृन्द उपस्थित
यन्त्र-विनोदित कक्ष।
ये परिहास प्रवीण भाँड़ जो
हास्य-कला में दक्ष ।।२६।।

नव यौवना विभूषित बाला
श्याम शाटिका धार।
कटि-चालन कर नर्तन करती
मृदु मुस्कान पसार ।।२७।।

देह छरहरी, वर्ण गौर था
भरती जब आलाप।
घटा-मध्य चपला-सी शोभा
पाती अपने आप ।।२८।।

मत्त सभासद मध्य उपस्थित
नृप प्रमत्त अज्ञान।
लोचन-बाण-विद्ध करता ध्वनि
चेष्टा छाग समान ।।२९।।

डमरु-सी छविमान क्षीण कटि
डुला, बिहँस वर बाल।
नयन चलाकर चित्त चुराकर
करती नृत्य रसाल ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

कक्ष मध्य शोभा पाती थी
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
दीप- शिखा-सी बाल।
रूप-ज्वाल में जले जा रहे
शलभ-सदृश भूपाल ।।३१।।

चलित चित्त नृप सीस डुलाकर
और उठाकर हाथ।
बरसाता रूपये पत्र-ज्यों
वाह-वाह के साथ ।।३२।।

सारा सुरा-मत्त दल उठकर
कर से देता ताल।
सीस हिलाकर कटि लचकाकर
करता नृत्य निहाल ।।३३।।

नर्तन मृदु घूर्णावर्तन त्यों
ललित मन्द मुस्कान।
मदिर नयन मादक स्वर ने मिल
हरण कर लिये प्राण ।।३४।।

कुछ नाचते भड़ैंती करते
भरे बेसुरी तान।
कुछ गिरते गिरकर उठते कुछ
कुछ करते मधुपान ।।३५।।

कर में हाला, दृग में बाला
कर्णों में मृदु ताल।
मणिप्रवालमाला कण्ठों में
थे प्रमत्त भूपाल ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चबा रहा था पान बैठकर
महामत्त महिपाल।
रक्त दन्त लगता पिशाच ज्यों
लहू पिये हो लाल ।।३७।।

देख नृत्य करती बाला को
सुध-बुध खो अज्ञान।
कामुक मटक-मटक कर कहता
सुन लो मेरी जान ।।३८।।

"गुरु नितम्ब को देख तुम्हारे
लज्जित है मैनाक।
छिपा सिन्धु में प्रकट न होता
ऐसा बना वराक ।।३९।।"

सुरा-प्रमत्त भूप यों कहता
खोकर अपने होश।
"तेरे सुस्मित के समक्ष
कुछ नहीं राज्य धन कोश ।।४०।।

हे सुश्रोणि सुनो, अर्पित सब
जो कुछ मेरे पास।
राज्य तुम्हारा ही, रानी तुम
हम सब अनुचर दास ।।४१।।"

लटकी लम्बी श्यामल वेणी
कटितट पर लहराती।
नागिन ज्यों डसती, फिर भी
उन विलासियों को भाती ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दन्त-प्रभा-पूरित सुस्मित से
अधर-बिम्ब नहलाती।
मोहित कर कटाक्ष से प्रमदा
नृत्य दिखाती जाती ।।४३।।

उसी समय रोता आ पहुँचा
दुष्ट दूत अज्ञान।
आँख पोंछकर बोला, कृपया
सुनलें भूप सुजान ।।४४।।

स्वामी महामण्डलेश्वर है
देखें मेरी हाल।
सीतारामात्मज ने की है
कैसी कठिन कुचाल ।।४५।।

मुझपर भूपर गिरने वाला
किया कठोर प्रहार।
किया आपके तो विरोध में
खुलकर घोर प्रचार ।।४६।।

पूरे पुर में जलता धू-धू कर
विरोध का ज्वाल।
विद्रोही दमनीय, शम्य
विद्रोह-अग्नि तत्काल ।।४७।।

प्रथम दण्ड्य वह बाल
उपद्रव का जो मूलाधार।
सिञ्चन-योग्य न विष-तरु
उस पर चलना उचित कुठार ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

है भुजंग ज्यों वह खल बालक
पद-मर्दितकर डालें।
तोड़ निकालें विष-दन्तों को
पय देकर मत पालें ।।४९।।

किया घोर अपराध दुष्ट ने
बीज विषम विष बोया।
खुलेआम पिट गया हाय मैं
कह कारिन्दा रोया ।।५०।।

मुखारुण्य मुख का महीप के
बढ़ा क्रोध से और।
ओंठ दाँत से काट, अरुण-दृग
बोल उठा इस तौर ।।५१।।

मत मुख देख बुला सेनप को
कर न रञ्च भी देर।
जाकर गाँव जलाकर आये
करे राख की ढेर ।।५२।।

हिंसा-पूरित दूत वेग से
पहुँचा सेनप-पास।
देखा वह भी मत्त पड़ा बँध
दासी के भुज-पाश ।।५३।।

युग्म परस्पर चुम्बन-रत
पट शिथिल, बद्ध भुज-पाश।
भोगलिप्त भोगासन द्वारा
वर्धित काम-पिपास ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वह उन्मुक्त विलास अशोभन
हुआ न विषम प्रतीत।
उसमें था गौरांग देव का
ग्रथित प्रसाद पुनीत ।।५५।।

दोनों थे अति व्यग्र
उभय में भरित भाव उद्दाम।
एक हृदय में काम गुञ्जरित
और अपर में ग्राम ।।५६।।

अन्यमनस्क चला सेनापति
भूप-भवन की ओर।
विवश वितृष्ण चरण पड़ते थे
बँध आज्ञा की डोर ।।५७।।

राजभवन के निकट पहुँच कर
देखा महिप मलीन।
चिन्तातुर अमर्ष-परिपूरित
व्यग्र प्रतीक्षा-लीन ।।५८।।

देश-क्षितिज पर उमड़ रहा जो
बन ज्यों घन बलवान।
हेतु वही आन्दोलन होगा
किया सहज अनुमान ।।५९।।

कर प्रणाम उस चाटुकार ने
किये उभय दृग लाल।
कृत्रिम क्रोध-युक्त मुख-मण्डल
कर बोला तत्काल ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वामिन् महामण्डलेश्वर!
बल विद्या, बुद्धि विशाल।
किसने किया जघन्य, आपका
चित चिन्ता में डाल ।।६१।।

चाटुकार ने कहा कि मत हों
प्रभु विषाद में लीन।
जब तक यह सेवक है
सेनापति पद पर आसीन ।।६२।।

किसका सिर काटना?
लगानी आग कहाँ तत्काल?
किसका भवन जलाना
किसकी खिंचवानी है खाल? ।।६३।।

किसके हाथ काटने, किसकी
जिह्वा काट गिराऊँ ?
किसको भून गोलियों द्वारा
यम के लोक पठाऊँ ।।६४।।

आप हितैषी उस शासन के
जहाँ न रवि का अस्त।
उग्र प्रभाव प्रसिद्ध आपका
प्रसरित सुयश प्रशस्त ।।६५।।

आप वही मानता जिसे है
वायसराय विशेष।
झुकते सभी, समादर देता
पूर्ण आंग्ल-परिवेश ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
कौन मूर्ख वह वानर
अदरक की न जिसे पहचान।
अहि-फण पर कर चोट
चाहता कुशल कौन अज्ञान? ।। ६७।।

हेतु बतायें दूर करूँगा
चिन्ता का क्या काम।
जन थर-थर कँपते सुनकर
मुझ क्रूरसिंह का नाम ।।६८।।

देखा नृप ने क्रूरसिंह का
दीर्घानन विकराल।
कज्जल वर्ण कर्ण को
छूते थे मूछों के बाल ।।६९।।

दीन-दल दलन दक्ष चाटु-पटु
कटु दुरक्ष दुखरूप।
कुटिल क्रूर उस क्रूरसिंह से
बोला हर्षित भूप ।।७०।।

वीरों में हो वीर धन्य तुम
ग्राम बदरका जाओ।
दण्डित करो दुष्ट-दल
पूरे पुर में आग लगाओ ।।७१।।

नाम चन्द्रशेखर रहता है,
एक वहाँ पर बाल।
अहि-सम उसके प्राण हरणकर
खींचो उसकी खाल ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चिन्ता करें न मुझको
दाहक दावानल लें जान।
ग्राम जलाकर क्षार करूँगा
दूँगा बना मसान ।।७३।।

खल बनकर भूचाल चल पड़ा
निर्बल कमल-तुषार।
पहुँचा ग्राम बदरका, उसको
किया जलाकर क्षार ।।७४।।

ग्राम जलाकर भस्म कर दिया
बचा न एक मकान।
देख राख की ढेर भग चले
विह्वल दीन किसान ।।७५।।

दग्ध भवन से चल विदग्ध
बालक सुरसरि ढिग आकर।
शंकर-मौलि-माल गंगा से
बोला सीस झुकाकर ।।७६।।

भागीरथी सुतोया सुभगा
ब्रह्मद्रव विख्याता।
रुद्रप्रिये, दयार्द्र जननि बन
दो विशिष्ट बल माता ।।७७।।

गौरीश्वर की मौलिप्रतिष्ठा
गौरीगुरु-गुण-गीता।
खल-विनाश कर सकूँ शक्ति दो
शक्तिप्रदा पुनीता ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मध्यप्रदेश गया वह बालक
साथ पिता के पास।
ग्राम प्रसिद्ध भावरा में वह
करने लगा निवास ।।७९।।

सिद्ध तपोधन-सेवित सुन्दर
विन्ध्याटवीमहान।
खेला भील बालकों से
सीखा अमोघ सन्धान ।।८०।।

वे विद्यालय आंग्ल-सुचालित
बनते जिनमें दास।
किया स्वप्न में भी न बाल ने
अपना चरणन्यास ।।८१।।

वन विद्यालय बना जहाँ वह
दूर्वादल-आसन पर।
बैठा नील गगन के नीचे
पढ़ता पाठ निरन्तर ।।८२।।

वन-विद्यालय गूढ़ ज्ञान का
तत्त्व बताता जाता।
सद्गुण गौरव स्वतन्त्रता का
पाठ पढ़ाता जाता ।।८३।।

गिरिशृंगो ने उसे पढ़ाया
जिओ न सिर नीचाकर।
गिरे वज्र पर रहो अकम्पित
छूलो बढ़कर अम्बर ।। ८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देकर मीठे फल, शीतल–
छाया का कर विस्तार।
वृक्ष बताते सज्जन करते
धन से पर उपकार ।।८५।।

ज्वलित दृगों से, बल विक्रम से
भरकर तीव्र उछाल।
पौरुष पुञ्ज सिंह सिखलाता
साहस शौर्य विशाल ।।८६।।

झरने मुक्त हास सिखलाते
भले कष्ट हो घोर।
आगे बढ़ो धैर्य मत छोड़ो
तोड़ो शिला कठोर ।।८७।।

कण्टक–रुद्ध सुमन सिखलाते
होकर हर्ष–विभोर।
हास–विकास न तजो भले हों
कण्टक चारों ओर ।।८८।।

जल में लीन मीन सिखलाते
देश–प्रेम के भाव।
कुछ भी हो निज जन्मभूमि से
तजो न सहज लगाव ।।८९।।

मलय सुवासित वन्य पवन
चलकर यह पाठ पढ़ाता।
सत्संगति को पाकर मानव
कहो न क्या बन जाता? ।।९०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उदय-अस्त में ताम्रवर्ण रवि
देता रहता ज्ञान।
एक रूपता महापुरुष की
है सच्ची पहचान ।।९१।।

कुन्द और अरविन्द केतकी
पाटल कल कचनार।
प्रफुल्लता का पाठ पढ़ाते
वन में पुष्प उदार ।।९२।।

समतल भूमि, न पन्थ वक्र
पर टेढ़ा चलता व्याल।
त्याग सरलता टेढ़ा चलना
यही कुटिल की चाल ।।९३।।

सतत प्रवाहित सरिता तो भी
रहता सलिल अशोष।
दान-वृत्ति से रिक्त न होता
नर का वैभव-कोष ।।९४।।

सुगति-शून्य सूखता सरोवर
करता है उद्घोष।
क्षय होकर पंकिल बन जाता
सञ्चय का यह दोष ।।९५।।

सिर पर प्रबल निदाघ-दाघ को
सह कर विटप-कलाप।
कहते दुख सहकर भी
हर लो जन्मभूमि के ताप ।।९६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Devā Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुटिल कुवृक्ष सुरक्षित
सीधे पर चल गये कुठार।
पता चल गया सीधेपन से
हो जाता संहार ।।९७।।

दुर्बल तरु के खाद्य सबल तरु
खींच-खींच खा जाते।
न्याय-प्रदत्त भोग भी अपना
दुर्बल भोग न पाते ।।९८।।

बोते हैं अनर्थ दुर्बल जन
दुर्बलता अघ-खान।
दुर्बलता-उत्प्रेरित खल-गण
करते शोणित-पान ।।९९।।

रोक न पाते ऊँचे पर्वत
बढ़ता सरित्-प्रवाह।
मिटा न पाते विघ्न मनस्वी-
जन के दृढ़ उत्साह ।।१००।।

गज के कठिन कपाल फाड़कर
वनको कर आधीन।
सिंह स्वयं बनता मृगेन्द्र
होता अभिषेक कभी न ।।१०१।।

क्षीण चन्द्र को पर्व-काल में
देख पूर्ण द्युतिमान।
दिवस न जाते कभी एक-से
हुआ सहज अनुमान ।।१०२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुष्प-हीन तरु में सुपुष्प लख
सूखे सर में नीर।
होगा कष्ट विनष्ट सुनिश्चित
बनो न कभी अधीर ।।१०३।।

हरे- भरे तरु पर्वत पर हैं
फल-फूलों के साथ।
करते हैं उद्घोष असिञ्चित
हरि अनाथ के नाथ ।।१०४।।

भूखी भुजगी खा जाती है
अपने अण्डे आप।
सोचा, भूख करा देती है
बड़े भयंकर पाप ।।१०५।।

कौवे को कौवा पुकारता
लखकर के आहार।
किन्तु न भिक्षुक कर पाता है
इस प्रकार व्यवहार ।।१०६।।

दिव्य पयोधि-प्रसूत सुधाकर
शीतल सौम्य प्रभाव।
फिर भी निन्दा करें वियोगी
खल का यही स्वभाव ।।१०७।।

विटप-खण्ड लग कर कुठार में
तरु पर करते घात।
अपने ही, अरि से जुड़, अपनों
पर करते आघात ।।१०८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मनस्वियों की सहज प्रकृति को
बतलाते वन-फूल।
रहो शीर्ष पर अथवा झड़कर
कर लो धूल कबूल ।।१०९।।

जो फलता झड़ जाता
होता सदा उदय का अस्त।
जन्म-मरण ध्रुव जान शीघ्र ही
करो कृत्य विन्यस्त ।।११०।।

बढ़ो लक्ष्य के प्रति निर्भय बन
बनो कभी मत दीन।
प्रकृति-पाठशाला में पढ़ता
बालक परम प्रवीण ।।१११।।

उससे बल ले बढ़ो कि
जिसके रवि-शशि नयन विशाल।
जटा मेघ, रोमों में लटके
ब्रह्माण्डों के जाल ।।११२।।

पाषाणों को भेद बढ़े वृक्षों-
की भाँति बलिष्ठ।
बढ़ा विपिन में क्लिष्ट-
संतरण कर्णभूत वह शिष्ट ।।११३।।

वन-विद्यालय में अधीत
परिपक्व बुद्धि बलधाम।
शशिशेखर साहस सद्गुण का
हुआ दूसरा नाम ।।११४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

प्रेरणाखण्ड

स्वातन्त्र्य-सूर्य का उदय-काल
आ गया निकट लाली छाई।
उठ पड़ो वत्स द्रुत दीप्तनेत्र
बलिदानों की वेला आई ॥३१॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देखा जब तम ने कनककशिपु
ने व्यापक अपना रोष किया।
प्रहलाद्-तुल्य नभ ने रोकर
हरि-आगम का उद्घोष किया ।।१।।

प्राची में पिंग प्रकाश-रेख
धुँधले अम्बर में खिंच आयी।
ज्यों जिह्वा की अरुणिम आभा,
नरसिंह-जटा में जा छायी ।।२।।

शाखाओं को झकझोर पवन
शाखामृग-सदृश विचरता है।
वन-वल्लरियों को हिला-हिला
पुष्पों की वर्षा करता है ।।३।।

प्राच्यन्तरिक्ष में मेघ-खण्ड पर
राजित यों रवि-बिम्बबाल।
वाराह-तुण्ड पर आधृत हो
जैसे उद्धृत भूतल विशाल ।।४।।

तजकर सुमनान्वित शाखाएँ
षट्पद पद एक न जाते हैं।
जैसे उदार के द्वार कभी
याचक-गण छोड़ न पाते हैं ।।५।।

हिम-कण मुक्ता को धार पुष्प
पल्लव में छिप मुस्काता है।
बोझिल सुगन्ध से गन्धवाह
अति मन्द-मन्द चल पाता है ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

श्रृंगाग्र भाग धनपंकलिप्त
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
तन पर तुषार-रजकण उमड़ा
कर वप्रकेलि निर्झर-नर्दित
वर वलीवर्द सम शैल खड़ा ।।७।।

तट तरु-वर शाखा पर लम्बित
नीडों में खग विश्राम-निरत।
उड़ने की चेष्टा में निमग्न
निद्रा से अब हो गये विरत ।।८।।

लहरों की सींगों से सिकता-
तट से जो केलि रचाती हैं।
वे उतावली नदियाँ सवेग
सागर से मिलने जाती हैं ।।९।।

प्लुत दीर्घादिक स्वर घोष-दक्ष
पटु ताम्रचूड ने बाँग दिया।
आ गयी जागरण की बेला
ऐसा उसने उद्घोष किया ।।१०।।

विंध्याचल के तरु-कुञ्ज बीच
थी शिला सुधर जिसके ऊपर।
सो रहे चन्द्रशेखर प्रभात में
लगे देखने स्वप्न सुघर ।।११।।

जो लोकनाथ आलोक-पुञ्ज
भुजगावृत जिनके भुज प्रकोष्ठ।
वे ही अभयंकर आये हैं
सुस्मित से शोभित मधुर ओष्ठ ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भस्मांग-विभूषित आशुतोष
काशीपति पाप-पुञ्ज-हारी।
कैलास-विहारी नीलकण्ठ
बोले त्रिशूलधर त्रिपुरारी ।।१३।।

उठ पड़ो शीघ्र निद्रा तजकर
लूटते लुटेरे सकल देश।
निद्रा का क्या औचित्य वत्स!
जब विषम परिस्थिति हो विशेष ।।१४।।

दुष्टों ने वर्वश छीन लिया
मणि-रत्न देश का धन अशेष।
है क्लेश विशेष वत्स ! देखो
लुण्ठित उत्पीड़ित दीन देश ।।१५।।

काशी कोसल कश्मीर कच्छ
वंगांग मद्र जनपद अनेक।
पाञ्चाल मगध कुरु केरलादि
रह सके स्वतन्त्र न आज एक ।।१६।।

गंगा यमुना नर्मदा सिन्धु
सरयू झेलम बेतवा व्यास।
कावेरी क्षिप्रा ब्रह्मपुत्र
नदियाँ निबद्ध दासता-पाश ।।१७।।

कैलास अयोध्या मथुरादिक
आसेतु भूमि कलकीर्ति-युक्त।
मोक्षदा मुख्य पुरियाँ समस्त
रह सकीं नहीं दासता-मुक्त ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नगराज हिमालय वन्दी है
वर विन्ध्य-भूमि भी वन्दी है।
रत्नाकर महासिन्धु वन्दी
दुर्दशा अकथ इन सबकी है ।।१९।।

परतन्त्र गगन में सूर्योदय
परतन्त्र गगन में पवन-चार।
परतन्त्र भूमि में बहती हैं
नित नदियों की परतन्त्र धार ।।२०।।

न हि खग-कुल के कलरव स्वतन्त्र
न हि पुष्प-हास, कलिका-विकास।
जन-जन की श्वासें वन्दी हैं
जकड़े उनको दासता-पाश ।।२१।।

जो आर्ष-भूमि अतिशय पवित्र
अवतार-भूमि जो धाता की।
जिसमें क्रीड़ाएँ कीं अनेक
वह क्रोड वन्दिनी माता की ।।२२।।

माता घातित दुष्टों द्वारा
पातित सारी सुख-शान्ति नष्ट।
दारिद दावानल दग्ध हन्त!
पाती रहती दिन-रात कष्ट ।।२३।।

मलिनैक वस्त्र दीना निरस्त्र
भयग्रस्त देश यद्यपि विशाल।
नलिनी-सी नष्ट हिमागम में
माता को घेरे कष्ट-जाल ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कलिकाल-कोप कुछ काल-चक्र
भारत की भूमि सुवन्दित यह।
वरवीरप्रसूता होकर भी
दुष्टों द्वारा परिधर्षित यह ।।२५।।

सब पाशों में दुस्सह दुरन्त
यह पाश दासता का जानो।
दुख देता देशवासियों को
हे वत्स! वेदना पहचानो ।।२६।।

भेजा है मुझे पितामह ने
मैं तुम्हें जगाने आया हूँ।
आई बलिदानों की वेला
यह तुम्हें बताने आया हूँ ।।२७।।

तुम में मेरा ही अंश वत्स!
अवतार दुष्ट संहार हेतु।
काशी मेरी प्रिय पुरी वही
जाओ निज बल-विस्तार हेतु ।।२८।।

परिपीड़ित लोक उपेक्षित कर
वन में न उचित रहना तेरा।
दीपक का जलना वहीं उचित
हो जहाँ गहन तम का घेरा ।।२९।।

काशी में वीरभद्र आदिक
गण मेरे विपुल विचरते हैं।
क्रान्त्यग्नि-कुण्ड में यथासमय
वे आहुति डाला करते हैं ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वातन्त्र्य-सूर्य का उदय-काल
आ गया निकट लाली छाई।
उठ पड़ो वत्स द्रुत दीप्तनेत्र
बलिदानों की वेला आई ।।३१।।

निज क्रान्ति-दीक्षा हेतु वत्स
काशी की ओर प्रयाण करो।
हो पथ मंगलमय, न्यस्त कृत्य
कर, शीघ्र देश-कल्याण करो ।।३२।।

दूँगा अमोघ सन्धान-शक्ति
साहस उदग्र बल-वीर्य प्रखर।
जिसके स्मरण मात्र से ही
खल-वृन्द कँपेगा थर-थर-थर ।।३३।।

तुमको न रोक सकता कोई
लो दिव्य शक्ति अपनी सहेज।
उठ पड़ो वत्स! द्रुत दीप्तनेत्र
दो दुष्टों को यमलोक भेज ।।३४।।

सिंहिनी शृगालों से पीड़ित
दासता-बद्ध निरुपाय दीन।
तुम पुत्र उसी के उठो उग्र
दुष्टों को मारो बीन-बीन ।।३५।।

देखो जननी कारा-निबद्ध
दृग में उमड़ी है अश्रु-धार।
तज शान्त भाव उठ पड़ो वत्स
बन उग्र करो अरि पर प्रहार ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शेखर को पवन झकोरों ने
खग-कुल कलरव ने जगा दिया।
उठते ही जगद् व्यवस्था के
सञ्चालक रवि को नमन किया ।।३७।।

धृतजटाजूट ज्यों उच्चकूट
कुहरे की लिप्त विभूति सघन।
लख शैल समाधिस्थित शिव ज्यों
अति प्रेम-पूर्ण हो किया नमन ।।३८।।

स्वप्नान्दोलित हर्षित शेखर ने
घर को तुरत पयान किया।
वृत्तान्त बता स्वाप्निक समस्त
सबको आनन्द प्रदान किया ।।३९।।

प्रेमाश्रुपूरिता माता की
गद्गद वाणी से पड़ा निकल।
हो गयी तपस्या पूर्ण सकल
शिव की उपासना हुई सफल ।।४०।।

है गोद धन्य उस माता की
जिससे सुत वीर जन्म पाते।
जिनकी अद्भुद गाथाएँ सुन
आश्चर्य-मग्न जन हो जाते ।।४१।।

जिसमें सेवा बलिदान न हो
न हो आत्म-शुद्धि करुणातिरेक।
निष्फल उस नर का जीवन है
जिसमें न बुद्धि, विद्या, विवेक ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दीनता और परपीड़न लख
जिनके न नयन भर आते हैं।
हैं जन्म निरर्थक उनके जो
न परोपकार कर पाते हैं। ।।४३।।

जो कुटिल कुवृत्त आत्मभोजी
परपीड़क लोलुप कुविचारी।
जो अति स्वार्थी लम्पट घाती
पशु ही हैं वे नर-तनुधारी ।।४४।।

मात्सर्य पूर्ण छल-छद्म-लग्न
जो दुष्ट दम्भ-रत दुराचार।
हैं श्वास-समान मनुज ऐसे
जो उदर-भरण-रत चाटुकार ।।४५।।

पाया है चाटु-कर्म द्वारा
जिसने धन-वैभव राज-कोष।
है भुजग-भोग सम भञ्जनीय
ऐसा छल-कपटी खल सदोष ।।४६।।

धिग् जीवन जो कटु कीट कल्प
खटमल ज्यों कर पर रक्त-पान।
बलिदान-शून्य जो दाहक हो
रहता हो ज्यों जीवित मसान ।।४७।।

परहितरत जिसका जीवन हो
जो करता हो करुणोपचार।
जो वीरव्रती महनीय पूज्य
है धन्य धरा में वह उदार ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कोई न कल्प भर जी [illegible]
कुछ ठीक नहीं क[illegible] जाये।
सौभाग्य अधिक क्या हो सकता।
यदि देश-कार्य कुछ कर जाये ।।४९।।

काशीपति के द्वारा प्रेरित
हे वत्स! शीघ्र काशी जाओ।
आहुति बनकर बलि-कुण्डमध्य
सुर-दुर्लभ दिव्य देह पाओ ।।५०।।

आज्ञा पाकर करके प्रणाम
चल पड़े शिवपुरी को ललाम।
रमते काशीपति बने जहाँ
वे विश्वनाथ शिव शक्तिधाम ।।५१।।

परिपूरित भाव सहस्रों से
शोभित यों पथ में विद्यमान।
पाने पुरुषार्थ धर्म के घर
ज्यों कर्म कर रहा हो पयान ।।५२।।

कर देता भस्म समग्र विश्व
जिनके त्रिनेत्र का ज्वाल प्रखर।
काशी को प्रिया मान रमते
बनकर कृपालु वे प्रलयंकर ।।५३।।

दी बड़ी दूर से दिखलायी
गंगा की शुभ्र सुधारा यों।
काशी-रक्षार्थ रखी शिव ने
चाँदी की कढ़ी दुधारा ज्यों ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

दृग-अम्बुज में भर अम्बु उठा
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
विमलाम्बु देख भावाभिभूत।
श्रद्धा-परिपूरित नमन किया
मन-मध्य मोद भर कर प्रभूत ।।५५।।

उज्जवल जल-युक्ता दूरी से
गति शून्य क्षीण तन दिखलाती।
काशी-ग्रीवा में पड़ी हुई
मुक्ता-माला-सी छवि पाती ।।५६।।

गंगा को दण्ड-प्रणाम किया
बोले, सुरसरि शिव-मौलि-माल।
हिमशैल बालिके नमन तुम्हें
ब्रह्मद्रव पावन सर्वकाल ।।५७।।

उच्छल तरंग विमलाम्बु गंग
पुण्योत्संग पावन प्रसंग।
हे विष्णुपदी है नमन तुम्हें
विधृत विशेष वर वारि-खंग ।।५८।।

मेरी प्रिय जन्म भूमि छूकर
फिर वही सलिल चलकर आया।
यह सोच अश्रु फिर भर आये
पुलकित हो आयी फिर काया ।।५९।।

आकर देखा सुखदोपगंग
ज्यों सुकृत-बाण पूरित निषंग।
चालित कर तुंग तरंग-खंग
कर रहा भंग कलि की उमंग ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रेमाश्रु-भरित दृग दोनों थे
था भक्ति-सुपूरित उर रसाल।
गंगा से देश -भक्ति माँगी
लक्ष्यानुरक्ति विक्रम विशाल ।।६१।।

हे भागीरथी जह्नुतनया
शुभ गतिदात्री, बल बुद्धि विमल।
दो मुझे बुद्धि बल वेग विपुल
साहस दृढ़ता उत्साह प्रबल ।।६२।।

खल आंग्ल शासकों के विरुद्ध
है मुझे अभीप्सित युद्ध-दान।
हे शक्ति स्वरूपा महादेवि
दृढ़ अतुल शक्ति कर दो प्रदान ।।६३।।

शेखर के सात्त्विक हृदय मध्य
शुचि धारा की छवि छायी यों।
तम के विरुद्ध सात्त्विकता की
बत्ती हो गयी जलायी ज्यों ।।६४।।

केयूर कल्प कल कलित घट्ट
शोभित तरंग की मृदुमाला।
कल्लोल लोल के बोल मृदुल
गंगा शोभित ज्यों सुर-बाला ।।६५।।

गंगा की छवि छगुनी होती
पड़ती जब रवि की रश्मि लाल।
रंगी नारंगी साड़ी में
लिपटी ज्यों कोई सुघर बाल ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तट-बाहु युग्म शोभित सुन्दर
लहरें कल कोमल केश-जाल।
हंसस्वन-मुखरा गंगा ज्यों
कल गौरवर्ण की सुघर बाल ।।६७।।

गंगा-तट पर विलसित पावन
चन्द्रार्थ-रूप में कलकाशी।
मानो पिनाक या शशि ही हो
शशिशेखर-शेखर की वासी ।।६८।।

शिव-जटाजूट में विचरण कर
फिर भस्म ललाट-लग्न धरती।
धारा-शरीर से सुरसरिता
काशी का आलिंगन करती ।।६९।।

रमणियाँ उभय गंगा-काशी
शिव-संग रमण करतीं सहास।
यह पुण्य-प्रसाद भाग्य-संभव
उनके तट पर पाना निवास ।।७०।।

संसार एक विष-वृक्ष विषम
देता रहता कटु फल विशेष।
रक्षा कर सकता है उससे
बस विषपायी वह व्योमकेश ।।७१।।

मकरंद-लुब्ध पटु भृंग-तुल्य
विचरण करता चौराहों पर।
काशी में आनन्दित अपार
आनन्द-सिन्धु में बना मकर ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उन्नत विशाल प्रासाद-वृन्द
वर विशद परम पावन रसाल।
लहरती ध्वजाओं में लगते
ज्यों तैर रहे सर में मराल ।।७३।।

चूने से लिप्त चाँदनी में
गगनस्पर्शी उन्नत विशाल।
प्रासाद सुशोभित सुप्त यथा
कौशेय लपेटें मेघ-बाल ।।७४।।

शूलाग्रभाग पर धरती धर
जो नाचें लख कल्पान्त-काल।
उन विश्वनाथ भव सस्य-पाथ
के पास गया वह वीर बाल ।।७५।।

ब्रह्माण्ड कोटि प्रति लोम लग्न
शशि-सूर्य नयन, घन जटा-जाल।
माँगी है शिव से करुणा, जिनका
श्वास पवन नभ त्वग् विशाल ।।७६।।

देखा वर विश्वनाथ मन्दिर
ज्यों सुकृत-सैन्य शोभित विशाल।
जो ध्वजा-तर्जनी चला-चला
वर्जन करता कलि की कुचाल ।।७७।।

जग-सञ्चालन के मुख्य हेतु
शिवशंकर के ढिग जाकरके।
उन शक्तिनाथ को नमन किया
श्रद्धा से सीस झुका करके ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मन्दिर इस भाँति प्रतीत हुआ
ज्यों सुकृत-शतघ्नी सुस्थापित।
जय-घोष गोलियाँ चला-चला
करता विनष्ट कलि-कष्ट अमित ।।७९।।

बहु विद्या कलालोक द्वारा
हरती अनन्त अघ तिमिर-जन्य।
देखा वह पावन पुरी घूम
माना निज जीवन परम धन्य ।।८०।।

विद्या-बल बुद्धि प्रतिष्ठा में
जो है विशिष्ट उत्कृष्ट परम।
जो शस्त्र-शास्त्र-बल में बढ़कर
लख पुरी बाल था हृष्ट परम ।।८१।।

विद्वज्जन के चित-चालक हित
जो मेघ-घटा बनकर छायी।
बालक में मोद अपार हुआ
लख ऐसी काशी सुखदायी ।।८२।।

विद्या कौशल कल कला-केन्द्र
सुरभाषा का धुर-वाह जान।
शिक्षार्थ प्रविष्ट हुआ काशिक-
विद्यालय में बालक सुजान ।।८३।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काशीखण्ड

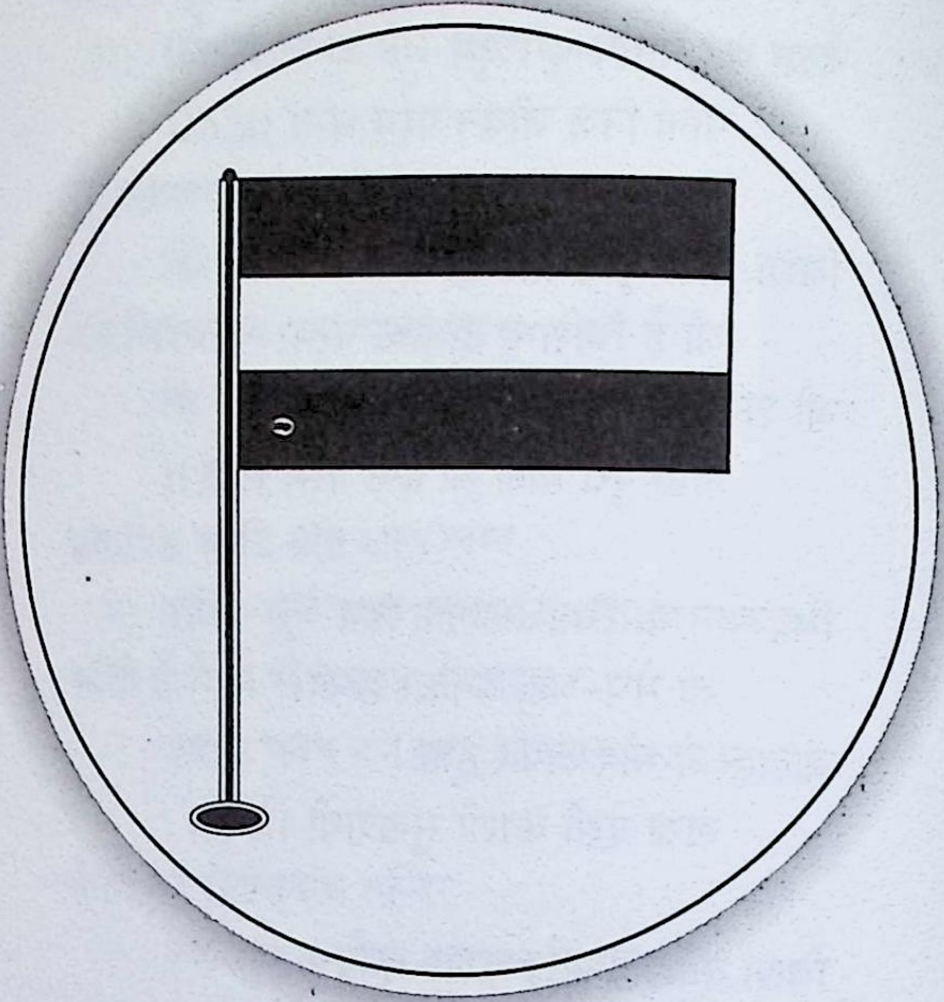

स्वातन्त्र्य-मत्त बोला प्रवीर
यह ध्वजा तिरंगा जय पाये।
वह संस्कृति जो संस्कृताधीन
सम्पूर्ण विश्व में छा जाये ॥८४॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शशि शीतरश्मि ने सोचा यह
मृदुमोहन शीत प्रयास करें
हो तिमिर नष्ट निशिचर भागें
भूतल के कष्ट समस्त हरें ।।१।।

तारों से मिलकर किया यत्न, पर
चन्द्र न रञ्चक सफल हुआ।
सुख चक्रवाक पा सके नहीं
क्या कुछ कम कष्टित कमल हुआ ।।२।।

तम मुक्त दिशा हो सकीं नहीं
आलोक न दिन ज्यों आ पाया।
सन्त्रस्त व्योम रो उठा, बिलख
बहु ओस-अश्रु को बरसाया ।।३।।

लख निष्फल शीतल यत्न सकल
प्राची ने जो सुत जन्म दिया।
तम और तमीचर-नाश हेतु
उसने अति उष्ण प्रयोग किया ।।४।।

प्राची ललाट में ज्वाल-जाल
जलने जगमग तत्काल लगा।
हो गये दिशामुख लाल-लाल
घन घोर तिमिर भयभीत भगा ।।५।।

प्राच्यन्तरिक्ष में अरुण-वर्ण
मकड़े ने जाला फैलाया।
फँस गया कीट ज्यों अंधकार
मकड़े ने उसे पकड़ खाया ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

बालार्क-बिम्ब घन खण्ड-रूढ़
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
प्राच्यन्तरिक्ष में यों छाया।
मानो कोई अंग्रेज़ रुष्ट
काले घोड़े पर चढ़ आया ।।७।।

वह रवि प्रकाश का पुञ्ज प्रखर
जब क्षितिज फाड़कर के निकला।
उसका तेजस्वी रूप देख
दल सकल निशा का भाग चला ।।८।।

उस स्वर्ण-पुरुष ने लेकरके
निज कर में किरणों का भाला।
तम का कराल तन भोंक-भोंक
क्षत-विक्षत उसको कर डाला ।।९।।

सेना प्रकाश की जीत गयी
खग-कुल ने जय-जयकार किया।
जल-थल में चारों ओर मुदित
किरणों का ध्वजा-प्रसार किया ।।१०।।

गाँधी ने सत्य-अहिंसा के
आन्दोलन का शीतल प्रयास।
प्रारम्भ किया हो सके ताकि
दासता-निशा-तम का विनाश ।।११।।

जलियान-बाग में तेज-पुञ्ज पर
तम ने जब आक्रमण किया।
संहार विकट लखकरके तब
आहत नरता ने रुदन किया ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शठ नीच निशाचर डायर ने
तोपों से कर गोला-प्रहार।
संहार नृशंस करा डाला
उन अहिंकों का धुआँधार ।।१३।।

निर्दोष अहिंसक-दल का लख
वध अकरुण दारुणतम कठोर।
रो उठी धरा, रो उठा गगन
रोया रत्नाकर जोर-जोर ।।१४।।

गिरिपति रोया, रो उठा विंध्य
गंगा-यमुना कर उठी रुदन।
रो उठे सकल आबाल-वृद्ध
रोयी मानवता भाव-प्रवण ।।१५।।

जब सुना चन्द्रशेखर ने यह
वृत्तांत अग्निवत् दाह-सना।
सुन्दर गुलाब-सा वदन अरुण
दारुण दाहक अंगार बना ।।१६।।

गरजा प्रवीर मैं मारूँगा
बच सकता नहीं पिशाच कहीं।
सहता मृगराज न गजाघात
सहता तो वह मृगराज नहीं ।।१७।।

धिक् अनयी अधमांगल पिशाच
इनको मैं दूँगा घोर दण्ड।
मारूँगा शीघ्र निकालूँगा
प्रण किया वीर ने यह प्रचण्ड ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धर कर कर में ध्वज दीर्घदण्ड
हुंकृति भरकर ललकारा है।
कैसा शासन अंग्रेजों का
यह भारत देश हमारा है ।।१९।।

अनुसरण प्रथम कर साम-नीति
पथ शान्त अहिंसक का पकड़ा।
यद्यपि उर में था उमड़ रहा
विस्फोटक ज्वालामुखी बड़ा ।।२०।।

ऊँचे स्वर में कह 'जय भारत'
बढ़ता था झंडा लहराता।
दल के आगे जन-पथ पर वह
वर वीर बाल देखा जाता ।।२१।।

दल अग्रभाग में चलता था
कर में शोभित ध्वज-दण्ड-मूल।
उल्काधर मंगल ग्रह अथवा
शंकर हों कर में धर त्रिशूल ।।२२।।

है एक दिवस की बात
प्रदर्शनकारी शान्त अहिंसक-दल।
चल करके आया नगर-मध्य
उर में था शान्ति-भाव निश्चल ।।२३।।

सबके कर-मध्य तिरंगा था
मुख-मध्य महत्तम जयोद्घोष।
सिरपर गाँधी-टोपी, उर में
दृढ़ देश-भक्ति का बृहत् कोष ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उस समय वहाँ कटु क्रूर कुटिल
अधिकारी एक क्रुद्ध आया।
काले घोड़े पर था सवार,
काला मन था, गोरी काया ।।२५।।

श्यामाश्व-पृष्ठ पर रूढ़ रुष्ट
गोरा लगता था इस प्रकार।
मानो अनिष्ट की इच्छा से
शनि पर हो मंगल-ग्रह सवार ।।२६।।

कृष्णाश्व-पृष्ठ से उतर तुरत
जब धर धरती पर दिया चरण।
घनखण्ड-रूढ़ बालार्क बिम्ब ने
भूतल का ज्यों किया वरण ।।२७।।

वह कोटपाल था गरज उठा
कृष्णाश्व-पृष्ठ से तुरत उतर।
आदेश दिया सिर से टोपी
कर से झण्डा फेंको सत्वर ।।२८।।

अनुपालित हो आदेश तुरत
अन्यथा करूँगा कशाघात।
अपराध मानता हूँ विलम्ब
चुप-चाप मान लो सहज बात ।।२९।।

जन-सेवक बोले एक साथ
सुन लो प्रण-पूरित सत्य बात।
झण्डे-टोपी का पतन तभी
होगा, जब हो तन का निपात ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुन वचन क्रोध से गरज उठा
इस पागलपन पर मत उतरो।
आज्ञा मेरी मानो तुरन्त
चट-पट घर को प्रस्थान करो ।।३१।।

हम नहीं यहाँ से जा सकते
पग पीछे नहीं हटा सकते।
जो मातृभूमि के दीवाने
भय-त्रास ने उन्हें डिगा सकते ।।३२।।

निज देश-मृत्तिका-रचित देह
यदि काम देश के आ जाये।
सौभाग्य अधिक क्या होगा, यदि
वह अन्त देश-हित में पाये ।।३३।।

गीतोपदेश द्वारा सिञ्चित
पावन भू से जिनका नाता।
पट-त्याग सदृश तन-त्याग, उन्हें
भयभीत मरण कब कर पाता ।।३४।।

सुन वचन दाँत पीसने लगा
पन्नग-समान फुफकार उठा।
बोला सरोष दृग अरुण नचा
कर द्विगुण क्रोध विस्तार उठा ।।३५।।

"मूढ़ाधम कुत्ते दास निंद्य
बकवासी दम्भी बुद्धिहीन।
बकवास छोड़कर घर जाओ
अन्यथा बधूँगा बीन-बीन" ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

यों बोल उठा यमरूप पिंग
In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
थे अधर फड़कते नयन लाल।
कच पकड़ा एक अहिंसक का
भर कर उछाल जैसे बिडाल ।।३७।।

लातों जूतों मुक्कों द्वारा
कोड़ों से कर भीषण प्रहार।
पृथिवी पर पटक-पटक पीटा
निर्मम ने उसको बार-बार ।।३८।।

उछला सवेग हिंसक फिर से
बढ़ एक वृद्ध पर वार किया।
घड़ियाल समान पोच ने उस
बुड्ढे का गला दबोच लिया ।।३९।।

अहि-सम सरोष फुंकार उठा
'साला' कुवाच उच्चार किया।
मारा कोड़ों से लातों से
थप्पड़-मुक्कों से वार किया ।।४०।।

क्षत-विक्षत गिरा भूमि पर वह
मूर्च्छित मुख से शोणित निकला।
मुख टोपी तथा तिरंगे को
खल ने निज पैरों से कुचला ।।४१।।

सत्तोन्मत्त उद्धत खल ने
मदमत्त किया तब अट्टहास।
उसके ही साथ क्रूरता ने
दानवता ने मिल किया हास ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रो उठी अहिंसा सहिष्णुता
सौजन्य शील करुणातिरेक।
रोये सात्त्विक गुण फूट-फूट
रोयी मृदुता, रोया विवेक ।।४३।।

उन अहिंसकों के भस्म हुए
हिंसाग्नि-मध्य सकलोपचार।
अति दीन निराश्रित अबला-ज्यों
गोरे की सहते रहे मार ।।४४।।

उन अहिंसकों की सहिष्णुता
निर्वेद भाव सकलोपचार।
उस गोरे के विचार से था
दुर्बल के दोषों का प्रसार ।।४५।।

तब तक न क्षमा पाती महत्त्व
जब तक न अनल का साथ रहे।
तब तक न सर्प का है महत्त्व
जब तक न गरल का साथ रहे ।।४६।।

हिंसा न अहिंसा समझ सकी
उसका प्रवेग बढ़ता आया।
पन्नग-समान वह दुष्ट पिंग
मारने हेतु फिर से धाया ।।४७।।

कर में लेकर के कठिन बेंत
निज उर में भीषण क्रोध जगा।
साला कह कर कच एक अहिंसक-
का गहकर खींचने लगा ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वह दलित अहिंसक दल समस्त
हिंसा-प्रसूत उत्पात सकल।
देखता रहा आँसू भरकर
दानव-दल की वह घात सकल ।।४९।।

उस काल बाल शार्दूल एक
बोला नृशंस बस रुक जाओ।
यदि प्राणों का हो मोह तुम्हें
आगे कुकृत्य मत दुहराओ ।।५०।।

मुख से अपशब्द निकाला तो
जिह्वा बाहर लूँगा निकाल।
यदि हाथ उठाया तोड़ उन्हें
पृथ्वी पर दूँगा तुरत डाल ।।५१।।

सुनकर कोपी में कोप प्रबल
उमड़ा, कोड़ा लेकर धाया।
करता बहु अपशब्दोच्चारण
शशिशेखर के समीप आया ।।५२।।

करने लग गया चन्द्रशेखर पर
कोड़ों की बरसात घोर।
श्वासें लेता था क्रुद्ध सर्प की
भाँति दुष्ट वह जोर-जोर ।।५३।।

शेखर की सूजी पीठ, सुशोभित
कशाघात से खचित रेख।
मानो घन ने विद्युत्कर से
रविबाल-पृष्ठ पर लिखा लेख ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चोटों पर रञ्च न ध्यान दिया
बन गया सिंह आहत प्रचण्ड।
उस खल गोरे अधिकारी पर
बरसाने लगा त्रिरंग दण्ड ।।५५।।

भर वेग किये दृग लाल-लाल
अनवरत दण्ड द्वारा मारा।
टूटी दन्तावलि, फूट चली
मस्तक से शोणित की धारा ।।५६।।

उसके भारी भरकम तन से
शोणित-धारा यों फूट चली।
मानो हिमगिरि से गेरू के
झरने की धारा बह निकली ।।५७।।

'ओ माइ गाड' कहता रोता
भग चला क्षतार्दित अधिकारी।
बेतारतार द्वारा सूचित
आ गया पुलिस का बल भारी ।।५८।।

उस बल ने बालक को जाकर
इस भाँति वहाँ पर था घेरा।
ज्यों बलाहकों ने बाल सूर्य पर
आकर डाला हो डेरा ।।५९।।

श्रृंखला-बद्ध वर वीर बाल
उस काल लग रहा था वैसे।
बादल-दल ने चलकर सगर्व
बालार्क-बिम्ब बाँधा जैसे ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संध्याआयी, रवि रक्त बिम्ब
तरु-पंक्ति-पृष्ठ में लीन हुआ।
ओझल जन-मण्डल के दृग से
कारा-गत बाल प्रवीण हुआ ।।६१।।

रजनी बीती दूसरे दिवस
दिनकर ने कर विस्तार किया।
बालक आया न्यायालय में
जन-मण्डल ने जयकार किया ।।६२।।

बालक का वय विक्रम लखकर
अति विस्मित न्यायाधीश रहा।
कर कृत्रिम रोष-युक्त आनन
शेखर से कुछ इस भाँति कहा ।।६३।।

"उद्दण्ड धृष्ट बालक अशिष्ट
बतला दे अपना नाम यहाँ।
हैं माता-पिता कौन तेरे
बतला है वासस्थान कहाँ ।।६४।।

सच बोल बता क्या करता है
क्यों किया कृत्य ऐसा प्रचण्ड।
संयोजक कौन तुम्हारा है
सच बोला तो दूँगा न दण्ड" ।।६५।।

बोला निर्भय वह बालसिंह
'आजाद' नाम मेरा जानो।
है नाम पिताश्री का मेरे
'स्वाधीन' इसे सच ही मानो ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

माता मेरी भारत माता
जानता जिसे जग सारा है।
स्वातन्त्र्य-युद्ध व्यवसाय शुद्ध
कारागृह भवन हमारा है ।।६७।।

इस कुटिल कुशासन ने मुझको
हिंसा का पथ पकड़ाया है।
अन्तःस्वर मेरा प्रेरक है
मैंने सब सत्य बताया है ।।६८।।

सुन वचन चकित देखने लगा
वह न्यायपाल कह उठा रुष्ट।
पथभ्रष्ट अधम बालक अशिष्ट
चापल्य छोड़ दे अरे दुष्ट ।।६९।।

तज दे पागलपन यह अपना
इस पतन-गर्त का पतन टाल।
पितरों को मत शोकाकुल कर
निज को न मृत्यु-मुख-मध्य डाल ।।७०।।

"है स्वतन्त्रता जन्माधिकार
अधिकार-याचना दोष नहीं।
क्या देशप्रेम है पतन और
क्या देश-भक्ति भी दोष कहीं ।।७१।।

जिस जन्मभूमि के पय द्वारा
प्यारा शरीर पोषण पाता।
लन्दन में उससे प्रेम-भाव
क्या हीन कर्म जाना जाता ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लन्दन नामक भवदीय देश को
जकड़े यदि दासता-पाश।
यदि मुक्ति-प्रयास करें श्रीमन्
क्या गण्य पतन-ज्यों यह प्रयास? ।।७३।।

छोटे मुख से सुन बड़ी बात
अति रुष्ट हो गया दण्डपाल।
दण्डाहत सर्प तुल्य आहत
बोला कर के निज नयन लाल ।।७४।।

यह न्यायालय, न नाट्य-शाला
मत भूल इसे बालक अजान।
है दण्डनीय न्यायालय गौरव-
हन्ता अपराधी-समान ।।७५।।

पापों में सबसे बड़ा पाप
शासन-विरोध माना जाता।
विष-तुल्य भोज्य सम शीघ्र त्याज्य
अज्ञान! तोड़ इससे नाता ।।७६।।

बोला बालक, "है परम सरल
देते रहना उपदेश-दान।
आचरणशील जन सुलभ नहीं
दुर्लभ पालन-कर्त्ता महान ।।७७।।

दण्डाधारी दुर्बल होता
पूर्वाग्रह को टाला जाये।
सन्न्याय-दुग्ध में उचित नहीं
पूर्वाग्रह-विष डाला जाये ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उत्तर न हमारे प्रश्नों का
उत्तर जो तुमने दे डाला।
दुर्बल है इतना अधिक, दण्ड
के बिना न चल सकने वाला ।।७९।।

जिसमें न सत्य की श्रवण-शक्ति
है निन्दनीय वह न्यायालय।
आशा न न्याय की उससे है
डरते न वीर मुझ-से निर्भय" ।।८०।।

उस दुराग्रही न्यायालय ने
बढ़कर अन्याय कराल किया।
पूर्वाग्रह और दुराग्रह वश
सन्न्याय-मार्ग को त्याग दिया ।।८१।।

खरवाट नामधर दण्डपाल के
नयन हो गये लाल-लाल।
पन्द्रह बेतों का दण्ड दिया
उस बालक को बनकर कराल ।।८२।।

खरवाट-दृगों में क्रोध जगा
शेखर-नयनों में गर्व जगा।
सुन लिया दण्ड वर बालक ने
देशाभिमान की मूर्ति लगा ।।८३।।

स्वातन्त्र्य-मत्त बोला प्रवीर
यह ध्वजा तिरंगा जय पाये।
वह संस्कृति जो संस्कृताधीन
सम्पूर्ण विश्व में छा जाये ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection of Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काराखण्ड

जिसके उर में बह सकी नहीं
निज देश-प्रेम की धार प्रखर।
पशु पामर पंकिल पाषाणी
है मृतक-तुल्य वह जीवित नर ॥७/७४॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चण्डांशु सूर्य का चण्ड तेज
सन्ध्या आने पर मन्द हुआ।
घन-बल से घिरा हुआ
पश्चिम के कारागृह में बन्द हुआ ।।१।।

होता अदृश्य तरु-पंक्ति मध्य
रवि-रक्त-बिम्ब इस भाँति लगा।
सह सका न अत्याचार, अस्तु
होकर विषण्ण मुख मूँद भगा ।।२।।

शोकाकुल पक्षीकुल समस्त
कूजन मिस रोते जाते थे।
सरवर नेत्राम्बुज मूँद लिये
निज दुख वे द्रवित दिखाते थे ।।३।।

अपराध आत्म-रक्षा को भी
न्यायालय ने माना प्रचण्ड।
कारागृह में हो गये बन्द
शशिशेखर पाने हेतु दण्ड ।।४।।

'हत्या की गयी न्याय की है'
रो उठा लोक कह इस प्रकार।
कुविचार जहाँ हठ पूर्वाग्रह
धिक्कार न्याय को बार-बार ।।५।।

न्यायालय का गौरव समस्त
संदूषित है हो गया यहाँ।
खल ने अंकुर-कर्त्तन-निमित्त
की है प्रयुक्त तलवार जहाँ ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह कोमल काय किशोर कहाँ
वह वेत्र-प्रहार कठोर कहाँ।
हम मारे गये स्वदेश मध्य
अन्याय हुआ घनघोर यहाँ ।।७।।

कोमल शिरीष का कुसुम कहाँ
है कहाँ कठिन पाषाण-खण्ड।
कोमल शिरीष को पत्थर से
है उचित न देना कभी दण्ड ।।८।।

अपने-अपने घर लोग गये
कहते वचनों को इसप्रकार।
कारागृह में हो गये बन्द
इस भाँति चन्द्रशेखर उदार ।।९।।

कारा केन्द्रीय बनारस की
उसमें ही लाया गया बाल।
कर दिया पवित्र कक्ष उसका
अपने चरणों की धूल डाल ।।१०।।

कारागृह के निभृत स्थल में
था शोभित वर कुंजर समान।
अथवा जैसे केहरि शोभित
कन्दर के अन्दर चिद्यमान ।।११।।

कारगृह में पड़ सकी नहीं
मुखपंकज की श्री तनिक म्लान।
सुन्दर लगता शारद-घन में
पूनम का शशि ज्यों विद्यमान ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

था निशाकाल का शून्य कक्ष
उर में उठते थे यों विचार।
कब कहो दूर होगा भगवन्
दासता-निशा का अंधकार ।।१३।।

कब नव प्रभात मुस्कायेगा
भागेंगे कब निशिचर कराल।
हे दीनबन्धु कब देखेगा
यह दीन देश स्वातन्त्र्य-काल ।।१४।।

कब मुख-पंकज विकसित होंगे
घन तम का कब होगा निपात।
हे दीन बंधु कब देखेगा
यह दीन देश स्वातन्त्र्य-प्रात ।।१५।।

न्यायार्जित अपने भोग-भाग
भोगेंगे कब जन निर्विकार।
हे दीनबन्धु कब देखेगा, यह
देश नागरिक-गण उदार ।।१६।।

मात्सर्य-हीन जो सुविचारी
सादा जीवन ऊँचा विचार।
कब देखेगा यह दीन देश
ऐसे नर-रत्नों का प्रसार ।।१७।।

हर्षोन्मत्त वासी-विहंग
समृद्धि-रश्मियाँ लख विशेष।
कब गायेंगे स्वातन्त्र्य-गीत
देखेगा सब कब दीन देश ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कब फैलेगी सन्न्याय-ज्योति
अन्याय नष्ट होगा अशेष।
निष्कण्टक होगा लोकसकल
देखेगा कब यह दीन देश ।।१९।।

होगा कब अन्त दुशासन का
छूटेगा कब सत्ता-विकार।
यह दीन देश कब देखेगा
शुभ रामराज्य का प्रिय प्रसार ।।२०।।

करता विचार यों जा पहुँचा
जब स्वप्न-लोक में मतवाला।
ज्वलितांक-युक्त बहु लेख निशा ने
श्यामपट्ट पर लिख डाला ।।२१।।

निज परिधि-चक्र को पूरा कर
धरती ने दिन दूसरा किया।
यों काल-महासागर में फिर
नव बाल-वीचि ज्यों उठा दिया ।।२२।।

रजनी बीती दूसरा दिवस
प्राची-कपाट से चल आया।
सुन्दरी उषा ने हेम-कुम्भ से
प्रचुर किरण-जल बरसाया ।।२३।।

खग-लोक विलोक चेतना नव
नव गीत प्रमत्त सुनाता था।
मधुपान-मत्त मोहित मधुकर
मोहक नर्तन दिखलाता था ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्राची-सिंही-सुत तुल्य सूर्य
आया नभ- वन में बन मृगेन्द्र।
तारक-मृग डरकर छिपे कहीं
भग चला घोर तम का गजेन्द्र ।।२५।।

जो इधर-उधर लघु मेघ-खण्ड
बिखरे थे नभ में न्यारे हो।
ज्यों किया किसी ने कशाघात
नभ पर पड़ गये बरारे हों ।।२६।।

था निशागमन इसलिए पड़ा
कार्यों में अल्पविराम जहाँ।
नव सूर्यागम के साथ पुनः
चल पड़ा रुका वह कार्य वहाँ ।।२७।।

जो वेत्र-प्रहार रुक गया था
चल पड़ा पुनः जब दिन आया।
रवि भी बन वेत्र-प्रहारी ज्यों
ले किरण-दण्ड नभ पर छाया ।।२८।।

काराधिप था हिन्दुस्तानी
उसका था गंगसिंह नाम।
नामानुरूप गुण थे न किन्तु
था पुरुषाधम पूरा गुलाम ।।२९।।

निज चक्र-चलन-रतघटिका ने
चलकर दिन में दस बजा दिया।
आरक्षिमुख्य को कार्यकक्ष में
काराधिप ने बुला लिया ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सत्क्रान्ति-कमल-कानन-तुषार
कारााधिप गंगासिंह रहा।
हाजिर हो शेखर इसप्रकार
आरक्षि प्रमुख से वचन कहा ।।३१।।

आरक्षि-मुख्य चल पड़ा तुरत
शशिशेखर के सम्मुख आया।
मृगराज सदृश पौरुष प्रताप
था तेज बाल रवि सम छाया ।।३२।।

आकर देखा शुचि रूप रम्य
वय अल्प किन्तु दृढ़ तेज प्रबल।
भावाभिभूत हो नमन किया
काठोर्य-भाव बन गया तरल ।।३३।।

बोला- "बालक उठ पड़ो शीघ्र
काराधिप ने है बुलवाया।
अनुपालित हो आदेश तुरत
संदेश उन्होंने भिजवाया" ।।३४।।

सुन वचन निमिष भर देख उसे
शार्दूल सदृश बालक प्रवीर।
अति सहज भाव से साथ चला
मन में न हुआ किंचित अधीर ।।३५।।

पीठों पर लटकीं बन्दूकें
ऐसे आरक्षी दल-द्वारा।
रक्षित सुकक्ष काराधिप का
देखा लटका पर्दा प्यारा ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मूछें कानों को छूती थीं
भारी कपोल भारी कपाल।
देखा काराधिप को बैठा
ज्यों भैंसे पर हो यम कराल ।।३७।।

बालक की मुख-पंकज-श्री लख
नयनों में व्यापित तेज प्रबल।
कारापति का उर तरल बना
बह चला सकल दुर्भाव-गरल ।।३८।।

सोचने लगा, यह रूप धन्य
वय धन्य, तेज बल वीर्य धन्य।
यह बालक कोमल भले, किन्तु
इसमें संचित साहस अनन्य ।।३९।।

तन कोमल कमल समान कहाँ
वय अल्प रूप-विस्तार जहाँ।
निश्चित अन्याय अपार हुआ
कोड़ों का कठिन प्रहार कहाँ ।।४०।।

जाने क्यों मेरा क्रूर हृदय
करुणा का वरण लगा करने।
सिकता के सूखे कण से भी
कैसे लग गया स्नेह झरने ।।४१।।

करुणाप्लावित कारापति था
क्षण भर विमुग्ध उर डोल उठा।
काठोर्य मध्य करुणा धरकर
बालक से ऐसा बोल उठा ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चापल्य-ग्रस्त बालक विमूढ़
यह कुफल अज्ञता का विकार।
अक्षम्य दोष है अति जघन्य
अवसर देता हूँ एक बार ।।४३।।

अंग्रेज जगत के स्वामी हैं,
सम्राट चक्रवर्ती महान।
उनका विरोध दुष्कर्म घोर
ले समझ मूर्ख बालक अजान ।।४४।।

की उद्दण्डता घोर तुमने
अपराध तुम्हारा है प्रचण्ड।
अल्पायु मान, लख बाल-बुद्धि
लो क्षमा माँग दूँगा न दण्ड ।।४५।।

काराधिप का सुनकर कुकथ्य
प्रस्ताव घृण्य कटुवाग्जाल।
तमतमा उठा बालक का मुख
हो उठे दीर्घ दृग लाल-लाल ।।४६।।

पर्वताकार गज को विलोक
सुनकर उसका चिग्घाड़ घोर।
डरता न सिंह-सुत किंचित भी
देता उसका उत्तर कठोर ।।४७।।

बोला सरोष दृग दीप्त बाल
गरजा हो मानो मेघ श्याम।
सुन सकूँगा ऐसे वचन नहीं
वाणी को चटपट दो विराम ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुनना निज जन्म-भूमि निंदा
है नरक-वास करता प्रदान।
काटो निन्दक की जिह्वा या
चल पड़ो वहाँ से मूँद कान ।।४९।।

खाया है जिस भू का सदन्न
जिसका कि अमृतवत् सलिल पिया।
उसकी महिमा तज धूर्तों की
महिमा का क्यों यों गान किया ।।५०।।

जो जन अनुचित साधन द्वारा
धन-वैभव राज्य-कोष पाते।
उनकी स्तुति मत करो कि जो
जन, पथ अनीति का अपनाते ।।५१।।

अधिकार अन्य के जो हरते
वे सर्प-तुल्य खल निन्दनीय।
जो स्वार्थ हेतु करते विनाश
हो सकते नहीं प्रशंसनीय ।।५२।।

सर्पों के अनुचर करता क्यों
उस दुष्ट आंग्ल दल का बखान।
जो जन्मभूमि के अपकारक
क्यों करता उनका यशोगान ।।५३।।

पद सिंहासन धन राज्यकोष
प्राणों के संग न जायेगा।
यश-अपयश ही रह पायेगा
बस धर्म साथ जा पायेगा ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो तथ्य पथ्य सम हितकर है
कराधिप उसको अपनाओ।
जो क्लेश देश को देते हैं
उन दुष्टों के गुण मत गाओ ।।५५।।

जन-सेवा अथवा देश-भक्ति
माना जाता अपराध कहीं?
फिर उस पर क्षमा-याचना का
दीखता कहीं औचित्य नहीं ।।५६।।

जो है विचार के योग्य सदा
वह तथ्य यथार्थ सुनाता हूँ।
है जहाँ क्षमा माँगनी उचित
ऐसे अपराध बताता हूँ ।।५७।।

पद-प्राप्ति हेतु पद-पद पर जो
सहते दुष्टों के पद-प्रहार।
वे तुच्छ क्षमा-याचना करें
पालतू खलों के चाटुकार ।।५८।।

जिस मातृभूमि का अमृत-तुल्य
पय तन में भरता अतुल शक्ति।
वह नीच क्षमा मागे, जिसमें
उस मातृभूमि की हो न भक्ति ।।५९।।

अवलोक आंग्ल के वृन्द तुच्छ
जो पुच्छ हिलाते खड़े-खड़े।
वे अधम क्षमा-याचना करें
जो श्वान सदृश हैं नीच बड़े ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अपनों को जो काटा करते
उनके अनिष्ट पर जो उतरें।
जो श्वान समान कदाचारी
वे नीच क्षमा-याचना करें ।।६१।।

जन-सेवी देश-प्रेमियों को
पीड़ित करके जो मोद भरें।
जो चाटुकार अघकीच-लिप्त
वे नीच क्षमा-याचना करें ।।६२।।

रुचिकर न चाटुकारिता मुझे
है घृणा क्लीवता से प्रचण्ड।
कायरता दिखा नहीं सकता
यह देह भले हो खण्ड-खण्ड ।।६३।।

दोनों को जान समान वीर
सुख-दुख सहते रहते प्रचण्ड।
मैं क्षमा न भय-वश माँगूगा
यह देह भले हो खण्ड-खण्ड ।।६४।।

मीरा प्रह्लाद ध्रुवादिक के
साक्षी देते आचरण सभी।
डिगते न लक्ष्य से भारतीय
यातना नहीं भयकरी कभी ।।६५।।

सुन वचन रुष्ट काराधिप के
डोलने लगे दृग लाल-लाल।
बोला, "न एक भी शब्द बोल
रे उद्धत अधम अशिष्ट बाल" ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देखा जाता जब अधम स्यार की
मृत्यु निकट आ जाती है।
वन से बस्ती के ओर गमन की
इच्छा उसे सताती है ।।६७।।

अंग्रेजी-वैभव दीप-शिखा
मत्सरी शलभ मत पड़ उस पर।
अविवेक मृत्यु का कारण है
विस्मृत कर मत यह तथ्य प्रवर ।।६८।।

रवि अस्त न हो पाता जिसमें
जो साम्राज्य इतना विशाल।
उसके विरोध का विफल यत्न
करता क्यों क्षुल्लकबुद्धिबाल ।।६९।।

बकवासी तज दे बालबुद्धि
गह सज्जन-सेवित सहज मार्ग।
माँ को न जला शोकानल में
रे हठी ! दुराग्रह शीघ्र त्याग ।।७०।।

उस बालसूर्य सम बालक में
जैसे हो ज्वालामुखी जगा।
देखा काराधिप के मुख को
दृग से झरने अंगार लगा ।।७१।।

बालक की भेदक ज्वलित दृष्टि
बन विद्युतग्नि चमकी सत्वर।
पत्थर-ज्यों काराधिप उर को
वह पार कर गयी भेद प्रखर ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दुर्व्यसन ग्रस्त काराधिप का
उर क्रूर कठोर कराल रहा।
सुन ले कृतघ्न पथ भ्रष्ट अधम
शशिशेखर ने हो क्रुद्ध कहा ।।७३।।

जिसके उर में बह सकी नहीं
निज देश-प्रेम की धार प्रखर।
पशु पामर पंकिल पाषाणी
है मृतक-तुल्य वह जीवित नर ।।७४।।

जो कुटिल कुवृत्त नृशंस नीच
कपटी कृतघ्न कायर कठोर।
कुविचारी कठिन कुकर्म-लग्न
वह मनुज नहीं मनुजाद घोर ।।७५।।

दासता निशा का नाशक जो
आ पहुँचा वह जागरण-काल।
इस नवल चेतना में पुलकित
नाचने लगे पक्षी निहाल ।।७६।।

रे मन्दभाग्य विपरीतवृत्त
तम को लपेट क्यों सोता है।
मेरी कल्याणी वाणी सुन
चैतन्य नहीं क्यों होता है ।।७७।।

निज तम-प्रधान विपरीत वृत्ति
काराधिप उसका त्याग करो।
अति उच्च देश-सेवा का पद
प्रतिपद उससे अनुराग करो ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो लोक-मध्य तामस-सङ्गी
उनका विनाश हो जाएगा।
जो नीच निशाचर उन्हें नहीं
इतिहास क्षमा कर पाएगा ।।७९।।

ज्वर-पीड़ित को सुस्वादु पोष्य
हितकारक भी रुचता न अल्प।
रुच सका न त्यों कारापति को
वह कथन बाल का पथ्य-कल्प ।।८०।।

काराधिप का हो उठा तुरत
अंगार-तुल्य आनन कराल।
'शठ का हित-चिन्तन उचित नहीं'
कह उठा नयन कर लाल-लाल ।।८१।।

कदली-दल में त्यों ही खल में
यह साम्य समान दिखता है।
सिंचन से नहीं, वरन् कर्त्तन से
फ़ल अभीष्ट मिल पाता है ।।८२।।

उन्माद असाध्य तुम्हारा है
बेतों की मार दवाई है।
जड़-जल्पन का उपचार वही
देता सुस्पष्ट दिखाई है ।।८३।।

रोषाग्नि-दग्ध काराधिप ने
यह कहा कि हो सत्वर प्रहार।
आ गया प्रहारी तुरत वहाँ
निज कर में बेंत कठोर धार ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यम दण्ड-हस्त ज्यों प्रकट हुआ
वह दण्ड-दक्ष दृढ़ नग्न-वक्ष।
प्रत्यक्ष चल पड़ा वह दुरक्ष
आया शशिशेखर के समक्ष ।।८५।।

बालक की पृष्ठ विवस्त्र मृदुल
होता प्रहार था लगातार।
लगता ज्यों कोमल कमल-पुंज पर
होता हो करका-प्रहार ।।८६।।

मृदु बाल-पृष्ठ पर फैल गया
क्षत-जन्य चिह्न लगता वैसे।
बलिदान-वृत्त हो लिखा गया
सोने के पत्तर पर जैसे ।।८७।।

साहस की मूर्ति बना बालक
निर्भयता पूर्ण दिखाता था।
आघातों के ही साथ-साथ
जय-शब्द बोलता जाता था ।।८८।।

निर्भयता साहस शौर्य धैर्य का
महासिन्धु लहराता था।
मृदु बालक की दृढ़ता लखकर
पाषाण पिघलता जाता था ।।८९।।

बालक की सूजी पीठ प्रबल
दृढ़ देश भक्ति से भरा रहा।
अति उच्च स्वरों में बार-बार
शतशः वन्दे मातरम् कहा ।।९०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अस्मिता देश की रक्षित हो
क्षण-भंगुर देह रहे न रहे।
यह देश हमारा रहे, भले
प्राणों की धार बहे न बहे ।।९१।।

पाकर प्रहार क्षणभंगु देह
अब नष्ट भले ही हो जाये।
स्वातन्त्र्य-दीप का द्रुत प्रकाश
होने न मन्द लेकिन पाये ।।९२।।

करता जाता जय-घोष सतत
भर उठा पूर्ण अवनी-अम्बर।
भर गयीं दिशाएँ सन्नादित
कँप उठे खलों के उर थर-थर ।।९३।।

जन-वृन्द सुने जय-घोष प्रबल
बन कर प्रतिध्वनि छाया विशेष।
परिपूरित थे जिसके द्वारा,
जल-थल त्यों नभ-मण्डल अशेष ।।९४।।

बालक की रक्त प्रशस्त पृष्ठ
थे बेंत चिह्न लगते ऐसे।
आंगल-सत्ता के दंशन-हित
फणियों ने फण काढ़े जैसे ।।९५।।

है धन्य देह जो देश और
परहित में सहे प्रहार प्रखर।
क्षणभंगु देह का होगा क्या
उपयोग अधिक इससे बढ़कर ।।९६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आह्वानखण्ड

वह धन्य नव यौवन करे
जो रक्त में सुस्नान है।
है सार्थक जीवन कि जिसमें
त्याग है बलिदान है ॥८/४२॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रञ्जित सलिल से प्रात का
रवि-बिम्ब उपराने लगा।
सिन्दूर-पूरित स्वर्ण-घट
या कमल मुस्काने लगा ।।१।।

सुस्नात सुरसरि-सलिल में
रवि निशा-कारा-मुक्त है।
देखा सभी ने चेतना
अनुराग से संयुक्त है ।।२।।

नभ स्वर्ण-धूल प्रसार कर
निज राग प्रकटाने लगा।
खग-वृन्द हर्षित गान-रत
निज नृत्य दिखलाने लगा ।।३।।

प्राची-जनित सुत का सुमुख
लख कमल-दृग निज खोलकर।
गाता सरोवर गीत है
हो भृंग के स्वर में मुखर ।।४।।

जो है अरुण आलोक की
रेखा चतुर्दिक खिंच गयी।
सूचित किया महदागमन
बनकर पताका छविमयी ।।५।।

मृदु लहरियों में डोलतीं
किरणें दिखातीं नाच हैं।
परिवेश करतीं मुग्ध वे
भरतीं अपूर्व कुलाच हैं ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

निज अंक में रख बाल रवि
प्राची परम सुख पा रही।
अनुरंजिता आभा अमित
मुख-तेज की बिखरा रही ।।७।।

कारा-मकर-मुख से निकल
वर वीर बालक आ रहा।
मानो क्षितिज-पट चीरकर
रवि बाल बिम्ब सुहा रहा ।।८।।

छवि छा रहा था चन्द्रशेखर
दिव्य दीपित भाल था।
ज्यों विपिन से निकला हुआ
मृगराज-बाल विशाल था ।।९।।

लख बाल रवि सम बाल को
जो आंग्ल-तिमिरान्तक रहा।
सुस्वागतागत वृन्द में था
मोद संव्यापित महा ।।१०।।

दृग दीर्घ कमल समान,
आयत वक्ष, भाल विशाल था।
केहरि ठवनि, पृथु पृष्ठ सूजी,
सिंह-सत्त्व कराल था ।।११।।

करागृहागत बाल को जन-
यूथ ने जाना सही।
लंका जलाकर लौटकर
आया हुआ हनुमान ही ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सब देखने उसको लगे
उत्सुक परम प्रिय भाव से।
जैसे चकोरक-वृन्द देखे
चन्द्रमा को चाव से ।।१३।।

बहु बाहु कोटि तरंग-ज्यों,
जयकार घोष अपार था।
उमड़े हुए जन-सिन्धु में,
यों आ गया ज्यों ज्वार था ।।१४।।

कुछ गान-रत कुछ नृत्य-रत,
भरते सवेग उछाल थे।
उन्मत उस जन-यूथ में
मन मुदित सब खुशहाल थे ।।१५।।

वह कौन जो न प्रदृप्त था
वह कौन जो न प्रमत्त था।
निजदेश-सेवा हेतु वह
मन कौन जो न प्रदत्त था ।।१६।।

वे गले मिलकर कर रहे
जयघोष बारंबार थे।
फिर चन्द्रशेखर को उठाकर
कर रहे जयकार थे ।।१७।।

अति धन्य हैं माता-पिता,
अति धन्य कुल-परिवार है।
सद्ग्राम धन्य रहे जहाँ
वह धन्य कारागार है ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुष्प-माला से लदा तन
बाल का छवि पा रहा।
मानो ललित माणिक्य-चोटी
पर प्रसून सुहा रहा ।।१९।।

लघुवयस बालक को निरख
जन-यूथ यों कहने लगा।
लघु रूप ने लघु की प्रतिष्ठा
आज दी जग में जगा ।।२०।।

तम का निहन्ता बाल रवि-
सम बाल यह सविशेष है।
कहते सभी इसमें समाहित
तिग्म तेजोन्मेष है ।।२१।।

मुहताज तेज न आयु का
जन जानते संसार के।
मृगराज बनता सिंह-सुत
गज का कपाल विदार के ।।२२।।

फण फाड़ता है नाग का
वह गरुड़-शावक भी प्रबल।
भयभीत कर पाता नहीं
उसको तनिक भी नाग-दल ।।२३।।

लघुकाय दीपक नष्ट करता
तिमिर को तत्काल है।
लघु बीज बनता देख लो
वट-वृक्ष एक विशाल है ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

साहस समर्पण सत्त्व धृति
लख प्रेम-अंकुर बढ़ चला।
वट-विटप अक्षय बन गया
लगने लगा अतिशय भला ।।२५।।

जन-वृन्द हृदय-प्रयाग में
देशानुराग मुकुन्द बन।
क्रीडा-निरत शोभित परम
प्रमुदित निरख लोकायतन ।।२६।।

वर पुष्पमाला युक्त नर
उमड़ा नगर साभार था।
जय-घोष बनकर निकलता
उनका हृदय-उद्‌गार था ।।२७।।

वह गौर बालक माल-युत
शोभित महा मंचोच्च पर।
ज्यों उदय गिरि पर बाल रवि
हो रश्मि रंजित धारकर ।।२८।।

था ओज तेज अपार महिमा
का विपुल विस्तार था।
शिवशंभु का अवतार यह
जन-यूथ का सुविचार था ।।२९।।

था क्रान्तिकारी के समागत
वृन्द का सुविचार यह।
स्वातन्त्र्य के जलयान का
होगा सुदृढ़ पतवार यह ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वागत-समापन हो गया
    तब वीर बालक मंच पर।
आगे बढ़ा जन को नमन-
    करने लगा कर जोड़ कर ।।३१।।

निशि में प्रकाशित मालमय,
    मुद मंजु तन यों खिल रहा।
सिन्दूर-गिरि का शृंग ज्यों
    कल ज्योत्स्नावृत हिल रहा ।।३२।।

सम्मान-नत वरवीर बालक
    भाव में बहने लगा।
फिर नमन कर जन-यूथ को
    कर जोड़कर कहने लगा ।।३३।।

मेरा नहीं बलिदान का
    स्वागत किया है आपने।
सम्मान दे बलिदान-पथ
    आयत किया है आपने ।।३४।।

हिम-शैल-सागर मध्य का,
    भू-भाग जो कि प्रसिद्ध है।
भारत वही, हम भारतीय
    सुतथ्य शास्त्र-सुसिद्ध हैं ।।३५।।

हम मूलवासी सिद्ध अपना
    हो चुका अधिकार है।
अधिकार तस्कर-वृन्द का
    अनुचित सकल व्यवहार है ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो भारतीय न, उचित उनका
यहाँ पर अधिकार है
उच्छेद करने योग्य
उनका मूल से विस्तार है ।।३७।।

मैं जानता हूँ सत्य यह
भारत हमारा देश है।
सहनीय नहीं कदापि आगे
दासता का क्लेश है ।।३८।।

कटु कूटनीतिक दुष्ट-दल
द्वारा निपीडित देश है।
ये आंग्ल खल अत्यल्प तो
भी दे रहे अति क्लेश है ।।३९।।

उनकी व्यवस्था दासता की
रज्जु अति विकराल है।
आबद्ध ज्यों गजराज पाता
कष्ट देश विशाल है ।।४०।।

सिंह पर शासन रँगादल
स्यार का करने लगा।
तुम सिंह हो, ये स्यार हैं,
मारो विदारो दो भगा ।।४१।।

वह धन्य यौवन जो कि
करता रक्त में सुस्नान है।
है सार्थक जीवन कि जिसमें
त्याग है, बलिदान है ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अंग्रेज दुष्ट दुर्वृत्त हैं
वे सामनीति न मानते।
है अर्थ की वार्ता विफल
वे दण्ड ही पहचानते ।।४३।।

यह सामनीति न योग क्षेम,
न विजय दे सकती यहाँ।
अधिकार की संप्राप्ति भी
इस साम से संभव कहाँ ? ।।४४।।

मूलाधिकार स्वतन्त्रता,
कब दे सका निर्वेद है।
जीवन वृथा स्वातन्त्र्य बिनु,
हम जी रहे अति खेद है ।।४५।।

पावक न पाता हव्य को,
यदि प्रज्वलित होता नहीं।
जिसमें न पौरुष दहकता
अधिकार वह पाता कहीं ।।४६।।

संतोष, शान्ति क्षमादि गुण
पाते न तब तक मान हैं।
जब तक न उनमें संचरित
द्रुत तप्त पौरुष-प्राण हैं ।।४७।।

प्राणान्त पाणिनि महामुनि का
व्याघ्र खल ने कर दिया।
कब ध्यान सुजनों के गुणों का
दुर्जनों ने है किया ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धारे बिना धनु सिन्धु ने
बिनती न रघुवर की सुनी।
त्यों शान्ति की वार्ता सुयोधन ने
न यदुवर की सुनी ।।४९।।

जो कृपण क्रूर कठोर खल
हिंसक परम अध-धाम हैं।
सद्धर्म या सत्कर्म से उनको
कहाँ कब काम हैं ।।५०।।

परस्वत्व हर्त्ता हैं लुटेरे
विनय सुन सकते नहीं।
वे क्रान्ति भाषा ही सुनेंगे
शान्ति सुन सकते नहीं ।।५१।।

कब अग्नि का संयोंग पाये
बिना दीपक जल सका।
प्रज्वलन बिना न स्नेह के
तम का पसारा टल सका ।।५२।।

मैंने अहिंसक शान्त-दल
की दुर्दशा देखी प्रबल।
असहाय अबला-सी सहे
जो यातनाएँ हैं सकल ।।५३।।

यों 'डाग' कहना भारतीयों
को सहन होता नहीं।
खल श्वान के अपशब्द
कैसे सिंह सह सकता कहीं ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

है शूल निकला शूल से
विष की महौषध विष बना।
है लौह कटता लौह से
यह सत्य है अनुभव सना ।।५५।।

पाषाणाद्वारा ईंट का
उत्तर मुझे रुचिकर रहा।
संहार दूँगा दुष्ट-दल
मैंने शपथ-पूर्वक कहा ।।५६।।

निज लक्ष्य-पथ से काल
भी मुझको डरा सकता नहीं।
स्वाधीनता-हित प्राण भी
अर्पित करूँगा सब कहीं ।।५७।।

जो पाश डाले गले में नर-
पशु उन्हें धिक्कार है।
परतन्त्र पिंजड़े में पड़े
घर उन्हें कारागार है ।।५८।।

सच इस दुशासन में न
मानव-मूल्य का सत्कार है।
यह दुर्व्यवस्था तोड़ करना
देश का उद्धार है ।।५९।।

मनु की सही संतान हम
बल-वीर्य से रक्षित सदा।
संज्ञात पूरे विश्व में यह
तथ्य संगत सर्वदा ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection of Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मैं नींद उनकी हरूँगा
जो धन हमारा है हरे।
मैं प्राण उनका हरूँगा
जो राज्य सारा है हरे ।।६१।।

बल वीर्य साहस शौर्य में
विद्या, विनय, नय-चार में।
आंग्लों से कम हम हैं नहीं
गुण-ज्ञान के विस्तार में ।।६२।।

निज वीरता का कर प्रदर्शन
आंग्ल राज्य न पा सके।
विश्वासघात किये अत:
साम्राज्य दुष्ट बढ़ा सके ।।६३।।

सिंह स्यार, खगेश अहि
की दासता कब सह सका।
मार्तण्ड तमस-प्रसार को
मेटे बिना कब रह सका ? ।।६४।।

कोई भले ही याचना से
भैक्ष्य-भार जुटा सका।
वह किन्तु अपहृत राज्य
अपना भीख में कब पा सका ।।६५।।

आजाद मेरा नाम मैं
आजाद भारत को करूँ।
सौगन्ध मुझको देश की
आजाद ही जीकर मरूँ ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तब पुष्प वर्षा हो उठी सुन
चन्द्र शेखर के वचन।
जयकार ध्वनि से भर उठी
तत्काल धरती त्यों गगन ।।६७।।

अति धन्य है वह भूमि
जिसमें जन्म है तुमने लिया।
हो धन्य बालक वीर
तुमने धन्य धरती कर दिया ।।६८।।

अति धन्य है जननी-जनक,
पय धन्य जो तुमने पिया।
हो धन्य बालक वीर तुमने
धन्य धरती कर दिया ।।६९।।

प्रण धन्य साहस धन्य है,
बल वीर्य शौर्य अनन्य है।
हम धन्य हैं दर्शक तुम्हारे,
देश तुमसे धन्य है ।।७०।।

जन-वृन्द सारा धन्य है,
आह्वान तव जिसमें भरित।
क्लैव्यार्णव-बडवाग्नि सम
अति धन्य है तेरा चरित ।।७१।।

शुचि रचित रुचिर प्रशस्ति से
स्वर उच्च परम रसाल से।
धरती-गगन सब भर उठा
वादित विशद करताल से ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बहु बाहु दिव्य तरंग-युत
मुख-कमल-माल विशाल था।
उस सभा-वापी मध्य शोभित-
बाल यथा मराल था ।।७३।।

लख चन्द्रशेखर की प्रतिष्ठा
चन्द्र सुख पाने लगा।
शिवशीश-शोभा ज्योत्स्ना-
के फूल बरसाने लगा ।।७४।।

शाबाशियाँ देने लगा
बहता पवन उत्साह भर।
स्वाधीनता-सीतार्थ
बन जाओ पवनसुत वीरवर ।।७५।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यतिखण्ड

देखो मन्दिर का लघु प्रदीप
एकाकी जो जलता रहता।
जो क्षीणकाय क्षणदा-क्षण में
घनघोर तिमिर दहता रहता ।।९५।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रवि-बिम्ब-कुम्भ पश्चिम पयोधि
में डूब पूर्व में उतराया।
होता प्रतीत ज्यों दिनकर ही
फिर रजनीकर बनकर आया ।।१।।

मार्तण्ड चण्ड का मुख लखकर
जो तारे थे भयभीत भगे।
वे सौम्यवदन शशि को विलोक
बन कर विशोक झाँकने लगे ।।२।।

रम्यानन दीपित दिव्य देश
वह तारिकेश विशदांशुकेश।
बन विशद वृषभ विचरण करता
राकेश रम्य नभ में अशेष ।।३।।

गल गया विशेष प्रदोषदोष
ज्योत्स्ना का राजित रजतकेश।
शोभित निशेश जैसे नरेश
परिवेष नृत्य-पूरित अशेष ।।४।।

उष्णीष वलय का धर सिर पर
किरणों का डण्डा ले कर में।
विचरण करता शशि-गोपालक
ज्योस्नोत्तरीय धर अम्बर में ।।५।।

तेजस्वी शशि के मण्डल में
जो श्याम अंक छवि पाता है।
मानो तम से संघर्ष-जन्य
क्षत-चिह्न दृष्टि में आता है ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सिंहासन पाकर ज्यों नरेन्द्र
रम्भा वन पाकर ज्यों गजेन्द्र।
ज्यों शिला-पट्ट पाकर मृगेन्द्र
नीलाम्बर पाकर त्यों निशेन्द्र ।।७।।

थी निशा निशापति से शोभित
बालक ज्योत्स्ना-जल से स्नापित।
आनीत दिव्य गृह में विनीत
था जयोच्चार जिसमें व्यापित ।।८।।

था कक्ष विशिष्ट शिष्ट बैठे
था घिरा हुआ उनसे सुबाल।
कुछ ऐसा लगा कि बैठा है,
पंकज-दल में बालक मराल ।।९।।

उस विद्युत-दीपित कक्ष-मध्य
तेजस्वी यति पंचक आया।
पड़ गया मन्द विद्युत- प्रकाश
जब उनका प्रभा-पुंज छाया ।।१०।।

उस बाल चन्द्रशेखर का वे
आलिंगन बारंबार किये।
दृग से पीने लग गये रूप
आशीर्वाद बहु भाँति दिये ।।११।।

"मृगराज वत्स सौ वर्ष जियो
भावी भारत की आशा हो।
भारत भू की पावन विभूति
उसकी अनन्त अभिलाषा हो ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दासता विकट अँधियारी है
तुम बाल सूर्य बनकर छाओ।
इस आंग्ल-महोदधि शोषण-हित
बालक तुम कुंभज बन जाओ ।।१३।।

उनके वचनों से उत्प्रेरित
बन पर्व-सिन्धु उमड़ा किशोर।
परिचय की जिज्ञासा भरकर
देखने लगा वह उसी ओर ।।१४।।

तब साथ-साथ वे बोल उठे
हम हैं भारत-भू के किंकर।
रिपु-बल-समुद्र में बडवानल
बलिदान-कुण्ड की समिध प्रखर ।।१५।।

उन सबकी गूढ़ गिरा सुनकर
बालक विस्मित देखने लगा।
उसकी उत्कण्ठा शमन-हेतु
वह यति-प्रधान बोलने लगा ।।१६।।

मुझको 'बिस्मिल' जानो, मेरे
दक्षिण दिशि में 'बटुकेशदत्त'।
'सान्याल' वीर 'अश्फाक' और
हैं भक्तसिंह स्वातन्त्र्य-मत्त ।।१७।।

दृढ़ देश-भक्त गर्वेक्षण-युत
ऐसा कहकर कुछ मुस्काया।
प्रच्छन्न रूप तज यति-प्रधान
वास्तविक रूप निज में आया ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उसके ही साथ अपर यति भी
प्रच्छन्न वेश अपना त्यागे।
स्वश्मश्रु-जाल तज कर आये
वास्तविक रूप निज में आगे ।।१९।।

संज्ञात-तथ्य उस बालक के
प्रेमाश्रु नयन में भर आये।
आनन्द-सिन्धु में मकर बने
आलिंगन कर सब सुख पाये ।।२०।।

प्रेमाश्रु गिरे पट भीग चले
भावोद्भव सुख-संचार हुआ।
स्वातन्त्र्य-समर्पित उन सब में
विधिवत् एकत्व प्रसार हुआ ।।२१।।

मिलकर की भीष्म प्रतिज्ञा यह
दासता देश की दर देंगे।
स्वातन्त्र्य-समर में हम सहर्ष
प्राणों की आहुति कर देंगे ।।२२।।

आंग्लों को मार खदेड़ तुरत
यमपुर उनको पहुँचा देंगें।
दुःशासन को करके समाप्त
उसका अस्तित्व मिटा देंगे ।।२३।।

बीता निशीथ निद्राधिरूढ़-
दल स्वप्न-लोक में जा छाया।
स्वातन्त्र्य-स्पन्दन लिये जगा
फिर प्रात काल जब मुस्काया ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वे वीर विचारी उठकरके,
करने इस भाँति विचार लगे।
दुख-दैन्य नष्ट हो किस प्रकार
दसता-निशा किस भाँति भगे ।।२५।।

यह क्रान्ति-मार्ग नवनीत नहीं
इस पर बिखरे कण्टक अपार।
तलवार-धार पर चलना है
यात्री को संकट बहु प्रकार ।।२६।।

साम्राज्य बृहद् सेना असंख्य
शस्त्रास्त्रों से सज्जित कराल।
चतुरंग चमू चर चतुर चुने
ज्यों रावण की सेना विशाल ।।२७।।

अंग्रेज प्रशासक व्याल सदृश
हैं कुटिल क्रूर अनयी कठोर।
कटु कूटनीति से देश जीत
जड़ जमा चुके हैं सभी ओर ।।२८।।

शस्त्रास्त्र विना उनके विरुद्ध
यह युद्ध समुद्यम है वैसे।
पतवार विना संतरण सिन्धु
मुष्टिक से गिरि-पातन जैसे ।।२९।।

जो वीर सैन्य-बल से विहीन
साहस-बल से भी चलते हैं।
वे आत्मबली निज पौरुष से
संकट से पार निकलते हैं ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

फिर भी साम्राज्य महाबल का
सामना कुशलता से करना।
संभव न घोर शस्त्रास्त्र विना
रिपु का घनघोर गर्व हरना ।।३१।।

स्वातन्त्र्य-समर के मेध-मध्य
प्राणों को हव्य बना सकते।
विस्फोटकास्त्र की अरणि विना
कान्त्यग्नि नहीं दहका सकते ।।३२।।

स्वातन्त्र्य न जय के बिना सुलभ
जय सुलभ समर के विना नहीं।
कब समर हो सका अस्त्र बिना
धन विना न मिलता अस्त्र कहीं ।।३३।।

है खेद द्रव्य यह मनस्वियों के
पथ में शूल बना आता।
सज्जन के गृह में दैन्य देख
उर भला न किसका फट जाता ।।३४।।

दासता-दुर्ग के भंजनार्थ
खल-दल समग्र के नाशनार्थ
हम रक्त बना देंगे जल-ज्यों
स्वातन्त्र्य-सस्य के सिंचनार्थ ।।३५।।

नैराश्य दैन्य संधार्य नहीं
शैथिल्य-भाव स्वीकार्य नहीं।
बल-बुद्धि विचार प्रयोज्य किन्तु
समयानुसार ही जहाँ कहीं ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्रान्त्यग्नि-कुण्ड में हव्य हेतु
चाहिए विपुल वैभव-प्रसार।
करके प्रयास चयनीय, अस्तु
अस्त्रार्थ अर्थ अतुलित अपार ।।३७।।

सर्वस्व केसरी की स्वशक्ति
विकराल दन्त दाढ़े विशाल।
निज लक्ष्य सिद्ध करता जिनसे
वे कोष्ठ-विदारक नख कराल ।।३८।।

धन-संचयार्थ संयोज्य वही
निज में संचित साहस अपार।
लूटनी स्वर्ण की लंका है
करना रावण-वध का विचार ।।३९।।

अब अस्त्र-क्रयार्थ लूटना है
धन-कोश सुसंचित राजकीय।
स्वातन्त्र्य-मेध में समिध हेतु
समृद्ध कृपण भी लुण्ठनीय ।।४०।।

सत्क्रान्ति हेतु संगठित हुई
आर्मीरिपब्लिकन सोशलिस्ट।
अध्यक्ष चयन कर लिये गये
आजाद गुणों में थे विशिष्ट ।।४१।।

इस दल का था उद्देश्य यही
किस भाँति क्रान्ति का हो विकास।
कैसे अस्त्रों का संचय हो
समृद्ध कोश-हित हो प्रयास ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आजाद वीर के सहयोगी
प्रस्ताव किये उनसे ज्वलन्त।
वे मठ समृद्ध के शिष्य बनें
मरणोन्मुख है उसका महन्त ।।४३।।

गाजीपुर का यह मठ समृद्ध,
धन सोना-चांदी है अनन्त।
सबका सब सहज प्राप्त होगा
मर जायेगा जैसे महन्त ।।४४।।

पीठासन का सहयोग प्राप्त
होगा समाप्त वित्तीय क्लेश।
विपुलार्थ-राशि मिल जाने से
होगा अस्त्रों का क्रय अशेष ।।४५।।

हितकर सम्मति ली मान तुरत
बन गये शिष्य दीक्षित विनीत।
शशिशेखर ने धर लिया वेश
संन्यासी का अतिशय पुनीत ।।४६।।

देखा पुनीत सुकृती सुशिष्य
साक्षात् पिनाकी-सम उदार।
खिल उठा महन्त जरठ जैसे
फुलबगिया में आयी बहार ।।४७।।

थे जटा-छटा से संशोभित
मंजरित आम्र-तरु के समान।
मानो तजकर कैलास-शिखर
आये शंकर करुणानिधान ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथवा उत्कर्ष प्राप्त करने
तप करने आया हो मनोज।
सादर करता वन्दना लोक
लख रूप शील बल तेज ओज ।।४९।।

संचरित दिव्यता की सबमें
संयम व्रत पूजार्चन द्वारा।
गुरु का प्रिय बना लोक का प्रिय।
दी बहा शुद्ध सात्त्विक धारा ।।५०।।

संधान अस्त्र का संचालन
त्यों मल्ल-कलाएँ सिखलाईं।
युवकों को ध्यान निदिध्यासन
आसन की विधियाँ बतलाईं ।।५१।।

युवकों में साधु चन्द्रशेखर ने
नव जागृति बलबूत भरा।
वर वीर विशदगाथाओं से
साहस शुचि शौर्य प्रभूत भरा ।।५२।।

प्रच्छन्न वेष धर कर विशेष
दृढ़ देश-प्रेम को फैलाया।
उस दिव्य देश में जन अशेष
द्वारा गौरव विशेष पाया ।।५३।।

पाकर सुशिष्य जर्जर महन्त में
यौवन फिर से लहराया।
पावस में यथा घनोदय से
नव अंकुर प्रचुर निकल आया ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उस क्रान्ति वीर का साधुरूप
आश्रम में उभर भले आया।
पर क्रान्ति-रूप उसका अनूप
अतृप्त पड़ा अति अकुलाया ।।५५।।

होता सुतृप्त मृग हरित खेत में
किन्तु न हो पाता मृगेन्द्र।
वह तभी तृप्त हो पाता जब
जाकर फाड़े दारुण गजेन्द्र ।।५६।।

जो गहन सिन्धु की तुंग तरंगों में
रहकर बढ़ता जाता।
वह महामत्स्य वापी विहार
लघु नीर मध्य कब सुख पाता ।।५७।।

हो सका न तुष्ट आरतीसे
उल्काग्राही वह कर कठोर।
चाहते चरण विचरण करना
चल रहा युद्ध जिस ओर घोर ।।५८।।

बम फटने के दारुण स्वर को
सुनने के इच्छुक श्रवण प्रवर।
होते न तृप्त सुनकर गायन
घण्टा-वादन पूजन के स्वर ।।५९।।

परपीड़क नर-अन्तक खल-गण
उन आंग्लों के दमनात्मक स्वर।
कातर दीनों के आर्तनाद
लेते निशीथ में निद्रा हर ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देखता स्वप्न में रण कराल,
झण्डा विशाल बढ़ फहराना।
जयघोष घोरसंघर्ष उग्र
उठ अंग्रेजों से भिड़ जाना ।।६१।।

पूजन में भजन-कीर्तन में
सोते-जगते दिन और रात।
माता का क्षीण करुण-क्रन्दन
सुन पड़ता था सायं-प्रभात ।।६२।।

होता प्रतीत ज्यों कानों में
आकर कहते हों शिवशंकर।
मेरी वाणी सुनकर उस पर
कर तो विचार कुछ वीर प्रवर ।।६३।।

क्या उचित तुम्हारा पूजार्चन
एकांत वास यों मन्त्रजाप।
जब खल करते हों घोर घात
माता करती हो जब विलाप ।।६४।।

देखो मन्दिर का लघु प्रदीप
एकाकी जो जलता रहता।
जो क्षीणकाय क्षणदा-क्षण में
घनघोर तिमिर दहता रहता ।।६५।।

देखो एकाकी बालसूर्य
नभ में निर्भय विचरण करता।
अगणित तारक-दल को दलकर
जलकर तम-तोम प्रबल हरता ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मत करो अस्त्र की चिन्ताएँ
अन्तर्बल को बढ़कर जानो।
स्रष्टा की जान सदिच्छा यह
स्वातन्त्र्य-युद्ध का व्रत ठानो ।।६७।।

शार्दूल-पुत्र मृगराज प्रबल
अतिरिक्त अस्त्र धरता न कभी।
दाढ़ें दारुण नख-दन्त तीक्ष्ण
डरते सचराचर जीव सभी ।।६८।।

सारे अस्त्रों में अग्रगण्य
जो सभी बलों में प्रबल गेय।
जो साहस शौर्य समन्वित शुचि
है वही आत्म-बल अप्रमेय ।।६९।।

तज दो मन्दिर के मृदुल वाद्य
रण के निनाद पर अब उतरो।
त्यागो मन्दिर की शंखध्वनि
रण की शंखध्वनि ध्वनित करो ।।७०।।

हे वीर वत्स ! यौवन अमूल्य
फिर कहाँ लौटकर आता है।
जो तीर निकल कर चला गया
वह लौट कहाँ फिर आता है ।।७१।।

मत करो अस्त्र की चिन्ताएँ
धरकर साहस धन चला करो।
बन आत्मदीप तम के विरुद्ध
हे वीरवत्स तुम जला करो ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मत करो प्रतीक्षा चलो वीर
भर कर निनाद हे सिंहसत्त्व।
भगदड़ मच जाती यहाँ वहाँ
सिंहागम का यह ही महत्त्व ।।७३।।

दृढ़ देश-भक्ति-पूरित उर में
मंथन होने लग गया सबल।
वह चरण न अपने रोक सका
चल पड़ा बना भूचाल प्रबल ।।७४।।

आश्रम की अतुलित रत्नराशि
धन वैभव, सुख-साधन अपार।
खग, मृग, वापी, उद्यान-लता
चुभते कण्टक ज्यों बार-बार ।।७५।।

था अर्धरात्रि का शून्य काल
संन्यासी का चोला उतार।
चल पड़ा वीर भूचाल सदृश
मन्दिर को करके नमस्कार ।।७६।।

था अमा निशा का अंधकार
बन आत्मदीप बढ़ चला वीर।
निर्भय चलता ही गया धीर
मानो छूटा हो प्रखर तीर ।।७७।।

कर कदली-दल का ध्यान मत्त
गजराज बढ़ा जाता जैसे।
दृढ़ देश-भक्ति पूरित शेखर-
भी चला जा रहा था वैसे ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

है व्यर्थ अर्थ की चिन्ताएँ
धन क्या उनको जो धैर्य-धनी।
कहता उर आगे बढ़ो वीर
मानो मेरी बातें इतनी ।।७९।।

कब रोक सका है सरिता को
गिरि का उन्नत व्यापक प्रसार।
प्रेमी समुद्र से मिलकर ही
पा सकी शान्ति दौड़ती धार ।।८०।।

लघुकाय दीप घनघोर तिमिर से
रंच मात्र भी डरा नहीं।
जूझता रहा रजनी भर वह
स्नेहिल था भय से भरा नहीं ।।८१।।

अहिवृश्चिक-वृन्द सरीसृप के
भेड़िए भयंकर केहरि-दल।
बाधाएँ दृढ़ निश्चय समक्ष
हो विनय स्वतः सब जातीं टल ।।८२।।

चितवनें चारु लोभन लोचन
मणि-कंचन हीरक-हार अमित।
भौतिक ,आकर्षण के समूह
कर्षित कर सकें न उनके चित ।।८३।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काकोरीखण्ड

हमारा व्रत स्वदेश-कल्याण
सज्जनों का करते हैं त्राण।
लूटते अंग्रेजों के कोष
दुर्जनों के हर लेते प्राण ॥६५॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्याग तम का काला परिधान
आभरण उडु के दिये उतार।
प्रात में मुदित हुआ आकाश
कुम्भ सोने का कर में धार ।।१।।

निशा को मित्र-हीन अवलोक
सो गया सरवर अधिक उदास।
प्रात में देख मित्र का रूप
कमल-नयनों में हुआ विकास ।।२।।

पक्षि-कुल में कोलाहल देख
लगे सब कहने धन्य प्रभात।
हुआ जिसमें है मित्रमिलाप
मिलित प्रियकरकोमल अवदात ।।३।।

मित्र-मण्डल के मध्य विशाल
बढ़ चला अधिक तेज तत्काल।
देख लो खिले वदन-अरविन्द
सुशोभित स्वर्णिम वर्ण रसाल ।।४।।

लताएँ लिपटीं विटप विशाल
खड़े ज्यों हरे दुपट्टे धार।
रश्मि से शोभित शिखर-प्रदेश
मुदित मित्रागम सुखद निहार ।।५।।

कष्ट-कर्षक सुख-वर्षक मित्र
सुशोभन कर शिखरस्थ विलोक।
दूर से आया देख प्रसन्न
व्याप्त सबमें प्रमोद-आलोक ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्राप्त शेखर शिखरस्थ सुमित्र
विकच मुख-पंकज मोद अनन्य।
सभी कहते भरकर उत्साह
मित्र-दाता प्रभात है धन्य ।।७।।

क्रान्तिकारी दल परम प्रसन्न
प्राप्त कर शेखर का संयोग।
विकट बन गये कटक के लोग
लगे करने रण के उद्योग ।।८।।

समर्पित होने लगे स्वशीर्ष
चल पड़ा विकट क्रान्ति-अभियान।
उठ गये अस्त्र दुष्ट-वध हेतु
पड़े संकट में रिपु के प्राण ।।९।।

क्रान्तिकारी रणरंगी वीर
ब्रिटिश-शासन के बने विरुद्ध।
मनस्वी साहस-सम्बल युक्त
कर रहे थे अति भीषण युद्ध ।।१०।।

जलाने लगे बने दावाग्नि
कुशासन का कानन घनघोर।
हुए भयभीत खलों के वृन्द
कुशासक कम्पित चारों ओर ।।११।।

देश का बहुत बड़ा विस्तार
क्रान्ति का हो सक्षम संचार।
चाहिए थी धन-राशि अपार
क्रीत हो सके अस्त्र-भण्डार ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्रान्ति के महामेध के मध्य
चाहिए धन-हविष्य का योग।
हुए चिन्तित यह तथ्य विचार
क्रान्ति से सम्बन्धित कुछ लोग ।।१३।।

हुआ योजित अधिवेशन अस्तु
जुटे दल के सदस्य साभार।
धनागम का अभाव लख लोग
प्रकट करने लग गये विचार ।।१४।।

सभासद बोला एक प्रबुद्ध
लक्ष्य कर दल में अर्थ-अभाव।
कोष के विना न चलता युद्ध
सलिल के विना न चलती नाव ।।१५।।

आंग्ल हैं साधन से सम्पन्न
विपुल बल वैभव कोष अपार।
करे क्या हम उड़ने का यत्न
न जिनको प्राप्त पंख-आधार ।।१६।।

बली अंग्रेज विपुल विस्तार
विना अस्त्रों के युद्ध-प्रसार।
गिराना मुक्कों से गिरि-शृंग
चलाना पोत विना पतवार ।।१७।।

व्यर्थ है रक्त बहाना बन्धु
न जब तक विपुल अस्त्र हो पास।
युवा-वध मात्र क्रान्ति का कृत्य
न रुचिकर मुझको शलभ-प्रयास ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कर दिये मैंने प्रकट विचार
करें आगे जो चाहें आप।
श्रवण करके यथार्थ के वाक्य
सभा सोचने लगी चुपचाप ।।१९।।

देख अधिवेशन में संकोच
निराशा-रजनी का विस्तार।
उठा उस महासभा के मध्य
वीर वर बोला वचन विचार ।।२०।।

"जानते आप सभी यह तथ्य
मनस्वी जन के सहज स्वभाव।
वीर वर करते नहीं विलाप
भले हों विघ्नों की बौछार ।।२१।।

महासागर गर्जित गम्भीर
गगन-चुम्बी गिरि-शृंग कराल।
देखकर उन्हें न रुकते वीर
पार कर जाते हैं तत्काल ।।२२।।

देखकर भीषण तिमिर-प्रसार
न करते विह्वल वीर विलाप।
तेज का करते हैं विस्तार
जलाते हैं दीपक चुपचाप ।।२३।।

न रोते धीर देख धन-कार्श्य
विषम-पथ पर भी चलते वीर।
दुखोदय दे जाता उत्कर्ष
मान यह रुकते कभी न धीर ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एक निर्वासित वित्त-विहीन
वीर का देखो दृढ़ उत्साह।
निरायुध वानर-दल था साथ
बना दीं महासिन्धु में राह ।।२५।।

दशानन लंकाधिप को जीत
किया चतुरंग चमू का नाश।
अकेले भारतीय धन-हीन
ने किया विजय-वरण सोल्लास ।।२६।।

उसी के वंशज हैं हम लोग
रक्त उसका ही हम में व्याप्त।
क्यों न अंग्रेजों को हम जीत
शक्ति को उनकी करें समाप्त ।।२७।।

धैर्य उत्साह वीर्य बल सत्त्व
हमारा सही वित्त वर्चस्व।
उसी से प्राप्त करें अमरत्व
वही है धन साधन सर्वस्व ।।२८।।

सुना मैंने ऐसा गुरुवाक्य
भरा रहता जिनमें उत्साह।
वीर विनयी जो धीर सुजान
लक्ष्मी तकती उनकी राह ।।२९।।

दुरासद आंग्ल चक्र-साम्राज्य
मानता है अभेद्य संसार।
तोड़ डालूँगा बन अभिमन्यु
भगा दूँगा कौरव-दल मार ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बनूँगा मैं चण्डांशु कराल
बींध कर महासिन्धु का वक्ष।
प्रचुर धन-वारि गिराकर शीघ्र
भरूँगा क्रान्ति-कोष का कक्ष ।।३१।।

गर्त के सदृश धनिक हैं गण्य
लूटना है उनको बेकार।
सिन्धु सम राज-कोष-विस्तार
लूट कर दूँगा वित्त अपार ।।३२।।

हरूँगा यों दुष्टों की नींद
हिला दूँगा साम्राज्य अडोल।
अभीप्सित स्वतन्त्रता को प्राप्त
करूँगा दे प्राणों का मोल ।।३३।।

पुरोधा योद्धा बनो अभीत
कसौटी बनते ये ही कष्ट।
सत्त्व का परिवर्धन अनिवार्य
धैर्य मत होने पावे नष्ट ।।३४।।

वाक्य सुन शेखर के सोत्साह
देख साहस बल वीर्य अपार।
घोर नैराश्य-पंक में मग्न
सभा का हुआ पूर्ण उद्धार ।।३५।।

सभा ने कर करतल-ध्वनि घोर
किया हर्षित हो अतुल निनाद।
दिया बहु साधुवाद साह्लाद
मिटा संव्याप्त समस्त विषाद ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मिटा सब सोच और संकोच
भर गया आशा-जन्य प्रकाश।
धारकर उर में नव अभिलाष
गये सब निज गृह को सोल्लास ।।३७।।

यत्न कर दल ने जानी बात
लखनऊ को धन-कोष अपार।
निशा में ले जायेगी रेल
रहेगा व्याप्त विपुल अँधियार ।।३८।।

मुदित दल हुआ जानकर तथ्य
गया फिर काकोरी के पास।
छिप गया लख स्थल उपयुक्त
अस्त्र से सज्जित हो सोल्लास ।।३९।।

बने बिस्मिल थे दल के मुख्य
साथ 'रोशन' 'सुरेश', 'सान्याल'।
वीर अश्फाक उन्हीं के साथ
जुटे योगेश 'मुकुन्दीलाल' ।।४०।।

वहीं 'आजाद' वीर के साथ
रहे 'प्रणवेश' और 'राजेन्द्र'।
सभी दृढ़निश्चय क्रान्तिप्रवीर
बली 'गोविन्द' और 'भूपेन्द्र' ।।४१।।

सभी ऊर्जस्वल परम प्रवीर
धरे हो साहस यथा शरीर।
क्रान्ति के विशदाग्रह से युक्त
देश सेवार्पित सभी सुधीर ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नीड़ में आते उड़े विहंग
जानकर आया सायंकाल।
क्रान्तिकारी तजकर निज नीड
चल पड़े लक्ष्य हेतु तत्काल ।।४३।।

वृष्टि-युत थी पावस की रात
घटावृत लक्षित व्योम विशाल।
तड़ित-कोड़े की खाकर मार
गरज उठते वारिद विकराल ।।४४।।

कर रहे ज्यों गजेन्द्र चिग्घाड़
तीव्र अंकुश का हुआ प्रहार।
दौड़ते धूमशकट ज्यों विकट
तीव्र ध्वनि करते बारंबार ।।४५।।

चन्द्र-मौक्तिक लुण्ठन के हेतु
या कि बम का विस्फोट कराल।
किया लुण्ठक मेघों ने दौड़
तीव्र ध्वनि से नभ भरित विशाल ।।४६।।

गगन से गिरते जल के बिन्दु
देख कर होता यही प्रतीत।
टपकता है प्रस्वेद अपार
हुआ ज्यों नभ अत्यधिक सभीत ।।४७।।

आर्द्र अम्बर अवनी थी आर्द्र
आर्द्र थे पूरे निभृत प्रदेश।
आर्द्र पट केश, वदन थे आर्द्र
नखत आर्द्रा में आर्द्र अशेष ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आंग्ल जो थे अनार्द्र अति रुक्ष
लूटने उनका कोष विराट।
प्रतीक्षा-रत थे वीर समग्र
शकट की जोह रहे थे बाट ।।४९।।

वहीं काकोरी के सन्निकट
छिपे थे क्रान्ति वीर विकराल।
निकल उनमें से एक प्रवीर
गया स्टेशन पर तत्काल ।।५०।।

दूर से देखा शकट स्वरूप
उगलता था आलोक अपार।
सुनाता आता झकझक शब्द
लदा था राजकोष का भार ।।५१।।

विनायक का वन्दन कर प्रथम
किया बजरंगबली का ध्यान।
देश सेवार्पित शेखर वीर
यान पर चढ़ा दौड़ बलवान ।।५२।।

चल पड़ा छुकछुक करता यान
लौह पथ पर अविकल अश्रांत।
अर्गला खिंची रुका तत्काल
निकट ही जहाँ व्याप्त था ध्वांत ।।५३।।

घोर महिषाकृत इंजन व्यग्र
न आगे बढ़ पाया गति-हीन।
न जैसे बढ़ पाता पद एक
सुपथ पर खल-मन महा मलीन ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गर्त में रहे छिपे जो वीर
यान को देखा ज्यों गति-हीन।
दौड़कर बड़े वेग के साथ
चढ़ गये चटपट परम प्रवीण ।।५५।।

यान का कोष-कक्ष अवलोक
हर्ष का उमड़ा पारावार।
लौह-पेटिका लखी सन्निकट
बन्द था जिसमें कोश अपार ।।५६।।

कर रहे रक्षा रक्षक-वृन्द
भुशुण्डी लम्बित पृष्ठ-प्रदेश।
कोष देखे अपार इस भाँति
सुरक्षा का प्रबंध सविशेष ।।५७।।

यथा मुक्ता गज-मस्तक-मध्य
यथा मणि फणि-फण में हो लीन।
कोष संरक्षित हुआ प्रतीत
अमृत-घट ज्यों वासुकि-आधीन ।।५८।।

सुरक्षित राजकोष यों देख
हुआ उनमें न कहीं भय-लेश।
सुधा-घट पन्नग-मध्य विलोक
न डरता है जैसे विहगेश ।।५९।।

मधु-मक्षिका-रक्षित मधु का कोष
उच्च तरु पर लम्बित सविशेष।
मधुकढ़े में न कहीं भय-लेश
काढ़ लेता मधु पहुँच अशेष ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देख आरक्षी-रक्षित कोष
क्रान्तिकारी हो गये निहाल।
हाथ में बम लेकर बम बोल
कोष पर टूट पड़े तत्काल ।।६१।।

तेज से दीप्त उग्र मुख देख
छिपे आरक्षी-गण तत्काल।
यथा छिप जाते तारक-वृन्द
देखकर अरुणोदय का काल ।।६२।।

कर उठे क्रान्तिवीर उद्घोष
"सुनें यात्रीगण बन्धु तमाम।
रहें निर्भय न करें भय अल्प
यहाँ भय का न कहीं कुछ काम ।।६३।।

न हम हैं चोर लुटेरे नीच
न हम हैं क्रूर कृतघ्न जघन्य।
देश के लघु किंकर हम लोग
मातृ भू के हैं भक्त अनन्य ।।६४।।

हमारा व्रत स्वदेश-कल्याण
सज्जनों का करते हैं त्राण।
लूटते अंग्रेजों के कोष
दुर्जनों के हर लेते प्राण ।।६५।।

न हम लुण्ठक बाधक वटमार
जान लें आप हमें सुस्पष्ट।
आप सब निरातंक हों बंधु
करेंगे नष्ट आपके कष्ट ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आप सब सुखी स्वस्थ हों बन्धु
प्राप्त स्वातन्त्र्य-जन्य सुख-सार।
करें कल कूजन विहग समान
भरें गुण-गौरव, मोद अपार ।।६७।।

सुखद स्वातन्त्र्य प्राप्त कर देश
शिखर पर उन्नति के चढ़ जाय।
बढ़े अनुदिन शशि-कला समान
बने सर्वोत्तम यों बढ़ जाय ।।६८।।

आपके धन की हमें न चाह
चाहिए आशिष, वही पर्याप्त।
वही दुर्गम पथ का पाथेय
रहेगा जीवन में संव्याप्त" ।।६९।।

समाश्वासित यों यात्रीवृन्द
तुष्ट हो पाया मोद अपार।
क्लेश-सागर-संतारण हेतु
दिया आशीष-पोत पतवार ।।७०।।

शुभाशिष पाकर परम प्रसन्न
लूटने हेतु राज्यधन-कोष।
हाथ में बम लेकर बम बोल
बेग से दौड़े सभी सरोष ।।७१।।

क्रान्तिवीरों के वदन विलोक
दीप्त पावक समान द्युतिमान।
भगे आरक्षी लेकर प्राण
प्रभंजन-प्रेरित मेघ-समान ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बना आरक्षी-शून्य सुकक्ष
किये तब निर्भय वीर प्रवेश।
देखने लगे पिटक दुर्भेद्य
लौह-निर्मित था पुष्ट विशेष ।।७३।।

पड़ा था पिटक चुनौती-पूर्ण
भरे उर में धन-कोष अपार।
प्रभेदन हेतु किये प्रारम्भ
दनादन घन का घोर प्रहार ।।७४।।

किये वे प्रबल प्रयत्न परन्तु
पिटक वह पुष्ट न सके विदार।
देख आये शेखर बलधाम
लगे करने घनघोर प्रहार ।।७५।।

व्याघ्र सम बली दीर्घ दृढ़ बाहु
पिटक पर किया कठोर प्रहार।
तोड़ डाला उसको तत्काल
निकाला बाहर कोष अपार ।।७६।।

चपल चपला-दृग द्वारा देख
दृश्य अद्भुत अपूर्व सोल्लास।
मेघ गुरु गर्जन-मिस तत्काल
दे उठा साधुवाद आकाश ।।७७।।

टूटते ही वह पिटक विशिष्ट
बरसने लगा कोष-जलधार।
क्रान्ति-कृषि के सिंचन के हेतु
बना उपयोगी मेघ उदार ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कोष-पय पाने हेतु यथेष्ट
गाय-सम दुह डाले वह यान।
तदन्तर उसको किया विमुक्त
अभीप्सित दिशि में करे पयान ।।७९।।

हरण कर बलपूर्वक बलधाम
अभीप्सित राज-कोष तत्काल।
क्रान्तिकारी बलिदानी वीर
गये इच्छित दिशि को खुशहाल ।।८०।।

चपल चपला नर्तन कर उठी
घटा की कलशाटिका पसार।
गगन शाबाशी देने लगा
गरज कर उनको बारंबार ।।८१।।

विरोधी आरक्षी दल-हेतु
लगा घन-गर्जन ज्यों धिक्कार।
उन्हें तर्जन करता था घुमड़
उमड़ कर वर्जन बारंबार ।।८२।।

मेघ के म्यान मध्य से व्योम
वृहद् चपला कृपाण को खींच।
गरज कर कहता बारंबार
क्रान्ति-पथकण्टक बनो न नीच ।।८३।।

जा रहा दल, बल से धन छीन
न उसमें था किंचित् भय-लेश।
छीन वासुकि के फण से रत्न
जा रहा ज्यों गर्वित विहगेश ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धूम नैराश्य वमन कर घोर
साथ ले कोष-हीन वह कक्ष।
छुकच्छुक करता जाता यान
धड़कता हो ज्यों उसका वक्ष ।।८५।।

पकड़ धीरे-धीरे गति तीव्र
सर्प की भाँतिं सरकता चला।
तिमिर में क्रमशः हुआ विलुप्त
हृदय में शोक-अग्नि को जला ।।८६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बलिदानखण्ड

देशानुराग तप-त्याग रहा
कुछ भोग-भाग से काम न था।
केवल अर्पण ही अर्पण था
पद-लोभ-लाभ का नाम न था ॥११/१३१॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जब निशा निशापति के विरुद्ध
प्राची में बम-विस्फोट हुआ।
कम्पित तारक छिप गये
तिमिर उड़ गया भयानक चोट हुआ ।।१।।

वारिद कल कम्बल हटा सूर्य
किरणों की छड़ी लिये निकला।
आशा नवीन अनुराग नया
रवि के भक्तों में उमड़ चला ।।२।।

तब कोक-कोकनद के दल में
शुचि सरवर के निर्मल जल में।
कोमल शाद्वल के अंचल में
संव्याप्त राग भू-मण्डल में ।।३।।

उस निशानाथ के मुखप्रेक्षक
जो चाटुकार चालू चकोर।
जो कुमुद पक्षधर शशधर के
जो तम-प्रेमी तारे अथोर ।।४।।

रवि-रक्तानन चमका जैसे
हौसले सभी के पस्त हुए।
निस्तेज, लुटी मुख-श्री सबकी
सबकेसब अस्त-व्यस्त हुए ।।५।।

काकोरीकाण्ड श्रवण करके
काकोदर सन्निभ राज्यपाल।
दण्डाहत सर्प सदृश साँसें
भरता था, दृग थे लाल-लाल ।।६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उन अंग्रेजों को लगा कि जैसे
सिर पर उनके पैर पड़ा।
आतंकित शंकित साथ-साथ
प्रतिशोध प्रबल उनमें उमड़ा ।।७।।

उन देश भक्त वर वीरों को
अभियुक्त प्रचण्ड करार दिया।
दमनोद्यत क्रूर कुशासन ने
दण्डन का प्रबल विचार किया ।।८।।

काकोरी से सम्बद्ध सकल
आंगल बल द्वारा निगृहीत।
दण्डित शासन से किये गये
इक्कीस क्रान्तिकारी पुनीत ।।९।।

बिस्मिल रोशन अश्फाक वीर
राजेन्द्र लाहिड़ी व्रतधारी।
शूली पर चढ़ा गये मारे
काकोरिकाण्ड के पथचारी ।।१०।।

अभियुक्त सभी काकोरी के
थे गये देश में पकड़ाये।
स्वाधीन बने विचरण करते
आजाद अकेले बच पाये ।।११।।

सम्पूर्ण देश में वेश बदल
घूमते रहे इच्छानुसार।
चर चतुर न पता लगा पाये
किस ओर गये कब किस प्रकार ।।१२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उनको न प्रशासन पकड़ सका
        करता ही रहा प्रयास अथक।
द्रुत विद्युतग्नि को कौन पकड़
        पाया घन-वन में घुस अब तक ।।१३।।

शूलावतार शशिशेखर का
        उरशूल सदृश वह शशिशेखर।
देता ही रहा अपार कष्ट
        चुभ कर उर में ज्यों तीर प्रखर ।।१४।।

जैसे सागर का जल अपार
        बढ़ जाता है शशि को निहार।
उत्साह देश का बढ़ता त्यों
        साहस प्रवीर का लख अपार ।।१५।।

सत्ता प्रमत्त दमनोद्यत थी
        निज दमन-चक्र संचार किया।
वर वीर देश भक्तों के वध-
        का निंदित क्रूर विचार किया ।।१६।।

साइमन कमीशन भेज दिया
        खण्डित हो जाय अखण्ड देश।
करने लग गया विरोध उग्र
        सम्पूर्ण देश उसका विशेष ।।१७।।

साण्डर्स आंग्लअधिकारी ने
        फिर अत्याचार अपार किया।
पंजाब केसरी पर खल ने
        लाठी से घोर प्रहार किया ।।१८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

डोली अवनी अम्बर डोला
बाँसों उछला सागर अनन्त।
पर्वत विशाल डगमगा गये
ज्वाला परिपूरित दिग-दिगन्त ।।१९।।

उल्काएँ गिरने लगीं घोर
विक्षुब्ध दिशाएँ दिखलातीं।
साण्डर्स हुआ शंकित प्रभूत
पलकें न नींदसे झँप जातीं ।।२०।।

शशिशेखर का मुख दहक उठा
कल्पांत-काल की ज्यों ज्वाला।
"वध खल का मैं कर डालूँगा
प्रण कठिन वीर ने कर डाला" ।।२१।।

वे अन्य क्रान्तिकारी भी जो
थे पावक-सम दाहक कराल।
समवेत प्रतिज्ञा किये सभी
भुजदण्ड उठा अपने विशाल ।।२२।।

"पंजाब केसरी को जिसने मारा
वह निश्चय निपट श्वान।
उस क्रूर कलंकी को हम सब
मारेंगे कुत्ते के समान ।।२३।।"

साण्डर्स-हनन का निश्चय कर
चल पड़े वीर भर कर अमर्ष।
छिपकर बैठे निभृतस्थल में
बम को कर में लेकर सहर्ष ।।२४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

घातोपयुक्त निभृतस्थल लख
वधयोग्य भूमि चुनकर निश्चल।
साण्डर्स-हनन के हेतु विकल
हो गये प्रतीक्षा-निरत सकल ।।२५।।

सुन यान-नाद आगमन जान
हो सावधान बम-हस्त वीर।
करने लग गये प्रहार घोर
उद्यत वध को अतिशय अधीर ।।२६।।

विस्फोट-नाद-से परिपूरित
हो गयी भूमि, पूरा प्रदेश।
भगदड़ मच गयी तुरंत वहाँ
हिल गया खलों का उर अशेष ।।२७।।

गिर गया फिरंगी यान-सहित
उड़ गयी देह हो खण्ड-खण्ड।
बम-अग्नि दग्ध गत-प्राण हुआ
पहुँचा पिशाच यमपुर प्रचण्ड ।।२८।।

बम-जन्य नाद अतिशय प्रचण्ड
छा गया धूम का घन कराल।
भ्रम होने लगा लोक में यह
हो गया उपस्थित प्रलय-काल ।।२९।।

आतंक-वृत्त में आने की
हिम्मत न किसी में हो पाई।
सहयोगी क्रान्ति-कर्मियों से
आजाद वीर बोला भाई ।।३०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

"अंग्रेज कठोर धृष्ट खल हैं
        है क्षमा दया उनमें न कहीं।
श्रेयस्कर है समयोचित है
        भग चलो, यहाँ पर रुको नहीं ।।३१।।

प्रिय मित्र अरे बटुकेशदत्त
        हे भक्तसिंह आदिक प्रवीर।
मत करो समर्पण रिपुओं को
        समयानुसार भग चलो धीर" ।।३२।।

ऐसा कहकर मृत चालक के
        पट को उतार चटपट पहना।
पार्श्वस्थ यान पर बैठ तुरत
        चल पड़ा वीर तूफान बना ।।३३।।

पल भर में ओझल हो दृगसे
        निकला पुर के बाहर जाकर।
धरकर सुवेश संन्यासी का
        गाने लग गया भजन सुन्दर ।।३४।।

दल दौड़ा जो पकड़ने हेतु
        लौटा निराश वह ठगा गया।
रटता ही रहा वृथा रह-रह
        "वह कहाँ गया, वह कहाँ गया" ।।३५।।

पर भीड़ मध्य धर लिये गये
        वे भक्तसिंह बटुकेशदत्त।
कारागृह में निक्षिप्त हुए
        बलिदान-पूत स्वातन्त्र्य-मत्त ।।३६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वे भक्तसिंह बटुकेशदत्त
भारत माता के दो प्यारे।
साण्डर्स-हनन बमकाण्ड हेतु
शूली पर चढ़ा गये मारे ।।३७।।

सोचा शेखर ने देश-मध्य
ऐसा उद्योग किया जाये।
बम बनें विपुल यों अंग्रेजों को
मार निकाल दिया जाये ।।३८।।

बम विस्फोटों से भरित त्वरित
यह भारत-भूमि समस्त हुई।
फल हुआ कि सत्ता सार्वभौम
अंग्रेजों की भय-ग्रस्त हुई ।।३९।।

आतंकित अंग्रेजों में अब
भर दिया गया ऐसा विचार।
यह वीर भूमि सह पायेगी
आगे न अधिक दासता-भार ।।४०।।

जाओ निज देश विलायत को
छोड़ो यह भारत-भू सारी।
अथवा तत्काल करो सीधे
यमपुर जाने की तैयारी ।।४१।।

यदि प्राण तुम्हें प्यारे लगते
तज दो भारत की भू प्यारी।
अथवा गुलिकाहत करो शीघ्र
यमपुर जाने की तैयारी ।।४२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आसेतु हिमालय धधक उठी
आतंक-अग्नि शशिशेखर की।
खल-दल उत्तापित हुए सकल
दुष्टों की दृढ़ छाती दरकी ।।४३।।

आंग्लों के हेतु चन्द्रशेखर
भीषण भय का पर्याय बना।
उनके नयनों की नींद गयी
पीड़ित पूरा समुदाय बना ।।४४।।

शेखर की प्रबल प्रताप-अग्नि
निशि-बासर बढ़ती जाती थी।
रिपुवन को दावानल बनकर
कर कम्पित उसे जलाती थी ।।४५।।

आजाद सिंह से आतंकित
था शासन अतिशय घबराया।
उनके विग्रह के हेतु चरों का
जाल देश में फैलाया ।।४६।।

बहुचतुर चरों का सक्षम दल
सम्पूर्ण देश में था छाया।
शेखर स्वतन्त्र विचरण करते
पर पकड़ नहीं उनको पाया ।।४७।।

आतंकित पूर्ण प्रशासन था
आतंकित आंगल दल सारा।
थे अट्ठाइस वारंट कटे
उन पर विभिन्न राज्यों द्वारा ।।४८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शंकित शासन ने शेखर को
संकट कराल माना बढ़कर।
पकड़ाने हेतु घोषणा की
धनराशि प्रचुर उनके ऊपर ।।४९।।

आजाद क्रान्ति के धुर सशक्त
विक्रान्त बली केहरि-समान।
हैं क्रान्ति-पोत-पतवार प्रबल
तप-त्याग-युक्त गुण में महान ।।५०।।

यह तथ्य सोच शुभकांक्षी कुछ
प्रस्ताव रखे प्रेमी पवित्र।
जब तक संकट का विषम काल
तुम करो रूस में वास मित्र ।।५१।।

साम्राज्यवादियों का अन्तक
है बना बली यह रूस देश।
समयोचित रूस प्रवास मित्र
हित सोच क्रान्ति का ही विशेष ।।५२।।

तुमसे अनन्त आशा हमको
हितप्रद प्रस्ताव विचार करो।
इस विषम परिस्थिति में विशेष
तुम रूस-वास स्वीकार करो ।।५३।।

आजाद विहँस बोले मित्रों
प्रस्ताव न उचित दिखाता है।
आखेटक भय से सिंह कहो
बन छोड़ दूर क्या जाता है ।।५४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

खटमल के भय से खाट छोड़कर
दूर सिधाना नीति नहीं।
शोणित पायी मत्कुण वध ही
है धर्म सनातन नीति सही ।।५५।।

शिवराज वीर राणाप्रताप
क्या देश छोड़ अन्यत्र गये।
फिर मैं ही क्यों स्वीकार करूँ
विपरीत वृत्ति व्यवहार नये ।।५६।।

साहस-कन्दुक से खेलूँगा
मैं सदा करूँगा वास यहीं।
मैं नींद हरूँगा दुष्टों की
स्वीकार न मुझे प्रवास कहीं ।।५७।।

चण्डांशु-तुल्य तेजस्वी वह
फैलाकर अपना तेज-जाल।
संतापित करता रहा वीर
साम्राज्य-महासागर विशाल ।।५८।।

गतिशील काल गतिशील रहा
आ गया शिशिर फिर मतवाला।
कर में कठोर हिम-दण्डधार
तीखे तुषार का ले भाला ।।५९।।

दुर्धर्ष वायु भी वशी बना
शिशिराज्ञा से हिम-भार धार।
घर में घुस वृद्धों पर विशेष
निर्बल पर करने लगा वार ।।६०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आजादवीर की माता श्री
वर वीर-प्रसू वृद्धा विशेष।
हो गयी ज्वरातुर जरातुरा
दे दिया शिशिर ने घोर क्लेश ।।६१।।

कुछ क्रान्ति-सखा शशिशेखर के
यह दुखकर समाचार सुनकर।
उस ग्राम भावरा हेतु चले
पहुँचे समीप जाकर सत्वर ।।६२।।

था उपत्यकाध्यासित प्रदेश
वन-शैल-खण्ड-पूरित ललाम।
ज्यों तीर्थ भावरा ग्राम, लगे
भावाभिभूत करने प्रणाम ।।६३।।

आजाद यहीं पर आये थे,
जब जला वदरका पुण्य ग्राम।
इस शरण-प्रदाता पुण्य धाम को
किये सभी झुककर प्रणाम ।।६४।।

गुल्मावृत वृत्त अखण्ड युक्त
पावन प्रसिद्ध प्रिय सिद्ध-धाम।
उस ग्राम तपोधन-सेवित को
वे सभी किये झुककर प्रणाम ।।६५।।

थी जीर्ण झोपड़ी पड़ी जहाँ
धन-हीन पिता का था निवास।
अधनी उन भाव-धनी को लख
बरसे दृग उनके सहोच्छ्वास ।।६६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

थी खाट टुटी पट जीर्ण-शीर्ण
ज्वर ग्रस्त जरातुर पीड़ित तन।
गौरी ज्यों जननी दीख पड़ी
पूज्या को झुककर किये नमन ।।६७।।

शुभ आशिष मिला मनोनुकूल
गत-शूल सभी जन थे निहाल।
देने रुपये हजार लगे
उपचार हेतु तत्क्षण निकाल ।।६८।।

दृग-अम्बुज में भर अम्बु-विशद
बोली माता हे वत्स प्रवर।
ये धातु-खण्ड क्या हो सकते
इस प्रेम-भावना से बढ़कर ।।६९।।

भारतमाता वह माता है,
जो मुझसे भी है पूज्य प्रवर।
उस अश्रुमुखी का मुख देखो
उसको ही प्रथम करो विज्वर ।।७०।।

मेरी बलीयसी इच्छा है
इस धन समग्र को पास धरो।
क्रय-हेतु अस्त्र के इस धन का
पुत्रों पूरा उपयोग करो ।।७१।।

प्रार्थना बहुत की पर माँ ने
पैसा न एक भी ग्रहण किया।
आशीर्वचन-धन दे दुर्लभ
जननी ने उनको विदा किया ।।७२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आजाद वीर को जब सबने
करना चाहा वह धन प्रदान।
बलिदानी ने भी वही दिया
उत्तर अपनी माँ के समान ।।७३।।

सायं अपने आवास मध्य
बैठे जब एकाकी आये।
उर-अन्तरिक्ष में तारक सम
निकले विचार आकर छाये ।।७४।।

"यह जननी वही पुनीता है,
जिसने है मुझको जन्म दिया।
शुचि सुधा सदृश निजदुग्ध पिला
पाला पोषा तन पुष्ट किया ।।७५।।

अब वही जरा में ज्वरातुरा
देखने न यदि जा पाऊँगा।
होगी अक्षम्य धृष्टता मैं
पूरा कुपुत्र कहलाऊँगा ।।७६।।

कल गोपनीय वार्ता हितार्थ
मुझको प्रयाग जाना ही है।
फिर क्रान्तिकारियों तक निश्चित,
निर्णय को पहुँचाना ही है ।।७७।।

जब सम्पादित हो जायेगा
पूरे वार्ताक्रम का विधान।
माँ के दर्शन के हेतु करूँगा
ग्राम भाँवरा को पयान ।।७८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आया प्रभात फिर प्राभातिक–
चर्चा करके विधिवत् समाप्त।
प्रस्थित हो गये प्रयाग–हेतु
थे भाव हृदय में विविध व्याप्त ।।७९।।

अल्फ्रेड–पार्क में पहुँच वहाँ पर
गुप्तस्थल का वरण किया।
भावी योजना बनाने का
निर्णय सबने तत्काल लिया ।।८०।।

घन गगन–पटल पर छाये थे
था शीत परम ठिठुरन वाला।
उपकार भुलाकर मेघों ने
रवि–मण्डल पर घेरा डाला ।।८१।।

घेरे में कर, कर तेज–हरण
गर्जन करते थे जोर–जोर।
पीड़ा की वर्षा करते थे
थे शीत बढ़ाते सभी ओर ।।८२।।

थे विटप काँपते बार–बार
घन घोर घात का कर विचार।
थे विकल विहग बैठे विषण्ण
था मन्द पड़ गया पवन–चार ।।८३।।

तरु पवन–चार मिस सोच्छ्वास
पातित कर सम्मुख पत्र–जाल।
खग–रुत–मिस विकल सुनाते थे
संदेश यही दाहक कराल ।।८४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

निज स्वार्थ-लग्न खल बन्धु-वर्ग
ही करता है घनघोर घात।
देखो तरु-खण्ड कुठार-लग्न
पादप का कर देता निपात ।।८५।।

था एक अधम खल मलिन मित्र
शठ निंद्य नीच विज्ञात-वृत्त।
लोलुप लुण्ठक पापी कृतघ्न
अति कुटिल क्रूर अनयी दुर्वृत्त ।।८६।।

अति अधम घृणित जालिम जघन्य
विश्वासघात-रत विगत मान।
कपटी कलंक कटु कीट-कल्प
काला काकोदर के समान ।।८७।।

था दल का ही लोलुप सदस्य
सुन पुरस्कार का धन अपार।
लोभाभिभूत हो पतित बना
विश्वासघात का कर विचार ।।८८।।

खल बलाध्यक्ष के पास पहुँच
सूचना उसे कर दी प्रदान।
सौभाग्य परम, आजाद सिंह
है इसी नगर में विद्यमान ।।८९।।

अल्फ्रेडपार्क में समुपस्थित
सहयोगी मित्रों के समेत।
स्वर्णिम अवसर को मत खोएँ
प्रस्थान करें हो कर सचेत ।।९०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वह बावरनाट नामधारी
जो पुलिस अधीक्षक अधिकारी।
दुर्निग्रह का निग्रह विचार
हो गया मुदित मन में भारी ।।९१।।

शस्त्रास्त्र-सुसज्जित बल अपार
गर्वीला शक्ति सँभाल चला।
अल्फ्रेड पार्क के प्रति तुरन्त
वह दारुण दुष्ट कराल चला ।।९२।।

लटकी बन्दूकों से जिनके
कंधे काले, दृग लाल-लाल।
अल्फ्रेडपार्क के हेतु चले
वरवीर बाँकुरे दल कराल ।।९३।।

अल्फ्रेडपार्क को घेर लिये
सन्धान-दक्ष दल पूर्णतया।
बलगर्वित दल बन्दूक प्रबल
से भर पूरा परिवेष गया ।।९४।।

जो प्रबल पुलिस अधिकारी था
बोला गर्जन करता दुरन्त।
अविलम्ब समर्पण करो
अन्यथा मारूँगा गोली तुरन्त ।।९५।।

बल देख बली यह जान गया
संकट प्राणान्तक है आया।
बोला गर्जन कर सिंह-सत्त्व
अवनी-अम्बर सुन थर्राया ।।९६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

"धिक्कार कठोर कुटिल को है
कायर तू मत मुझको डर दे।
क्यों डींग मारता है श्रृगाल
जो कुछ करना हो वह कर ले ।।९७।।

एकाकी देख केसरी को
घेरा डाला ले बल विशाल।
इस कुटिल कृत्य कटु को धिक् है
धिक् है तुझको कायर श्रृगाल ।।९८।।

मैं तो आजाद रहा अब तक
आजाद देह भी छोड़ूँगा।
परतन्त्र देह धारण करके
प्रण अपना कभी न तोड़ूँगा" ।।९९।।

था नाम विसेसर भारतीय
आंग्लों का पिट्ठू अधिकारी।
उसने शेखर को गाली दी
तड़-तड़ करके गोली मारी ।।१००।।

सुनकर कुवाच कटुभाषी के
बोला शशिशेखर इसप्रकार।
धिक्कार तुझे शठ भारतीय
धिक्कार तुझे खल चाटुकार ।।१०१।।

लोभियों चापलूसों ने मिल
भारत को विकृत बनाया है।
दुर्वचनी तुझे दण्ड दूँगा
तू कुल कलङ्क बन आया है ।।१०२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मैं सभी जनों के हेतु युद्ध-रत
तथ्य भूल क्यों जाता है।
इसमें न स्वार्थ मेरा कुत्ते सम
क्यों आचरण दिखाता है ।।१०३।।

लक्ष्य-च्युत नीच बिसेसर पर
उस लक्ष्य-दक्ष ने वार किया।
दृढ़ दीर्घ वक्ष ने चाटु-दक्ष के
मुख-प्रदेश को उड़ा दिया ।।१०४।।

कटुवादी बदन विसेसर का
दन्तावलि कठिन कपोल सहित।
गुलिकाहत पूरा हनुप्रदेश
भूपर उस खल का विनिपातित ।।१०५।।

वीभत्स विदारित मुख द्वारा
सूचित कर दिया गया बावर।
देखो दुर्दशा पालतू की
है सिंह श्वान में क्या अन्तर ।।१०६।।

इसके ही साथ-साथ देखो
भारतमाता का पय प्रधान।
वह कितना उत्तम ऊर्जस्वल
बावर हो जाओ सावधान ।।१०७।।

निज बल-विस्तार विलोक विपुल
गर्वीला धर मत गर्व-भार।
केसरी अकेला भी श्रृगाल की
सेना को सकता विदार ।।१०८।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आतंकित बावर ने तुरन्त
श्रीनाटथ्री गोली अति कराल।
दी चला गया बौखला विकट
गिर जाता जिससे गज विशाल ।।१०९।।

छूटी गोली जा जंघा में
इस पार लगी उस पार हुई।
गिर पड़ा वीर आजादसिंह
पैदा वेदना अपार हुई ।।११०।।

अति पुष्ट पीन घायल जंघा
शोभित होती थी इसप्रकार।
मानो साखू की शाखा पर
दंताङ्कित हो गज का प्रहार ।।१११।।

आहत मृगेन्द्र-सा उग्र बना
साहस अपार उत्पन्न किया।
वह लहू-लिप्त सरका बढ़कर
पार्श्वस्थ विटप का ओट लिया ।।११२।।

देने लग गया वहीं से वह
रिपु-घातों का उत्तर प्रचण्ड।
उस चण्ड प्रहारक बावर की
दी तोड़ कलाई खण्ड-खण्ड ।।११३।।

घन विद्युतग्नि वर्षक बनकर
गोली की बूँदें बरसाता।
अरि-गर्व-विनाशक वीर उन्हें
तृण-तुल्य भस्म करता जाता ।।११४।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अरि-बल से घिर संग्राम निरत
आजाद वीर शोभा पाता।
बादल दल को किरणों द्वारा
बीधता सूर्य ज्यों दिखलाता ।।११५।।

दूषण-युत बल से घिरा हुआ
एकाकी करता रहा युद्ध।
ज्यों राम अकेले लड़ते थे
खरदूषण से हो परम क्रुद्ध ।।११६।।

तड़-तड़ करके गोलियाँ चलीं
तब एक घड़ी से भी ऊपर।
गुलिकाग्नि-दग्ध भट विकट विदारित
बिछे दीखते थे भूपर ।।११७।।

घायल दाहिनी कलाई जब
सन्धान-योग्य रह गयी नहीं।
बाएँ कर से पिस्तौल पकड़
लग गया चलाने उसे वहीं ।।११८।।

बाएँ कर से सन्धान-निष्ठ
बन गया सव्यसाची समान।
गोलियाँ बरसतीं आग, शत्रु-
दल भाग चले तज घमासान ।।११९।।

हुंकार विकट ध्वनि से पूरित,
गोलियाँ बुन्द-ज्यों बरसाता।
प्रज्वलित नयन, रक्ताभ बदन
विद्युत-युत घन ज्यों छवि पाता ।।१२०।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गरजा आहत आजाद, प्रलय-
घन सम भीषण रव हुआ व्याप्त।
'मृग-दल को मार भगाने में
आहत मृगेन्द्र भी है पर्याप्त' ।।१२१।।

यों कह बरसाने लगा घोर
गर्जन करता गुलिकाग्नि नीर।
अरि-दल जलने लग गया
लगा भगने होकर आहत अधीर ।।१२२।।

घेरे रह गया शत्रु का दल
गुलिका का कोष समाप्त हुआ।
बच सकी एक ही गोली तब
उर में विचार यह व्याप्त हुआ ।।१२३।।

'की कठिन प्रतिज्ञा है मैंने
आजाद रहूँगा जीवन भर।
परतन्त्र प्राण धारण करना,
स्वीकार नहीं मुझको क्षण भर ।।१२४।।

यह सोच स्वाभिमानी ने निज
प्रिय प्राणों का भी मोह त्याग।
वर वीर व्रती बलिदानी ने
गोली ली सिर पर स्वयं दाग ।।१२५।।

जयकार सहित विस्फोट हुआ
ध्वनि-पूरित धरती-आसमान।
विस्फोट जयोच्च शब्द पर चढ़
शिव-लोक गयी आत्मा महान ।।१२६।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

परिपूरित दशों दिशाएँ थीं
पूरित था पूरा आसमान।
पवमान सदृश गतिमान वीर
हो धन्य धीर सुकृती सुजान ।।१२७।।

विद्याधर-हस्त-विमुक्त पुष्प
जयध्वनि-पूरित दिङ्मुख द्वारा।
स्वागत करता था अन्तरिक्ष
यों बहा प्रतिध्वनि की धारा ।।१२८।।

आजादवीर-चरिताश्रित जो
अम्बर से छनकर आती थी।
जन-यूथ सुने यों देव-गिरा
जो प्रतिध्वनि बन मडराती थी ।।१२९।।

जिसको दधीचि भीष्मादिक-से
वर वीर जनों ने जन्म दिया।
बलिदान-सिक्त उस परम्परा को
तुमने है अग्रसर किया ।।१३०।।

रणकुशल सैनिकों गुप्तचरों का
बिछा चतुर्दिक विकटजाल।
पर, वेग तुम्हारा रुका नहीं
आंग्लों की गली न एक दाल ।।१३१।।

लोभन लोचन की चल चितवन
भौतिक आकर्षण सुख-साधन।
बलिदान-कुण्ड में हव्य बने
कर दिया देश-हित-हेतु हवन ।।१३२।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नवयौवन का सुन्दर शरीर
सुख-भोग-योग्य बलवान देह।
तणवत् समझा कर दिया हवन
उनसे न किया कुछ भी सनेह ॥१३३॥

देशानुराग तप-त्याग रहा
कुछ भोग-भाग से काम न था।
केवल अर्पण ही अर्पण था
पद-लोभ-लाभ का नाम न था ॥१३४॥

परिधान एक बस अधोवस्त्र
था अस्त्र भुशुण्डी विद्यमान।
तन से बलिष्ठ त्यागी तपिष्ठ
हो धन्य धीर सुकृती सुजान ॥१३५॥

चलता समीर, बहती सरिता
अ़वनी-अम्बर, सागर महान।
सबने मिलकर उद्घोष किया
हो धन्य धीर सुकृती सुजान ॥१३६॥

है वीर-प्रसूता क्रोड धन्य
है धन्य भूमि भारत अनन्य।
तप त्याग तेज बलिदान धन्य
पवमान कल्प वर वीर धन्य ॥१३७॥

विख्यात तीनों लोक में इस भव्य भारत देश में,
जन्में जुझारू वीर योद्धा-जन समस्त प्रदेश में।
अखिलेश अच्युत हे हरे जगदीश जगदाधार हो,
मङ्गल करो बलिदानियों का देश में अवतार हो ॥१३८॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप'

जन्म तिथि : 10-06-1939

जन्म स्थान : ग्राम पण्डितपुर

जनपद : फैजाबाद (उ.प्र.)

कर्मभूमि : अयोध्या

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत)
पी.एच.डी.

सन् 1960 से लगातार कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की सृजनात्मकता के साथ-साथ आपके अनेकों लेख एवं कविताएँ देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

आप हिन्दी व संस्कृत दोनों भाषाओं में रचना करते रहे हैं। आपने चारों वेद के सभी मंत्रों का हिन्दी अनुवाद व छन्दानुवाद किया है। आपकी रचनाएँ उ.प्र. शासन के अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत होते रहे हैं।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
निजभाषोन्नतौ राष्ट्रोन्नतिः

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

डॉ. देवीसहाय पाण्डेय 'दीप' जी की अन्य रचनाएँ

प्रकाशित रचनाएँ-

द्रोणोच्छ्वास (हिन्दी महाकाव्य), गुरुवशिष्ठ (हिन्दी महाकाव्य), श्रीरामदूतांजनेय (खण्डकाव्य), गीतिधारा (गीत-संग्रह), आजादचरितम् (संस्कृत महाकाव्य), बिहारी सतसई सुधा (बिहारी के दोहों का हिन्दी व संस्कृत में छन्दानुवाद), वेदविभा (लघु), ऋचाओं के दर्पण में, गीताज्ञान दीपिका, पातंजलयोगदर्शनम, मेघदूतम् (पद्यरूपान्तरण एवं समीक्षात्मक अध्ययन), वेदविभा (वृहद्), भागवत रहस्त बोध (चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित श्रीमद्भागवत पुराण पर 35 पृष्ठीय पुष्ट भूमिका लेखन)।

अप्रकाशित रचनाएँ-

जामदग्न्य (हिन्दी महाकाव्य), ऋग्वेद भाष्य सम्पूर्ण, यजुर्वेद भाष्य सम्पूर्ण, सामवेद भाष्य सम्पूर्ण, अथर्ववेद भाष्य सम्पूर्ण, वाल्मीकि रामायण की रामकथा और उसका पल्लवन तथा उसमें प्रतिबिम्बित भारत, वाल्मीकि रामायण की धर्म-भूमि, गीतिमालिका (संस्कृत बालगीतों का संग्रह), भागवद्धर्म एवं श्रीमद्भागवत- एक अध्ययन, श्री दुर्गासप्तशती का छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद, नारदस्यमर्त्यलोकयात्रा वृत्तान्तम् (एकांकी नाटक), हम गीता क्यों पढ़ें (गीता के सिद्धान्तों का विस्तृत विवेचन), छन्दः स्तवक (घनाक्षरी, सवैया छन्दों का संकलन), सन्देश शतक (खण्डकाव्य), पाताल गमन (नाटक), खाली दाँव (कहानी संग्रह), बोध वाक्य (एकांकी संग्रह) एवं तुलसी के काव्य में श्रृंगार (शोध-प्रबन्ध)।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी निजभाषोन्नतौ राष्ट्रोन्नतिः

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

पंजीकृत कार्यालय : 3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
दूरभाष : 09873556781, 09968097816
E-mail : hindustanibhashabharati@gmail.com Web. : www.hindustanibhashaakadami.com

978-81-932721-7-6

मूल्य : 250, $ 30

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi